कीमतः 3.00
रुपए मात्र

प्रवेशांक

सितम्बर 2001

विश्व स्नेह समाज

डॉ0 रीता बहुगुणा जोशी

पूर्व महापौर, इलाहाबाद

सदस्य : संयुक्त राष्ट्र संघ अन्तर्राष्ट्रीय महापौर सलाहकार बोर्ड

सदस्य : संयुक्त राष्ट्र संघ (यू0एन0सी0एच0एस0)

उपाध्यक्ष : नेशनल काउन्सिल ऑफ वोमेन इन इण्डिया

फोन नि.–: 601468, 603571

फैक्स –: 0532-609895

निवास –: 20 मिन्टो रोड, राजापुर
इलाहाबाद–211001 (उ0प्र0)

दिनांक : 31/8/01

संदेश

प्रिय द्विवेदी जी

मुझे जानकर हर्ष हुआ कि आपके संरक्षण में मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" का विधिवत प्रकाशन होने जा रहा है।

आधुनिक काल में पत्रकारिता ने एक महान क्रान्ति उत्पन्न की है। आज विश्व दर्शन समाचार पत्रों, पत्रिकाओं आदि के माध्यम से होता है। जहाँ पत्रकारों की अधिक अभिरुचि राजनैतिक समाचार में रहती है वहाँ आप द्वारा समाजिक विषयों को उजागर करने का प्रयास सराहनीय है।

भारतवर्ष में उत्पन्न समाजिक तनाव राष्ट्रहित में नहीं है। मुझे पूर्ण आशा है कि आपकी पत्रिका विभिन्न समाजिक वर्गो में एकता एवं सौहार्द का वातावरण बनाने में सफल रहेगा।

शुभकामनाओं सहित

दूरभाष कार्यालय : 622512
निवास : 646153

तार : आकाशवाड़ी

आकाशवाड़ी

दयानन्द मार्ग

इलाहाबाद-२११००१

शिव मंगल सिंह "मानव"
सहायक क्रेन्द्र निदेशक

Telephone Office:
Resi. :

Telegram : **AKASHAVANI**

ALL INDIA RADIO

Dayanand Marg

Allahabad-211001

क्रमांक : 16.3/93-पी-6.स.स.के.नि.

Date : 15-5-01

संन्देश

मुझे जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने तथा युवाओं को मार्गदर्शित करने एवं जनकल्याण की भावना से ओत-प्रोत का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं इसके उत्तरोत्तर उन्नति एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं करता हूँ।

शिव मंगल सिंह "मानव"

डॉ0 गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रधान संपादक
"विश्व स्नेह समाज" मासिक
277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ
नैनी, इलाहाबाद–8

मासिक पत्रिका
विश्व स्नेह समाज
प्रथम अंक (प्रवेशांक) 15 अक्टूबर 2001

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादक :
डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

सलाहकार संपादक :
मोइनूद्दीन अहमद सिद्दीकी

सहायक संपादक
श्रीमति जया द्विवेदी

विज्ञापन प्रबंधक :
श्री एस0 एन0 तिवारी : ☎695579

प्रसार एवं प्रचार व्यवस्थापक
श्री रजनीश कुमार तिवारी

ब्युरो :
श्रीमती पुष्पा शर्मा (पटना)
सुजीत सिंह (प्रतापगढ़)
मो0 तारिक ज्या (जौनपुर)
मिस संहमित्रा भोई (उड़ीसा)
मिस लक्ष्मी हजोअरी (आसाम)
एस0 ई0 सिंह (नई दिल्ली)

सहयोग :1. श्री शैलेन्द्र द्विवेदी, एडवोकेट
2. श्री विन्देश्वरी सिंह, ''
3. श्री अनिल पाण्डेय, ''
4. श्री उमांशकर आयलानी 5. श्री विनोद दूबे

सम्पादकीय कार्यालय :
277/486, एफ0सी0 एल0सी0
कम्पाउन्ड, जेल रोड, चकरघुनाथ,
नैनी, इलाहाबाद

कम्पोजिंग एवं डिजाईनिंग :
फ्यूचर कम्प्यूटर लर्निंग सेन्टर
जेल रोड, नैनी, इलाहाबाद–8

स्वत्वाधिकारी व प्रकाशक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

इस पत्रिका में प्रकाशित किसी रचना लेख, कविता, कहानी आदि के लिए के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार का इससे कोई ताल्लुकात नहीं होगा। न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सम्पादकीय

'पाठक गण,!

अपार हर्ष का विषय है कि, आपकी पत्रिका 'स्नेह' जो अक्टूबर 1998 में प्रकाशित हुई थी, वह आज अपनी संम्पूर्ण संचेतना से समृद्ध नये कलेवर में आपके सम्मुख प्रस्तुत है। यह पत्रिका सामाजिक बुराइयों, को जड़ से नष्ट करने एवं भाई–चारा, आपसी स्नेह, को जगाने का ज़ेहाद लेकर आई है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत–प्रोत विचार शील लेखको की लेख मालाओ कहानियों, क्षणिकाओं, एवं मनोरंजन की सामग्री से भरपूर, पत्रिका के पृष्ठ सवारें एवं सहेजे गये हैं। इसका अकादमिक नामकरण इसकी उपादेयता को देखते हुये "विश्व स्नेह समाज" कर दिया गया है।

'हमारे सामाजिक परिवेश का ढांचा स्नेह हीन होकर चरमरा उठा है। नैतिक मूल्य धराशायी हैं। छोटे–बड़ों का स्नेह–सम्मान धुधँला गया है। आज के युवा वर्ग किशोर, किशोरियां जो देश का स्तंभ है, उन्हे शक की दृष्टि से देखा जा रहा है। उनकी आकाश चूमने वाली संम्भावनाएं आज दम तोड़ती नजर आ रही है। यदि किसी समस्या की उपेक्षा प्रारम्भ में कर दी गई तो वह अपने विकराल रूप में समाज में प्रगट होती है। जिसका ज्वलंत उदाहरण बढ़ती हुई जनसख्या है, जो अपने समस्त दुगुर्णो के साथ हमारे आपके बीच फैल चुकी है। इनकी संन्तानें भूखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, नशा, हत्या, भ्रूण हत्या, आत्म हत्या, बलात्कार, नारी उत्थान, दहेज के रूप में उभरी है। समाज के छुटभैये नेता इन हताश दिगभ्रमित जन–समुदाय का अच्छा उपयोग कर रहे हैं। दुखी पीड़ित मानव समूह इन्हें अपना मसीहा मान अपने बहुमूल्य मत देकर बढ़ते भष्ट्राचार को और सबल बना रही है।

यह पत्रिका उन भटके नौनिहालों, ललनाओं को नयी राह दिखायेगी उनके अन्तर्मन की काली निराशा को विवेक की जलती मशाल से निरावद करेगी। ऐसा मेरा विश्वास है एवं आपसे एक और अनुरोध है कि आप अपने पुत्र एवं पुत्रियों के मनोबल को बढ़ायें, उन्हें सक्षम समझें उन्हें हिकारत भरी दृष्टि से देख आतंकवादी न बनायें, बल्कि वे देश के भावी कर्णधार हैं, शक्तिपूर्ण हैं, ऊर्जावान हैं, उनके कुंठित मन की अर्गत्मा स्नेह से सौहार्द से खोली जाये तो विश्व के आकाश में उनका परचम शान्ति का संदेश लेकर लहरायेगा।

अतः युवा पीढ़ी को समझने के लिये संवेदन शील दृष्टि की आवश्यकता है। स्नेह की आवश्यकता है। और इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु डूबते को तिनके के सहारा सी यह पत्रिका सरल सवं सस्ती है। यह हर हाँथों में पहुॅचने के लिये प्रतिबद्ध है। अपनी संम्पूर्ण निष्ठा के साथ यह एक मील का पत्थर साबित होगी। आज के बिखरते समाज को जोड़ने में हमें आशा है यह हमारे पाठकों को अवश्य हृदयंगम् होगी। और वे अपनी प्रतिक्रियायें हमें अवश्य लिखेगें जिससे हमारे मार्गदर्शन में सरलता होगी। यह आवश्यक नहीं कि आप पत्रिका को सराहें ही वरन् त्रृटियो का भी विश्लेषण आवश्यक है।

"निदंक नियरे राखिये आगन कुटी छवाय, बिन साबुन पानी निर्मल करे सुभाये।"

आप इसे स्वीकारेगे तो आपकी समस्या का समाधान अवश्य मिलेगा।

शुभ कामनाओं सहित –

आपकी

डॉ० कुसुम लता मिश्र

if<+,bl vadesa

लेख :
1. कौन बनेगा अगला मुख्यमंत्री, उ0 प्र0
2. मिथको को तोड़ती सहस्त्राब्दी की नारी
3. लोक आयुक्त उत्तर प्रदेश के अधिकार एवं कार्यप्रणाली
4. हाईकोर्ट एक नजर
5. नारीयां पिछड़ी क्यों
6. लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल
7. कम्प्यूटर का फैलत जाल
8. आखिर प्रेम ने ले हीं ली जान

कविता, ग़ज़ल,
स्थायी स्तम्भ :स्वास्थ्य चर्चा, स्नेह परदे की शोभा
व्यंग्य : बंदा गया काम से
कहानी : 1. संजोग
2.नन्हें बच्चों के लिए– कछुआ और बगुले

प्रो0 कृष्ण बिहारी पाण्डेय
अध्यक्ष

✆ (कार्या0) 600902
600512
10, कस्तूरबा गॉधी मार्ग,
इलाहाबाद

सन्देश

प्रिय द्विवेदी जी

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि **विश्व स्नेह समाज** का प्रकाशन नये कलेवर में मासिक पत्रिका के रुप में होनें जा रहा है। युवकों को सम्बोधित यह पत्रिका देश की तरुणाई को राष्ट्र के प्रति समर्पण का बोध कराएगी, ऐसी आशा है। युवकों के ही बल पर आज भारत विश्व शक्ति के रुप में तेजी से उभर रहा है। किन्तु इतनी ही तेजी से चुनौतियॉ हमारा पीछा भी कर रही हैं। सांस्कृतिक प्रदूषण की ऑधी ने तरुणों में चारित्रिक पतन का संकट खड़ा कर दिया है। इस संकट का सामना करने के लिए हमें विपुल मात्रा में सत्साहित्य की आवश्यकता है। ऐसा साहित्य जो तरुणों के भ्रम और कुंठा का निवारण कर सके, ऐसा साहित्य जो सहज रुप से उनका मार्गदर्शन कर सकें और ऐसा साहित्य जो उन्हें इस देश की माटी से जोड़ सके। ***विश्व स्नेह समाज*** इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभा सकेगा इस शुभकामना के साथ

आपका

(प्रो0 कृष्ण बिहारी पाण्डेय)

संन्देश

आज के भौतिकवादी युग में समाज से स्नेह, सौहार्द और सच्चे प्रेम का अभाव होता जा रहा है। ऐसे में ***''विश्व स्नेह समाज''*** मासिक पत्रिका का प्रकाशन एक शुभ प्रयास है।

विश्व स्नेह समाज अपने नाम को सार्थक कर सके ऐसी मेरी हार्दिक शुभकामना है।

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रधान संपादक
"विश्व स्नेह समाज" मासिक
277 / 486, जेल रोड, चकरघुनाथ
नैनी, इलाहाबाद–8

(माता प्रसाद खेमका)
अध्यक्ष

कौन बनेगा अगला मुख्यमंत्री उ0प्र0 का?

✍ *गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी*

कौन बनेगा उत्तर प्रदेश का अगला मुख्यमंत्री यह बहुत ही दिलचस्प और रोचक तथ्य है। भारत के विचारहीन, तथ्यहीन, जातिगत राजनीतिज्ञों व पार्टियों को देखते हुए पूर्णरुपेण आकलन करना/सर्वेक्षण को सही ठहराना उचित नहीं कहा जा सकता। यह कहना भी उचित प्रतीत नहीं होता कि जिस दल की संख्या अधिक होगी या बहुमत होगा उसी दल का मुख्यमंत्री होगा। हमारा पिछला इतिहास तो यही बताता है। इसका स्पष्ट उदाहरण बसपा की बहन सुश्री मायावती जी की सरकार व मा0 शंकर सिंह बघेला जी की सरकार थीं। ऐसा अवसर केन्द्र में भी 525 में से मात्र चालीस संसदों को लेकर माननीय चन्द्रशेखर जी सरकार, मा0 एच0 डी0 गौड़ा देवगौड़ा, मा0 इन्द्र कुमार गुजराल जी की सरकार को भली भॉति देख आप सभी देख चुके है।

विगत 10 वर्षो की राजनीतिक उठा–पठक व सत्ता लोलुपता को देखते हुए तो यह कहा जा सकता है कि अब सरकारें बहुमत की नहीं बल्कि लाल बत्ती की बन रही हैं या रेवड़िया जैसे निगम के अध्यक्ष या कोई अन्य लाभ का पद पर बनती है।

माननीय राजनाथ सिंह,
वर्तमान मुख्यमंत्री भाजपा

हमारी सर्वे टीम द्वारा लिए गये शहरी/ ग्रामीण मतदाताओं से लिए गये ऑकड़ो को अनुसार माननीय राजनाथ सिंह के दुबारा मुख्यमंत्री बनने के आसार कम हीं नजर आते हैं। लगभग दस प्रतिशत प्रबुद्ध ग्रामीण व शहरी मतदाताओं की माने तो राजनाथ सिंह ही अगले मुख्यमंत्री होगें। जिसमें वर्तमान सरकार की जैसे ही कई दलों का कुर्सी का गठजोड़ होगा जिसमें दलों की संख्या बढ़ सकती है। लोगों का कहना है कि माननीय मुख्यमंत्री जी जोड़–तोड़ की राजनीति के पक्के खिलाड़ी है। मंत्रीमंडल का आकार शतक को पार कर सकता है। लेकिन पूर्व में भाजपा के कट्टर समर्थक रहे सर्वण/ व्यापारी वर्ग व भाजपा के हीं कार्यकताओं की माने तो भाजपा के अधिकांश मंत्री अगर अपनी सीट ही बचा ले तो बहुत है। कुल मिलाकर भाजपा को 75 से 100 के बीच व उसके सहयोगी दलों को मिलाकर कुल 100 से 125 सीट ही लेकर संतोष करना पड़ सकता है। भाजपा सरकार ने जो राज्य की दुर्दशा की है और भ्रष्टाचार को रोपित किया वह शायद अब तक किसी भी सरकार ने नहीं किया था। इसमें बिजली व राशन कार्ड एक

राजनाथ सिंह फोटो

महत्वपूर्ण योगदान है। पिछले चुनाव में भाजपा का नारा–"सबको देखा बार–बार, हमको देखो एक बार"। वास्तव में दूबारा नंबर लगने के आसार दूर–दूर तक नजर नहीं आते। लोगो को कहना है कि भाजपा की पहली कल्याण सिंह सरकार का जो जलवा दिखा था वह दूसरी भाजपा की कल्याण में भी दूर–दूर तक नजर नहीं आया। दूसरे मुख्यमंत्री बने माननीय रामप्रकाश गुप्त ने तो जो बची–खुची साख थी वह भी धो डाला। भाजपा की डूबती नैया को पार लगाने के लिए केन्द्र से लाये गये मुख्यमंत्री माननीय राजनाथ सिंह तो मात्र चुनावी/ लोकलुभावन, घोषणा मुख्यमंत्री साबित हो रहे है। उनके सारे फंडे वोट की राजनीति से प्रेरित नजर आते है। वह हर वर्ग को खुश करने का प्रयास कर रहे है। लेकिन एक कहावत है–एकै साधे सब सधे, सव साधे सब जाय। लो0का0 के मा0 नरेश अग्रवाल को बरखास्त किया गया तो कहा गया वे तो बहुत भ्रष्ट थे और उनके कारण ही बिजली की समस्या थी। मैं तो बस 15 दिन के अन्दर बिजली की व्यवस्था को सुधार दूँगा। खैर हाथ पैर मारा केन्द्र से अब तक रिकार्ड बिजली आयात की गयी मगर आज की डेट में इतनी बूरी हालात कभी नहीं रहीं। भारतीय मतदाता अब उतना बेवकुफ नहीं रहा जो चुनाव के सन्निकट आने पर घोषणाओं के अंवार से खुश होकर वोट दे दें। वह भी अपना भला–बूरा समझने लगे। कुछ केन्द्र सरकार की काश्मीर नीति, विदेश नीति, परवेज मुशर्रफ व बाजपेयी वार्ता, आतंकवाद, तहलका, यू.टी.आई. आदि भी भाजपा की साख को धोने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें। तो दूसरी तरफ कल्याण सिंह की पार्टी व लो0का0 के नरेश अग्रवाल कुछ जगहों पर भाजपा ही नुकसान पहुँचा सकते है, भले ही वह सीट उनको न मिलें।

माननीय मुलायम सिंह यादव
राष्ट्रीय अध्यक्ष, समाजवादी पार्टी

सपा के मुखिया माननीय मूलायम सिंह यादव की छबि भी पिछले उनकी सरकारों में कोई खास अच्छी नहीं रही है। लेकिन ग्रामीण अनपढ़ जनता की माने तो कुछ मामलों में सपा सरकार वर्तमान भाजपा सरकार से बेहतर रही है। सपा को यादव व कुछ मुस्लिमों के वोट पक्के तौर पर मिलेंगें। अमर सिंह के कारण कुछ खास जगहों पर क्षत्रिय वोट भी सपा की छोली में गिर सकते है। सपा को भाजपा के विकल्प के रुप में देखना व मजबूत विपक्ष की भूमिका को देखते हुए, सत्ता विरोधी वोट मुलायम सिंह की पार्टी सपा को मिलने के पूरे आसार नजर आ रहे है। सपा के अलावा विपक्ष में ऐसी कोई पार्टी नजर नहीं आती है जो लगभग पूरे उत्तर प्रदेश में भाजपा को चूनौती दे सके। हमारे सर्वेक्षण मूताबिक माननीय मूलायम सिंह यादव ही अगले मुख्यमंत्री बनेगें। सर्वे के मुताबिक सपा को 100 से 150 सीट के बीच मिलने के आसार है और इतने में मुख्यमंत्री की कुर्सी को हथियाया नहीं जा सकता। अगर अपना दल, काग्रेंस व बसपा सपा को सरकार में रहकर या बाहर से सर्पोट करें तभी

मूलायम सिंह यादव फोटो

सपा की सरकार बन सकती है। अगर बसपा सर्पोट नहीं करती तो दूसरा रास्ता है भाजपा के कुछ विधायक व कुछ उसके सहयोगी दल सपा को सर्पोट करें तो भी सपा की सरकार बन सकती है। लेकिन दूरगामी राजनीति को देखते हुए ऐसा सम्भव प्रतीत नहीं होता। अगर सपा माननीय मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री बनते भी है तो उनकी सरकार ज्यादे दिनों तक नहीं चलने वाली। क्योंकि अपना दल, व भाजपा व उसके सहयोगी दल कहीं न कहीं से मुलायम विरोधी राजनीति पर हीं राजनीति कर रहे है। अपना दल तो मुलायम सिंह के विरोध पर टीका है क्योंकि मुस्लिम मतदाता दोनों ही पार्टियों के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसे में सपा मुखिया मूलायम सिंह यादव का मुख्यमंत्री बनना संदिग्ध लगता है।

माननीया सुश्री मायावती

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, बसपा

मायावती की पार्टी बसपा का लगभग वर्तमान सभी दलों की सहयोगी पार्टी रह चुकी है। बहन सुश्री मायावती भी कुर्सी को पाने को लालायित हैं। उनके घोर विरोधी मूलायम सिंह यादव व उनकी पार्टी है। जहॉ भाजपा व उसके सहयोगी दलों को यह आभास होगा कि माननीय मुलायम सिंह यादव की सरकार बनने के आसार है तो भाजपा व उसके सहयोगी दल बहन सुश्री मायावती को सर्पोट कर सकते है। इसमें भी विधानसभा अध्यक्ष, मुख्यमंत्री, कुछ मुख्य विभागों को लेकर सौदे बाजी हो तो कोई बुराई नहीं है। बसपा के वोट बैंक को तोड़ने के लिए हांलाकि भाजपा ने रामविलास पासवान जैसे तुरुप के पत्ते का इस्तेमाल किया है। मगर कोई खास असर नजर नहीं आता। सुश्री मायावती ने अपनी पार्टी से पहले सोनेलाल पटेल, जंगबहादुर पटेल और अब पार्टी के कर्मठ व वरिष्ठ संस्थापक सहयोगी रहे मा0 आर0 के0 चौधरी व मा0 बरखूराम वर्मा को पार्टी से निकालकर अपने ही पैरो पर कुल्हाड़ी मारी है। इससे जनता में कुर्मी विरोधी संकेत गया है। जिससे कुर्मी विरादरी के वोट बसपा से कटेगें और अपनादल में जुड़ने के आसार नजर आते है। मा0 बरखू राम वर्मा और मा0 आर0 के0 चौधरी भले ही अपने विधायक न बना पायें मगर उनका विरोध बसपा के लिए मंहगा साबित होने के आसार हैं। सर्वे के मुताबिक बसपा को 50 से 70 के बीच सीट मिलने की उम्मीद है जो शायद 70 से 80 तक पहुॅच सकता था। मतदाताओं की मानें तो सुश्री मायावती की सरकार में अधिकारियों में दहशत छायी रहती थी। उन्हें वास्तव में मुख्यमंत्री के पद के काबिल कहा जा सकता हैं। कुछ बुराईया भी थी। केवल अबेडकर पार्क, गांव बनाकर ही राज्य नहीं चल सकता है नही राज्य किसी एक जाति से चलता है। इसके लिए सभी वर्गो के लोगों को खुश करना होगा अगर वास्तव बहन मायावती लम्बे समय तक उ0प्र0 का मुख्यमंत्री बनी रहना चाहती है। ब्राहमण, क्षत्रियों को मनुवादी कहने वाली मायावती कभी बिना इनके सहयोग के पूर्ण बहुमत को नहीं पा सकती। कोई भी जाति बूरी नहीं होती है बल्कि प्रत्येक जाति में कुछ बूरे लोग होते है। क्या कभी बहन मायावतीजी ने सोचा कि उनकी अपनी ही जाति के लोग जो आगे बढ़ चुके है क्या निचले दर्जे के अपनी ही जाति के लोगों को सम्मान देते है? नहीं। फिर क्यों?

माननीय सोनेलाल पटेल

राष्ट्रीय अध्यक्ष, अपना दल

कुछ लोगों का यह मानना है कि अगले मुख्यमंत्री मा0 सोनेलाल पटेल होंगे। ऐसा हो भी सकता है। हमने पहले ही कहा है कि वर्तमान भारतीय लोकत्रंत में कुछ भी हो सकता है। जिस पार्टी का केवल मुखिया विधायक हो वह दो दिन के लिए ही सहीं मुख्यमंत्री बन सकता है। अपना दल का तो इलाहाबाद मंडल, कानपुर मंडल ही उसके जनाधार वाले मंडल है। जिसमें इलाहाबाद का मुख्य स्थान है। वह अपनादल के प्रदेश अध्यक्ष व शहर पश्चिमी विधायक माननीय अतीक अहमद के कारण। अपना दल की 23 अगस्त को मजीदिया स्कूल में हुए महारैली में सोनेलाल पटेल व माननीया अतीक अहमद के विचार सुनने के बाद

यह बात खुलकर सामने आ गयी है कि अपना दल केवल कुर्मी व मुस्लिमों की पार्टी है। कभी बसपा के साथ रहे सोनेलाल पटेल बसपा की नीति पर ही चल निकले है।

उनका कहना है कि–ठाकुर व ब्राहमण को छोड़कर हर जाति को हम जोड़ेगे। यानी अपना दल को ब्राहमण व क्षत्रिय वोट की जरुरत नहीं हैं। यह कैसा लोकत्रंत है जहॉ जातियों पर चुनाव लड़े जाते है। अपना दल प्रदेश की सभी 403 सीटो पर अकेले चुनाव लड़ने का प्रयास कर रहा है। सर्वे टीम को अनुसार अपना दल को कुल 20 से 30 सीट ही मिल जाय बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। आगे गणित क्या होगा नहीं कहा जा सकता। वर्तमान में तो यही गणित कहता है जब सत्ता को लेकर खीचतान चल रही होगी। कोई भी झूकने को तैयार नहीं होगा उस वक्त हो सकता कि सपा व बसपा अपना दल से कुछ गुप्त समझौता करके या बाहर से सपोर्ट करके अपना दल के मुखिया मा0 सोनेलाल पटेल को मुख्यमंत्री बना सकते है।

सपा. अतीक अहमद के नाम पर शायद तैयार नहीं हो। यह भी हो सकता है कि अपना दल के प्रदेश अध्यक्ष व राष्ट्रीय अध्यक्ष के बीच कुर्सी को लेकर विवाद बनें।

काग्रेंस

पिछले दस सालों से सत्ता दूर रहीं काग्रेस पार्टी इस बार सत्ता में आने को आतुर है। कुछ समीकरण

उसके पक्ष में बन भी रहे है लेकिन उतनी हवा नहीं रही है कि काग्रेंस सत्ता के करीब पहुॅचे। काग्रेंस की सीट बढ़ने के आसार है। कांग्रेस शासन चाहे जितना भी बूरा रहा हो लेकिन अब तक के विपक्षी दलों के सरकार पर अगर गौर फरमायें तो कांग्रेस शासनकाल सबसे बेहतर रहा है। सर्वे के मुताबिक कांग्रेस को लगभग 70 से 80 सीटें मिल सकती है अगर गुटबाजी कम हो जाये तो यह 100 तक पहुॅच सकती है।

भविष्य में देखिए कौन–सा समीकरण बनता है, यह भविष्य की बात है मगर इतना तो तय है कि कोई भी दल स्वतंत्र रुप से सरकार चलाने में समर्थ नहीं होगा। फिर खिचड़ी ही पकनी है चाहे जिसकी पके। सत्ता में शामिल दलों की संख्या बढ़ सकती है चुनाव जितने के बाद लालबत्ती व रेवड़ी कई पार्टीयों में तोड़फोड़ की पूर्ण रुपेण जिम्मेदार होगी। सबसे बड़ी समस्या तीसरे व उसके बाद के स्थान वाले दलों के लिए होगी। जिनमें मुख्य रुप से बसपा, काग्रेस व अपना दल के नेता अपने विधायकों को कितना रोक पाते है इस पर भी सरकार का गठन निर्भर करेगा।

$% $%EEE

कुर्सी का मोह (सत्ता) या प्रेम ने ले ही ली जान–आखिर – एक राज परिवार की

अपने पड़ोसी देश नेपाल की राजशाही के उत्तराधिकारी युवराज दीपेन्द्र शाह, जो नेपाल नरेश वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव व महारानी एश्वर्य राज्यलक्ष्मी के 29 वर्षीय बड़े बेटे थे, ने 2 जून शनिवार को रक्त का वह तांडव खेला जो शायद इतिहास में अपनी तरह का पहला कांड होगा। 3 जून रविवार को नेपाल सहित दुनिया का हर सक्स इस खबर को मानने को तैयार नही था कि हत्यारा कोई और नही बल्कि युवराज दीपेन्द्र शाह ही थे। वह भी प्रेम को न मिलने के कारण इन सबके पीछे भी प्रेम की पुजारिन सिधिया घराने की भाजपा की पूर्व उपाध्यक्ष रही स्वा0 विजया राजे सिधिंया की बेटी व भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री,व वरिष्ठ कांग्रेसी नेता माधव राव सिंधिया की बहन ऊषाराजे की सुपुत्री देवयानी। नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री जनरल मोहन शमशेर जंग बहादूर की प्रपौत्री, पूर्व कश्मीर नरेश कर्ण सिंह पत्नी यशो राजलक्ष्मी जनरल की भतीजी यधोराजलक्ष्मी ओर पशुपति राणा चचेरे भाई–बहन है। व पूर्व नेपाल में राष्ट्रीय पार्टी प्रजातंत्र पार्टी की सरकार के समय में मंत्री रहे प्रशुपति शमशेर जंग बहादुर राणा की पुत्री है। अगर खबरचीओं की माने तो युवराज दीपेन्द्र व देवायनी पिछले 10 सालों से प्यार के गुटर गू कर रहे थे हालांकि देवयानी बहुत ही सुसंस्कृत लड़की है, लेकिन दीपेन्द्र के मॉ–बांप इस शादी के खिलाफ थे। खिलाफत उस कदर थी कि मॉ–बाप उन्हे राजगद्दी से बेदखल कर छोटे यूवराज निरंजन को देने की धमकी दे डाली थी इसके पीछें कोई और कारण नही बल्कि राजा और शाह परिवार के बीच परम्परागत दुश्मनी है। यह बात दूसरी है कि महाराजा वीरेन्द्र ने भी ऐश्वर्या से विवाह किया था, जो राणा ही हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि महारानी ऐश्वर्य किसी भविष्यवक्ता की सलाह के कारण युवाराज दीपेन्द्र की शादी के फैसले का विरोध कर रही थी। भविष्यवक्ता का कहना था कि यदि युवराज दीपेन्द्र ने 31 वर्ष उम्र के पहले शादी की और पिता बने, तो उनके पिता की मृत्यु हो जाएगी महारानी उनके युवराज के 31 वर्ष के होने का इंतजार कर रही थी। सुत्रों का कहना है कि शाही परिवार चाहता था कि युवराज दीपेन्द्र एक ''शाह'' युवती से शादी करें, जिनके साथ भी उनके प्रेम संबंध युवराज दीपेन्द्र देवयानी से ही शादी करना चाहते थे। अगर खबरचीओं की माने तो युवराज दीपेन्द्र, व देवयानी शादी कर चुके थे। शाही परिवार के सूत्रो के अनुसार महीने की हर तीसरी शुक्रवार को राज परिवार के नजदीकी सदस्यो का जलसा होता है। 2 जून की रात थी यही मौका था। रात के 4 बजे खाने की मेज पर अपने पिता और मॉ से अपनी शादी की योजना के बारे में कुछ बात की। चूॅकि उन्होने शराब पी रखी थी, इसलिए उनसे वहॉ से चले जाने को कहा गया। इसके बाद उनकी अपने पिता से तीखी झड़प हुई और गुस्से में झूब्ध युवराज दीपेन्द्र खाना खाने के कमरे से उठकर चले गये। कुछ ही देर बाद वह सेना की वरदी पहने एक असाल्ट राइफल और एक पिस्तौल के साथ लौटे और अंधा धूंध गोलियां चलानी शुरू कर दी गोलिया की बौछार से मृतकों की श्रेणाी में 55 वर्षीय महाराज वीरेन्द्र और 51 वर्षीय महारानी ऐश्वर्या के अलावा उनका छोटा बेटा युवराज निरंजनय (22), बेटी राजकुमारी श्रुति (25), महाराज की बहने राजकुमारी शारदा शाह, राजकुमारी शांति शाह, शारदा के पति कुमार खड़ग विक्रमशाह और महाराजा वीरेन्द्र की कजिन राजकुमारी जयंती शाह महारानी के छोटे भाई धीरेन्द्र, श्रुति के पति गोरख राणा और राजकुमारी शोभा शाही शामिल है। महाराज के छोटे भाई राजकूमार ज्ञानेन्द्र व उनका बेटा पारस जलसे में न होने के कारण बच गये। आखिर प्रेम ने ले ही ली जान एक राजपरिवार की लेकिन बात यही समाप्त नही हुई बल्कि अंत में युवराज व भावी नेपात नरेश अपनी ईह लीला भी समाप्त कर दी।

ईश्क ने हमको मुर्दा बना दिया।
वरना हम भी भावी नरेश थे नेपाल के।

नेपाल: हिमालय की गोद में

जनसंख्या : लगभग 2.2 करोड़, प्रति वर्ष की वृद्धि दर 2.4 प्रतिशत ,कुल पंजीकृत मतदाताः 1.351 करोड़ धार्मिक संप्रदायः हिन्दू (89.5 प्रतिशत), बौद्ध (5.3 प्रतिशत), मुसलिम(2.6 प्रतिशत), अन्य (ईसाइयों सहित) 2.6 प्रतिशत। राज की भाषा : नेपाली (लिपि देवनागरी), हिंदी और भोजपुरी। कार्यालयीय और व्यावसायिक मामलों में अंगरेजी का प्रयोग होता है। कुछ क्षेत्रीय बोलियां भी बोली जाती है। साक्षरता : सरकारी आंकड़ों के अनुसार 40 प्रतिशत। क्षेत्रफल : 141, 181 वर्ग किमी (56,827 वर्ग मील) मैदानी क्षेत्र। बाकी हिस्सा पर्वतीय है। यहां दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट और 14 अन्य ऊंची चोटियां स्थित है। राजधानी : काठमांडू सेना : कुल संख्या लगभग 35 हजार, 28 हजार अद्धसैनिक बल। अर्थव्यवस्था : नेपाल दुनिया के दस सबसे ज्यादा गरीब देशों में से एक है। यहां की प्रतिव्यक्ति औसत आय 200 डॉलर। औसत उम्र 55 वर्ष। एक हजार शिशुओं में से 98 की मौत हो जाती है। प्रति 16000 लोगों पर एक फिजीशियन हैं। प्रमुख प्राकृतिक स्रोत–पानी और उससे चलने वाली परियोजनाए, लमारीती लकड़ी प्राकृतिक स्थल, उर्वर जमीन। नेपाल की 80 प्रतिशत जनता कृषि पर निर्भर है। प्रमुख कृषि उत्पाद है– चावल, गेहू, जूट और मक्का। यहां सिगरेट, माचिस, साबुन रेडीमेड कपड़े चीनी, सीमेंट ऊन सीमेंट चमड़ा आदि है। नेपाल का काफी कुछ विकास प्राकृतिक जलस्रोतों और पर्यटन के ऊपर निर्भर करती है। निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं : कारपेट्स, दालें, जूट और इमारती लकड़ी। प्रमुख निर्यात बाजार : अमेरिका, जर्मनी और भारत नेपाल के उत्पादों के प्रमुख बाजार है। **कर्ज :** नेपाल पर 2.4 बिलियन डॉलर का कर्ज है।

राष्ट्र गौरव हेमवती नन्दन बहुगुणा

कैलाश चन्द्र शाह जगाती

हिमालय के आंचल में जन्में राष्ट्र गौरव स्व0 हेमवती नन्दन बहुगुणा जी का दिव्य व्यक्तित्व हिमालय की भॉति ही धवल, विशाल एवं दृढ़ता संजायें था।

"यथानाम तथा गुणः" को चरितार्थ करने वाले बहुगुणा जी विविध, अनेक गुणों से सम्पन्न थे। बहुगुणा नाम ही उनके जीवन, कार्यो, कर्मठता एवं अदम्य उत्साह का पर्याय रहा। बहुगुणा जी ऐसी विशिष्ट एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी थे जिनका वर्णन चन्द शब्दों में करना सम्भव नहीं है फिर भी आपके गरिमामय कर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्य परायण आकर्षक व्यक्तित्व की एक झलक प्रस्तुत है।

बहुगुणा जी का जन्म 25 अप्रैल 1919 में उत्तरा खण्ड के छोटे से गॉव भुगाणी जि0 पौढ़ी गढ़वाल में हुआ था। 1937 में वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने प्रयाग की पवित्र भूमि में आये थें विद्यार्थी जीवन से ही उनमें देशप्रेम की भावना जागृत हो चुकी थी और वे भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। 1942 में अंग्रेज सरकार ने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम के कैदी के रुप में बन्दी बना कर इलाहाबाद तथा सुल्तानपुर के जेलों में रखा। जेल में वे घातक रोग के शिकार हुये। तत्कालीन सरकार ने उनके स्वास्थ्य में गम्भीर गिरावट देखकर इस शर्त पर छोड़ने का निर्णय लिय कि वे भविष्य में स्वतत्रंता संग्राम में भाग नहीं लेगे। परन्तु सच्चे रुप में देशभक्त बहुगुणा ने अंग्रेजों की दया को ठुकरा दिया और कैद की अवधि को पूर्ण करके 1946 में जेल की दीवारों से बाहर आये।

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी के रुप में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ने के पश्चात् स्वतंत्र भारत के निर्माण में बहुगुणा जी अपने चिन्तन, समाजवादी विचारधारा, गरीबों, मजदूरों, किसानों तथा समाज के कमजोर लोगों के हितों की रक्षा के लिए सदैव निरन्तर प्रयास एवं संघर्ष करते रहे। बहुगुणा जी हिन्दू–मुस्लिम एकता तथा साम्प्रादायिक सौहार्द के प्रबल समर्थक थे वे जीवन पर्यन्त इस दिशा में निष्ठापूर्वक कार्य करते रहे। आत्म–सम्मान उनके चरित्र का सर्वोपरि गुण था, भले ही इस कारण उन्हें अपने राजनैतिक जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ा परन्तु वे हिमालय की भॉति सदैव अडिग रहे। उन्होंने अपने व्यक्तिगत हित के लिए अपने सिद्धातों को कभी नही ठुकराया।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव, उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री, भारत सरकार के संचार एव पेट्रोलियम मंत्री के रुप में सभी मंत्रालयों में बहुगुणा जी ने अपने प्रशासनिक कौशल, अदभुत साहस तथा प्रशासन के प्रत्येक अंग–प्रत्यंग पर अपने प्रखर प्रज्ञा की अमिट छाप अंकित की।

ऐतिहासिक, पौराणिक एवं भारतीय संस्कृति का केन्द्र पावन धाम प्रयाग बहुगुणा जी की कर्मभूमि रही। वे इलाहाबाद के गॉव–गॉव से परिचित थें। प्रयाग के औद्योगिक विकास में ही नही अपितु शिक्षा, कृषि, एवं सर्वागीण विकास में बहुगुणाजी का विशिष्ट योगदान रहा है इसी कारण प्रयाग आगमन पर यहॉ के मजदूर, किसान, छात्र, शिक्षक तथा नागरिक नारे लगाते थे "प्रयाग का चन्दन हेमवती नन्दन"

बहुगुणा जी का दिव्य व्यक्तित्व, एक देशभक्त, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कुशल राजनीतिज्ञ, समाज–सुधारक मजदूरों एवं गरीबो के मसिहा के रुप में सदैव याद किया जाएगा। इन चन्द शब्दों के साथ हम सब स्वनाम धन्य बहुगुणा जी के प्रति अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करते है।

संदेश

फोन न0 467313

मैं "विश्व समाज" के प्रवेशांक के प्रकाशन के शुभ कार्य के लिए हार्दिक शुभकामना एवं अनवरत सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

आलोक–दुबे
आई.ए. एम. टी.
31/1,बन्द रोड, एलनगंज इलाहाबाद

जय प्रकाश शर्मा
सभासद, वार्ड न0 4
नगर निगम, इलाहाबाद
75/41, कानपुर रोड,
नियर मद्रास होटल

☎ 621964 (O)
622828 (R)

Res. : 7/2, Shambhoo Barrack Estate (Judges Colony) Allahabad

संदेश

श्रीयुत तिवारी जी,

आप पत्रिका का शुभ आरम्भ करने जा रहे हैं यह सौभाग्य की बात है और इससे समाज को सही दिशा मिलनी चाहिये यही मेरी कामना हैं।

स्नेही क्लब –इलाहाबाद

(पंजीयन प्रमाण–पत्र संख्याः– के 11751)

कार्यालयः 5ए, नवाब युसुफ रोड, सिविल लाइन्स,प्रयाग

संदेश

परम प्रिय,
श्री नरेश जी तिवारी
विज्ञापन प्रबन्धक
विश्व स्नेह समाज
नैनी –प्रयाग

स्नेही महोदय,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि"विश्व स्नेह समाज" नामक मासिक पत्रिका काश्री गणेशकर रहे हैं। पत्रिकाएं –शिक्षित समाज का मेरूदण्ड हुआ करती हैं तथा साहित्यिक एवं सास्कृतिक बिकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं यह पत्रिका पठन–पाठन, लेखक एवं रचनात्मक अभिरूचि में वृद्धि के साथ–साथ समाज में ज्ञान–ज्योति फैलाये ऐसी मेरी शुभकामना हैं।

पत्रिका के सम्पसदक मण्डल के सुन्दर प्रयास के लिए हमारी मंगल कामना अपके साथ हैं।

सतीश साहु
महामंत्री
884/511, दरियाबाद
प्रयाग–211003, दूरभाषः 659402

हाईकोर्ट एक नजर

इलाहाबाद हाईकोर्ट की स्थापना 17 मार्च 1896 को हाईकोर्ट की स्थापना का पत्र जारी हुआ। साथ ही 13 जून को गजट ऑफ इंडिया में इसका प्रकाशन हुआ और इलाहाबाद हाईकोर्ट अस्तित्व में आया।

भारत में हाईकोर्टो की स्थापना का इतिहास कोई बहुत ज्यादा पुराना नहीं है। पहले देशी रियासते फिर मुगल काल की रियासते के अपने कायदे कानून थे। लेकिन अग्रेंजो के आगमन उपरान्त कानून के माध्यम से न्याय देने की अलग व्यवस्था की गयी। इण्डियन हाईकोर्ट एक्ट 1861 के माध्यम से पहले कोलकाता, मुबई और चेन्नई में हाईकोर्ट की स्थापना हुई और यहाँ की कार्यरत सुप्रीम व सदर अदालतों को खत्म कर दिया गया। इसी एक्ट के तहत उस क्षेत्र में जो उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में शामिल न हो, हाईकोर्ट स्थापित करने का प्रावधान भी किया गया। सन् 1862 ई0 में प्रेसीडेंसी में उच्च न्यायालयों की स्थापना की गयी। अभी पश्चिमोंत्तर प्रांतो में सदर दीवानी और निजामत अदालत ही कार्य कर रही थी।

नए हाईकोर्टो के अस्तित्व में आने से पहले सदर–दीवानी और निजामत अदालत किस तरह कार्य करती थीं, इसकी जांच कोलकाता हाईकोर्ट के न्यायाधीश कैपबेल ने की थीं। सन् 1860 के प्रारम्भ से 1863 के अंत तक दीवानी मामलों की संख्या दुगुनी हो गई थी। 23 मार्च 1862 को गर्वनर जनरल ने प्रस्ताव पारित करके कोलकाता हाईकोर्ट के एक न्यायाधीश को आगरा भेजने का निर्णय लिया। उनको सदर दीवानी अदालतों के कार्य को कोलकाता हाईकोर्ट से मेल–खाते कामकाज के परिवर्तन करना था। न्यायमूर्ति कैपबेल ने अपने रिर्पोट में कहा कि अदालत द्वारा न्यायिक एवं प्रशासनिक कार्य में अंतर न कर पाना, दुसरा अतार्किक तरीके से न्यायिक कार्यो का संचालन। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पहले मुख्य न्यायाधीश सर वाल्टर मोरगन बनाए गएं अन्य न्यायाधीशों में विलियम राबट्र्स, फ्रांसिस बॉयल, पियरसन और चार्ल्स आर्थर टर्नर हुए। चीफ जस्टिस मोरगन एवं न्यायमूर्ति टर्नर बैरिस्टर थे, जबकि अन्य बंगाल सिविल सर्विस के सदस्य व सदर अदालत के जज रह चुके थे। उच्च न्यायालय की स्थापना के समय न्यायमूर्ति एडवर्ड्स एवं न्यायमूर्ति रॉस अवकाश पर थे इसलिए सिविल सेवा के सदस्य जी0डी0 टर्नबल एवं राबर्ट स्पैंकी को जज का कार्य देखने के लए नियुक्त किया गया। साइमन उच्च न्यायलय के पहले रजिस्टार थे।

इलाहाबाद में हाईकोर्ट के भवन के लिए क्वींस रोड स्थित स्थान को चुना गया और फिर इलाहाबाद उच्च न्यायालय स्थापित हुआ। आज जहाँ राजस्व परिषद है, पहले वहाँ उच्च न्यायालय हुआ करता था। नार्थ वेस्टर्न प्राविंसेस के पुराने गजेटियर के मुताबिक नया हाईकोर्ट 1870 में बनकर तैयार हुआ। माशूक अली खान व अन्य बनाम एनओडब्लूएल, डिसीजन सदर दीवानी अदालत, नार्थ वेस्टर्न प्राविंसेस इस हाईकोर्ट का पहला रिर्पोटेड केस था जिसका निस्तारण 31 मई 1866 को किया गया। 19 जूलाई 1948 के उ0प्र0 हाईकोर्ट अमलग्रेशन आर्डर 1947 से लखनऊ में चीफ कोर्ट ऑफ अवध स्थापित थी। वर्तमान में इस हाईकोर्ट में कुल 41 न्यायकक्ष है जबकि लखनऊ खंडपीठ में 17 न्यायमूर्ति कार्य कर रहे है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के कुल अंग्रेज चीफ जस्टिसो के नाम व कार्यकाल

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के 135 वर्षो के इतिहास में कुल 37 मुख्य न्यायाधीश हुए हैं। पहले मुख्य न्यायाधीश सर वाल्टर को छोड़कर कुल अंग्रेज मुख्य न्यायाधीश हुए हैं–

1. सर वाल्टर मोरगन 1866–71
2. सर राबर्ट स्टुअर्ट 1871–84
3. सर विलियम कॉमर पैथरम 1884–86
4. सन जॉन एज 1886–98
5. सर लुडस एडंकरशा 1898
6. सर आर्थर स्टेची 1898 – 1901
7. सर जॉन स्टैनले 1901– 11
8. सर हेनरी रिचर्ड 1911–19
9. सर एडवर्ड ग्रीम वुड मीर 1919–32
10. सर शाह मोहम्मद सुलेमान 1932–37
11. सर जान गिबथाम 1937–41

इलाहाबाद हाईकोर्ट के भारतीय चीफ जस्टिसो के नाम व कार्यकाल

1. सर इकबाल अहमद 1941–46
2. मा0 कमला कांत वर्मा 1946–47
3. सर विधु भूषण मलिक 1947–55
4. सर ओबेहावेल मूथम 1955–61
5. मा0 मनुलाल चुनीलाल देसाई 1961–66
6. मा0 वशिष्ठ भार्गव 1966
7. मा0 नसीरउल्ला बेग 1966–67
8. मा0 विद्याधर गोविनगोक 1967–71
9. मा0 शशिकांत वर्मा 1971–73
10. मा0 धात्री सरन माथुर 1973–74
11. मा0 कुंवर बहादुर अस्थाना 1974–77
12. मा0 डी0एम0 चंद्रशेखर 1977–78
13. मा0 सतीशचंद्र 1978–83
14. मा0 एम. एन. शुक्ला 1983–85
15. मा0 एच. एन. सेठ 1986
16. मा0 के. जे. शेटठी 1986–87
17. मा0 द्वारका नाथ झा 1987
18. मा0अमिताव बनर्जी 1987–88
19. मा0 ब्रहमनाथ काटजू 1988–89

20. मा0 बी. पी. जे. रेड्डी 1990–91
21. मा0 एम. के. मुखर्जी 1991–92
22.मा0 एस.एस. सोढ़ी 1994–95
23. मा0 ए. एल. राव 1995–96
24. मा0 डी0पी0 महापात्रा 1996798
25. मा0 एन. के. मित्रा 1999–2000
26. मा0 एस. के. सेन 2000 से अब तक

इलाहाबाद हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से सम्बन्धित कुछ मुख्य तथ्य

1. न्यायमूर्ति द्वारका नाथ झा हाईकोर्ट इलाहाबाद के मात्र एक दिन मुख्य न्यायाधीश रहें क्योंकि अगले ही दिन उन्होंने अवकाश प्राप्त किया।
2. न्यायमूर्ति शाह मोहम्मद सुलेमान इलाहाबाद हाईकोर्ट के पहले भारतीय मुख्य न्यायाधीश थे, जो 1932 से 1937 तक मुख्य न्यायधीश रहें
3. न्यायमूर्ति कमला कांत वर्मा एवं उनके पुत्र मा0 शशिकांत वर्मा दोनों ही मुख्य न्यायाधीश बनें।

प्रवेंशाक निकलने पर हार्दिक शुभकामनाएं

खुशखबरी खुशखबरी खुशखबरी

+सुर्या होमियों हॉल

चकदोंदी, नैनी, इलाहाबाद

खुलने का समय : 9.00 से 12.00 बजे

सज्जन गण आपके नैनी में अच्छे इलाज हेतु होमियों हॉल खुलने जा रहा है, जहॉ हर प्रकार के कष्टो का निवारण किया जायेगा। हर प्रकार के महिलाओं तथा बच्चों का इलाज किया जायेगा। आपरेशन की भी सुविधा उपलब्ध है।

निदेशक
डॉ0 शकुन्तला
(पत्नी पं.नागेन्द्र)
नैनी

प्रवेशांक निकलने पर हार्दिक शुभकामनायें

राष्ट्रीय जनचेतना, उ0प्र0

ई0डी64, ए.डी.ए. कालोनी, नैनी, इलाहाबाद–8

श्रीमती सुमन तिवारी
श्रीमती जया द्विवेदी
एवं राष्ट्रीय जनचेतना परिवार

आवश्यक सूचना

लेखको से लेख, कहानियां, रोचक सस्मरण, आदि आमंत्रित है। प्रकाशित रचनाओं पर उचित पारिश्रमिक भी दिया जाएगा। अपनी रचनाओं के साथ में जवाबी लिफाफा लगाना न भूलें नहीं। नहीं तो प्रकाशित नहीं होने संदर्भ में रचनाओं को लौटाया नहीं जाएगा। रचनाओं को एक तरफ हासियां छोड़कर स्पष्ट शब्दों में या टंकण कराकर ही भेजें।

संदेश

सेवा में, द्विवेदी जी

मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" अपने नाम के अनुरुप ही भारतीय समाज में आपस में स्नेह स्थापित करने के अपने मुख्य उद्देश्य के प्रति सदैव प्रगतिशील रहे। आज जहॉ हर पत्रिकाओं का उद्देश्य शासन-प्रशासन को संतुष्ट करना होता जा रहा है, वहीं मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका अपने वक्तव्य की पारदर्शिता को बरकरार रखतेु हुए पत्रिका जगत में एक अनोखा उदाहरण बनकर स्थापित होगी।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

राजेश मिश्रा
निदेशक
शनि ग्रुप ऑफ एजुकेशन

शनि कम्प्यूटर्स, राजरुपपुर, एस०एस० गर्ल्स इंटर कालेज, राजरुपपुर, इला०, कस्तूरबा ब्वायज इन्टर कालेज, भगवतपुर, कौशाम्बी, के०के० मिश्र डिग्री कॉलेज, भगवतपुर, कौशाम्बी, आई. के. मेमोरियल हाईस्कूल, आनापुर, इलाहाबाद

शैलेन्द्र द्विवेदी

एडवोकेट हाईकोर्ट
पू0 सभासद नगर निगम, इलाहाबाद
सदस्य–स्टेशन सलाहकार समिति, इलाहाबाद
पू0 सदस्य–इला0 विकास प्राधिकरण
सचिव–पं. प्रभाकर नाथ द्विवेदी स्मारक समिति

फोन नं0 आफिस : 624191
निवास : 610606

निवास : 97, पं0 प्रभाकर नाथ द्विवेदी मार्ग, बाई का बाग, इलाहाबाद

दिनांक : 3.09.2001

प्रिय द्विवेदी जी

यह जानकर अत्यन्त प्रशन्नता हुई कि आप द्वारा अपने बुद्विजीवी साथियों के सहयोग से विश्व स्नेह समाज के प्रवेशांक का प्रकाशन प्रारंभ किया जा रहा है।

बिगड़ती हुई सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थिति में प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका है तथा प्रेस द्वारा समाज को सदैव एक सुगम मार्ग दिखा कर समाज के निर्माण का सफल प्रयास किया है।

इस पत्रिका की सफलता हेतु मेरी शुभकामना स्वीकार करें।

सेवा में
श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रधान संपादक
विश्व स्नेह समाज, नैनी, इलाहाबाद–8

आपका

शैलेन्द्र द्विवेदी

अनिल कुमार पाण्डेय

अधिवक्ता
उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
परामर्श कक्ष संख्या–2 (ऊपरी मंजिल)

दूरभाष : (0532) 508127
फैक्स : (0532) 609794
आवास : 72/11, सर्वोदय नगर (पुरा दलेल) मटियारा रोड, (बजरंग चौराहा) अल्लापुर, इलाहाबाद

दिनांक : 04.09.2001

श्री जी0के0 द्विवेदी
प्रधान संपादक
विश्व स्नेह समाज, नैनी, इला0

महोदय,

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप विश्व स्नेह समाज का प्रवेशां निकालने जा रहे हैं, यह मासिक पत्रिका अन्य मासिक पत्रिकाओं से हटकर समाज के सभी समुदायों में अपना एक अलग स्थान बनाए, यही मेरी हार्दिक आकांक्षा है।

शुभकामनाओं सहित–

आपका

लौहपुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल

प्रस्तुतिः श्याम सुन्दर सिंह पटेल

जिस समय अंग्रेजों की गुलामी से सम्पूर्ण राष्ट्र आतंकित व पीड़ित था, उसी समय एक ज्योति प्रस्फुटित हुई। जिसका वर्णन हिन्दी के प्रख्यात लेखक तथा वरिष्ठ सांसद स्व0 डा0 सेठ गोंविन्द दास ने अपनी पुस्तक ''सरदार पटेल'' में लिखा हैं कि ''गुजरात प्रदेश की कुरमी नामक प्रसिद्ध क्षत्रिय जाति (मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्रजी के पुत्र लव के नाम पर) लेवा उपजाति में 31अक्टूबर 1875 की बोरसद तालुके के करमसद गांव में कृषक परिवार श्री झबेर भाई के यहाँ माता लाड़ोबाई की कोख से एक बल्लभभाई पटेल के रूप में प्रकट हुई। इस होनहार बालक का जन्म उनके ननिहाल नदियाड़ में हुआ था।

बल्लभभाई के पिता श्री झबेर भाई यद्यपि एक साधारण कृषक थे पर वे बड़े संयमी, साहसी व धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे। देश हित के लिए अपना सर्वस्व समर्पण करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे, सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की लड़ाई में भाग लेने हेतु घर–परिवार की माया–मोह चुपचाप तजकर उत्तर भारत में झांसी पहुँचे और रानी लक्ष्मी बाई के नेतृत्व में अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिए तीन वर्ष सतत् प्रयत्नशील रहे बल्लभभाई की पूज्य माता लाड़ोंबाई जी बड़ी मृदुल स्वभाव व धार्मिक प्रवृति की आदर्श भारतीय नारी थी। ऐसे आदर्श माता–पिता के उच्च संस्कारित वातावरण में बालक बल्लभभाई पटेल का लालन पालन हुआ।

बल्लभभाई पटेल पाँच साहसी भाईयों में तीसरे थे तथा आपके एक बहन भी थी। बड़े भ्राता श्री बिट्टल भाई पटेल बहुत निर्भीक, अद्भुत विधिवेता तथा समाजसेवी थे, जिन्हें सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव एसेम्बली के प्रथम भारतीय प्रेसीडेन्ट होने का गौरव प्राप्त हुआ था।

एक साधारण परिवार में जन्में बल्लभभाई पटेल की प्रारम्भिक शिक्षा सुलभ साधनों के साथ न हो सकी थी। उन्होंने स्वयं के प्रयासों एवं स्वावलम्बन के सहारे किसी प्रकार इन्ट्रैस और मुख्तियार–गीरी की परीक्षाएँ पास कर अपने जिले में ही वकालत के पेशे से जीवन–यापन प्रारम्भ किया। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, हाजिर जवाबी और कठिन परिश्रम के फलस्वरूप कानूनी पेशे में थोड़े ही समय में अत्यधिक प्रसिद्ध हो गये। कानूनी पेशे की सफलता से काफी धन अर्जित किया। उसी से आप अपने बड़े भ्राता श्री बिट्ठल भाई को इंग्लैण्ड भेजकर बैरिस्टर बनाने में सहायक हुए फिर स्वयं इंग्लैण्ड गये तथा बैरिस्टरी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। बल्लभभाई पटेल बचपन से बड़े साहसी तथा लोगों के कल्याण की भावना रखने वाले थे। एक बार की बात है कि बचपन में 5, 6 लड़को की टोली के साथ गॉव से दूर 'पटेलाद' पाठशाला में पढ़ने पगडण्डी से जा रहे थे ये पीछे रह गये बाकी लड़के आगे बढ़ गये तो एक ने पूछा अरे! बल्लभभाई कहॉ गया? "दूसरे ने जबाव दिया" वह वहॉ दिखाई दे रहा है पता नहीं वहॉ क्या कर रहा है। बल्लभभाई ने जबाव दिया 'जरा रुको मैं अभी आ रहा हूँ।' वे पगडन्डी में गड़े एक पत्थर के खूटे को उखाड़ रहे थे उसे उखाड़कर फेंक दिया तथा बोले "हर किसी को लगे और हर किसी की रुकावट बने, ऐसे खूँटे को उखाड़ कर फेंकना जरुरी था न जाने कितने लोग अंधेरे में इससे टकराये होगें।"

पाठशाला तथा कक्षा में भी अन्याय न सहने की अनेक घटनाओ भी वे भुक्तभोगी थे। एक बार उनके कॉख में फोड़ा निकल आया। गॉवों में उस समय उग्र उपचार थे जैसे गरम लाल लोहे की सलाई से दागना। नाई ने लोहे की चपटी सलाई सिगड़ी में तपाकर लाल कर दी पर दागने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ी तब छात्र बल्लभ ने कहा, "घबराते क्यों हो तुम्हारी हिम्मत न पड़ती हो तो सलाई मेरे हाथ में दे दो" और गरम सलाई हाथ में लेकर फोड़े पर भोंक दिया। फोड़ा फट गया बगली खून व मवाद से लथपथ थी पर उसके दर्द की छाया उनके चेहरे पर न थी।

सन् 1926 में बैरिस्टर बल्लभभाई पटेल की भेंट महात्मा गॉधी से हुई। इस भेंट के फलस्वरुप इनके जीवन व रहन–सहन में मूलभूत परिवर्तन होने लगे। बैरिस्टरी के अंग्रेजी भेष–भूषा को तजकर स्वदेशी पहनावे में पूर्णतः रंग गये और वे गॉधीजी के अनन्य शिष्य बन गए। बल्लभभाई की निष्ठा, सत्य और अहिसा में स्थिर हो गई। बल्लभभाई इतने स्पष्ट वक्ता व निर्भीक व्यक्ति थे कि गॉधी जी के जिन मतों से वे असहमत होते थे उन्हें वे निर्भीक रुप से अपने उस राजनीतिक गुरु के सम्मुख रख देते थे।

बल्लभभाई पटेल ने सक्रिय रुप से गोधरा राजनैतिक सम्मेलन से राजनीति में प्रवेश किया। केवल 6 दिन में वहॉ के कमिश्नार को सत्याग्रह का नोटिस देकर तुरन्त बेगार प्रथा बन्द करा दी। इनकी ऐसी अनेकों उपलब्धियॉ रहीं जैसे किसानों को संगठित कर बारडोल सत्याग्रह का सफल नेतृत्व जिस पर उन्हें सरदार की उपाधि मिली तथा 1921, 1931 तथा 1942 ई0 में महात्मा गॉधी के आन्दोलनों के प्रमुख सूत्रधार व संचालक रहे। आपको 1930, 1940, 1942 में राजनैतिक कारणो से कारावास भोगना पड़ा, आखिरी जेल यात्रा 3 वर्ष का पूरा करने के बाद अंग्रेजी सरकार ने उन्हें 15 जून 1945 को रिहा कर दिया। सरदार पटेल एक महान प्रबन्धकर्ता, उच्चकोटि के संगठनकर्ता तथा निर्भीक एवं उत्साही सेनापति थे। वे लम्बे–लम्बें भाषण करने के आदी न थे पर वे जब बोलते थे तो प्रत्येक वाक्य सारगर्भित व अर्थपूर्ण होता था। उनका आदर्श कथनी न होकर करनी था। उन्हें चापलूसी से सख्त नफरत थी तथा अनुशासन पालन के कड़े पक्षधर थे उनका जीवन पूर्णतः राष्ट्र को समर्पित था।

भारत स्वतन्त्र होने पर सरदार पटेल, प्रथम उप प्रधानमंत्री व गृहमंत्री बनाये गये। शासन की बागडोर सम्भालते ही केन्द्रीय सरकारी पदों पर अभारतीयों की नियुक्ति बन्द करा दी। रेडियों व सूचना विभाग की कायाकल्प कर डाली। आपकी महानतम् उपलब्धि लगभग 600 रियासतों, राजाओं–रजवाड़ों को भारतीय संघ का अभिन्न अंग बनाना था। जम्मू–काश्मीर के अलावा तिब्बत पर चीनियों के कब्जे की बहुत पहले ही पं0 नेहरु को भारत हित में सचेत कर लिखित संकेत दे दिए थे और देश की सभी जटिल समस्याओं को उन्होंने सफलता पूर्वक सुलझा दिया था।

इतना ही नहीं देश की प्रतिभाओं, किसानों, दलितो व राष्ट्र के सबसे कमजोर व्यक्ति को भी राष्ट्रीय धारा से जोड़ा था जिनमें प्रमुख है डा0 भीमराव अम्बेडकर जिनकी प्रतिभा को महाराजा क्षत्रपति शाहू जी ने पहचाना था तथा अपने खर्चे से उनकी उत्तम शिक्षा की व्यवस्था कर विदेश भेजा। बैरिष्टर बनने के बाद ये सरदार पटेल के सम्पर्क में आये। सरदार पटेल इन्हें वेस्ट बंगाल के कोटे से सांसद बनवाकर सरकार में लायें।

इस महान सपूत का स्वर्गवास 15 दिसम्बर 1950 को बम्बई में हुआ लेकिन आज भी जब देश के सम्मुख कोई जटिल समस्या खड़ी होती है लोग पटेल का नाम तुरन्त स्मरण करते है।

कहानी

"संजोग"

नम्रता यादव
सदस्या
जी0पी0एफ0 सोसायटी

अनुज के हाथों का स्पर्श और मीठी आवाज को सुनकर मैने ऑखें खोल दी। अनुजः– "आज मुझे जरा जल्दी जाना है, तुम नाश्ता तैयार करो मै फ्रेश होकर आता हूँ।" मै जल्दी से उठी और मैने नाश्ता तथा टिफिन तैयार किया। फिर मैने अनुज को आवाज लगायीः–"नाश्ता तैयार है।" (अनुज खाते हुए):–"बाजार में कोई नयी किताब आयी है क्या ?" शगुनः–"पता नही, इधर काफी दिनों से गयी नही, ऐसा करते है कि शाम को दोंनों साथ चलेंगे।" अनुजः–"ठीक है, पर जरा किताबों की शेल्फ को ठीक करके जगह बना लेना। अच्छा मै चलता हूँ, शाम को चलेंगे तैयार रहना।" शगुनः–"अच्छा अनुज के ऑफिस जाने के बाद मैने अपना काम निपटाया और किताबो की शेल्फ के पास पहुँची। अनुज और मेरी, यानी हम दोंनों की ही पढने में रूचि है।

मैने जल्दी–जल्दी शेल्फ साफ किया। शेल्फ में रखी अधिकतर किताबों को मै पढ़ चुकी हूँ। काम निपटाकर मैने सोचा कि चलो खाली बैठने से अच्छा है कि किताबें ही पढ़ा जाये। मैने एक किताब निकाल ली और आराम कुर्सी पर आकर बैठ गयी। मैने किताब पढ़नी शुरू की, कहानी अच्छी थी, जिससे मैं जल्दी–जल्दी पढ़ने लगी। किताब में मैने एक नाम लिखा देखा तो उत्सुकतावश मैने पन्नों को जल्दी–जल्दी पल्टा। मैनें देखा कि उसमें कागज का एक पुर्जा था। मैने तुरन्त ही उसे पढ़ना शुरू किया। मै जैसे–जैसे शब्दों को पढ़ रही थी मेरी आखें से अश्रु बहते ही जा रहे थे।

ऐसा लग रहा था कि आज सबकुछ देते हुये भी ईश्वर ने कही नाइंसाफी जरूर की है। सब कुछ पाकर भी ऐसा लगता है कि दामन खाली है। आज इस कागज के टुकड़े ने फिर मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया है– "क्या था? और क्या हो गया?" आज से लगभग तीन साल पहले मैं क्या थी और आज क्या हूँ? शगुन सोचती है और उसे याद आने लगते है वो दिन जब वो ऐ अल्हण उम्र की लड़की थी जिसका काम सिर्फ पढ़ना था और सिर्फ पढ़ना, इसके अलावा कुछ नही। यही उसकी दिनचर्या थी। न जाने कब लोंगों की निगाहों ने उसके पिता के कान में ये बात डाल दी कि बिटिया अब सयानी हो गयी है, घर–वर की तलाश की जाये। पिता जी ने जी जान से एक अच्छा घर परिवार ढूँढ़ने की कोशिश की। मै इस अनजाने अनसुलझे सवाल से परेशान थी कि क्यों मुझे अपना घर छोड़, अपने माता–पिता को छोड़ दूसरे घर में भेजने की तैयारी की जा रही है? पर मैने नहीं जाना कि बेटी का ससुराल ही उसका असली घर होता है। मैनें अपनी इन्टरमीडिएट की परीक्षा पास की और शरमाई–सकुचाई लाल जोड़े और अग्नि के इर्द–गिर्द एक अजनबी, अनचाहे के साथ मुझे ब्याह दिया गया। पर हमारे यहॉ रिवाज है कि यदि बेटी की शादी जल्दी हो जाये तो मॉ–बाप उसकी विदाई के लिए ससुराल पक्ष से समय मॉग लेते है, जो मेरे पिताजी ने भी तीन साल का समय मॉग लिया और मुझे मिला भी। विवाह हो जाने के बाद सब ने मुझे मेरी मर्यादाएं और मेरी सीमायें समझा दी कि अब आजीवन मुझे इसका पालन धैर्य और शालीनता से करना है। मॉग में सिन्दूर सजाये माथे पे बिंदिया और अन्य तमाम निशानी उस अजनबी के नाम की मैनें धारण कर ली जो मेरा था और होगा तीन साल बाद।"

"विवाह हो जाने के उपरान्त कुछ समय मन में उथल–पुथल मची पर फिर सब ठीक हो गया, जब मैने अपना एडमीशन विश्वविद्यालय में कराया। वहॉ की शिक्षा प्रणाली सह–शिक्षा थी तथा युवक एवं युवतियॉ दोनों साथ–साथ शिक्षा ग्रहण करते थे। शुरू में मुझें वजॉ जाना कुछ अटपटा सा लगा लेकिन फिर मैने लाज का पहरा तोड़ कॉलेज जाना प्रारम्भ किया। मैने अपने पति के सुहाग चिन्ह सिन्दूर को अपने काले बालों में सहेज लिया तथा बिल्कुल साधारण सी लड़की बनकर जाने लगी। वहॉ पर मेरी कई लोंगो से दोस्ती हुई, उसमें से कुछ युवक थे तथा कुछ युवतियॉ थी। एक दिन जब मैं कॉलेज के लिये निकली तो मैं काफी लेट हो रही थी। मै लम्बे–लम्बे डग भरती हुई चली जा रही थी कि शायद कोई रिक्शा या टैक्सी मिल ही जाय, पर कोई सवारी नही मिल रही थी। मुझे लगा कि आज भी क्लास मिस हो जायेगी। तभी मुझे अचानक ठोकर लगी और मेरी चप्पल की स्टेप टूट गयी। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि मैं समय पर नही पहुँच पाऊँगी। मैने अपनी चप्पल अपने हाथों में उठा ली और चलने लगी कि कहीं कोई मोची मिल जाये। पर गर्मी की वजह से कोई नही था। तभी मैने एक युवक को देखा वो मुझे याद आया कि ये भी मेरे ही कॉलेज का छात्र है। मैने अपनी चप्पल अपनी पीठ के पीछे छिपा ली और चलने लगी। तभी मैने देखा कि वो मेरी ही तरफ आ रहा है। वो मरे पास आकर बोला "क्या हुआ? कोई परेशानी?" मैने कहा–'नही तो!" उसने कहा–"घबराने की कोई बात नही, मैं भी आपके ही कालेज का छात्र हूँ। मुझे पता है कि आपकी चप्पल टूट गयी है और यहॉ आसपास कोई मोची भी नही है। अगर आपको कॉलेज जाना है तो मै आपको लिफ्ट दे सकता हूँ क्योंकि मै भी वहीं जा रहा हूँ।" उसकी शालीनता एवं सभ्यता को देखकर न जाने क्यों मै उसक साथ गाड़ी पर बैठने को तैयार हो गयी। पहले मैने अपनी चप्पल ठीक करायी, उसके बाद फिर उसने मुझे कॉलेज छोड़ दिया और खुद फर्राटे से गाड़ी लेकर फुर्र हो गया। मैं उसका धन्यवाद भी न कर पायी। मुझे बहुत ही खुशी हुई कि ने मेरी सहायता की, वर्ना आज फिर मुझे प्रोफेसर से डॉट खानी पड़ती। मैने अपना क्लास खत्म किया तो बाहर आयी और सोचा कि चलो उस युवक को ढूँढकर धन्यवाद दे दूँ, पर वो

काम में मशगूल हो गयी। उस दिन के बाद मै जल्दी से कॉलेज के लिए निकल पड़ती थी। मुझे किताब पढ़ने का बहुत ही शौक था। अच्छे–अच्छे रचनाकारों की रचनायें, उनकी भाषा, उनके भाव,उनके कथन न जाने क्यों मेरे ह्रदय को बहुत भाते और इससे मुझे आत्मिक सुख का अनुभव होता। एक दिन जब मै घर से निकली तो बाहर धूप से सिर दुखने लगा तथा पढ़ाई करने का बिल्कुल भी मन नही था। इसीलिए सबके क्लास में चले जाने के बाद मैने सोचा कि आज क्लास नही करूँगी और लाइब्रेरी जाने का निश्चय किया ये सोचकर कि वहॉ सुकून मिलेगा। मै अकेली ही वहॉ जा पहुॅची तथा किताबों की खोजबीन करने लगी कि शायद कोई अच्छी किताब मिल ही जाये। जब मन न हुआ तो खीजकर एक ऐसी ही किताब उठा ली और बैठ गयी। सिर पे हाथ रखकर मै बैठी थी। लाइब्रेरी में बोलना वर्जित था इसलिए वहॉ शान्ति थी और इसी कारण वहॉ मुझे सुकून मिला। मेरे बगल की चेयर जो खाली थी लगा कि कोई उसपर आकर बैठ गया है, फिर भी मै सिर नीचे किये बैठी ही रही। सर दर्द तेज था सो मेरे अश्रु निकल रहे थे जो मेज पर गिर रहे थे। मै उन्हेबड़ी कातरता से निहार रही थी। मुझे इसका आभास भी नही हुआ कि कोई मेरे बगल में बैठा है देखेगा तो क्या सोचेगा? तभी मेरे सिर पर एक प्यार भरी स्पर्श का एहसास हुआ तो न जाने क्यों मेरे अश्रु और निकल आये? मैने यह जानने की कोशिश भी नही की कि ये हाथ किसका है? तभी मैने जैसे ही गर्दन उठाई, देखा वही युवक मेरे पास बैठा है, मेरे सिर पर हाथ फेर रहा है। मै झटके से उठी और अपने अश्रुओं को पोछकर मुस्कुराने का प्रयास करने लगी। मेरे बोलने से पूर्व ही उसने कहाः–"क्या हुआ मैडम? आप रो क्यों रही है?" मैने कहा–"ऐसी कोई बात नही है ऑख में किरकिरी चली गयी थी, सो अश्रु निकल आयें है?" उसने कहा–"अगर आप बताना नही चाहती तो कोई बात नही। उसके ऐसा कहने पर मेरे मुॅह से निकल गया कि "थोड़ा सर–दर्द था" मैने कहा–"आप ने उस दिन मेरी सहायता की मै आपको धन्यवाद भी नही दे पायी और न ही नाम पूछ पायी, इसके लिए मै माफी चाहती हूँ" तो उसने कहा–"इसमें माफी मॉगने वाली कोई बात नही, आप मुझे शर्मिदा कर रही है। मेरा नाम प्रतीक है और आपका?" "शगुन"–मैने कहा। उसने कहा–"बड़ा ही शुभ नाम है आपका। आइये चलकर चाय पीते है।" पता नहीं क्यों उसकी हर बात मैं बिना किसी हिचकिचाहट के माने जा रही थी। हम दोंनों ने कॉफी पी उसके बाद उसने एक सिरदर्द की टेबलेट ला कर दी और मुझसे विदा ली। तत्पश्चात मेरे फ्रेन्ड लोग भी आ गये और थोड़ी देर बाद हम लोग घर के लिए निकल पड़े। पर न जाने क्यों घर आ कर मुझे नींद ही नही आ रही थी, बार–बार मै करवट बदल रही थी और रह–रह कर उसकी बातों का ख्याल आ रहा था। इसी तरह रात बीत गयी। इसके कुछ दिनों बाद मै कालेज नही जा पायी, बीमारी के कारण। जब गयी तो फिर प्रतीक से मुलाकात हुई। न जानें क्यों मेंरी हर बात में उसकी बात अवश्य शामिल होती। पर चूॅकि मैं अपनी मर्यादायें जानती थी,

इसलिए कभी हद से ज्यादा खुलनें का प्रयास नहीं किया। उसनें मुझे अपनें बारे में सारी बातें बतायी कि वो कहॉ रहता है और क्या करता है आदि। मैंने भी अपने बारे में उसे सब कुछ बता दिया कि मेरा विवाह हो चुका है। प्रतीक मेरा अच्छा फ्रैन्ड तथा सहपाठी था, मुझे उस पर नाज था। मेरे घर के हर सदस्य उसकी शालीनता के गुणगान करते नहीं थकते थे। प्रतीक पर अपने घर की जिम्मेदारियों का बोझ था, लेकिन फिर भी वह उनका निर्वहन करते हुए बड़ी मेहनत और लगन से पढ़ाई में लगा था ताकि उसका और उसके परिवार का भविष्य सॅवर सके। हम दोनों के विचार बहुत मिलते थे तथा विषय भी। अतः किताबों का आदान–प्रदान होता ही रहता था। जहॉ उसे कठिनाई होती मै समाधान करती और मेरी कठिनाई का हल वह बखूबी निकालता । इस प्रकार न जानें कब आखिरी साल आ गया पता ही नही चला। फिर हम लोग परिक्षा की तैयारी में जुट गये। मुझे अपने एक रिश्ते की शादी में शामिल होनें के लिए जाना पड़ा। मै वहॉ जानें ही वाली ही थी कि प्रतीक आया और बोला–"शगुन तुम तो जा रही हो, अपनें नोट्स और किताब मुझे देती जाना, मै पढ़ लूॅगा तथा निशान भी लगा दूॅगा। मैने अपनी किताब उसे दे दी और चली गयी। जब वहॉ से वापस आयी तो काफी थक गयी थी। कुछ दिन आराम कर परीक्षा की तैयारी शुरू की। उसने कहा– "शगुन ये लो अपनी किताब। मैने निशान लगा दिया है और कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न भी इसमें है जिसे तुम हल कर लेना और मुझे भी बताना। " तभी मेरी छोटी बहन चाय ले आयी और हम दोंनों ने चाय पी। उसने मेरी परीक्षा की तैयारी के बारे में पूछा तथा कुछ नोटबुक उठा कर शेल्फ में रख दी और काम में जुट गयी। रात को जब सभी सोने चले गये तो मैने अलमारी से नोटबुक निकाली। मैने सोचा कि प्रतीक को मेरा कितना ध्यान है, उसने कितनी मेहनत की होगी। यही सब सोचते हुए मै पन्ने पलटने लगी। तभी मैने देखा कि किताब के बीच में एक लिफाफा रखा हुआ है। मैने सोचा कि प्रतीक भूल गया होगा, देंखें तो क्या रखा है? यही सोचकर उसे खोलने लगी तो उसे पढकर मेरे होश उड़ने लगे। उसमें जो लिखा था वह इस प्रकार थाः–

प्रिय मित्र शगुन "आज जो बात मै तुमसे कहने जा रहा हूँ तुमने कभी इसकी कल्पना भी नही की होगी। तुम्हारी और मेरी पढाई का ये आखिरी साल है। मैने सुना है कि अपनी भावनाओं को हमशा अभिव्यक्त कर देना चाहिये। जिससे सामने वाला आपके विचार–भवनाओं को अच्छी तरह समझ सके। यही सोचकर मै तुम्हें यह बताना उचित समझता हूँ कि मुझे तुमसे प्रेम है। तुम इसे अन्यथा मत लेना। तुमसे मिलने पर मैने यह नही सोचा था कि मै अपने दिल के हाथों मजबूर हो जाऊगा। मैं जानता हूँ कि तुम विवाहित हो, किसी की पत्नी हो, पर मै अपने ह्रदय का क्या करूँ जो सोते जागते प्रतिक्षण तुम्हारी ही स्मृति में खोया रहता है। मै जानता हूँ कि तुम्हारा और मेरा मिलन सम्भव नही है। लेकिन प्रेम सिर्फ पाने का ही नही, बल्कि खोने का भी नाम है। मेरे एक सवाल का जवाब अपने ह्रदय पर हाथ रख, सोचकर दो कि तम्हें मुझसे प्रेम है कि नही। तुम्हारी "हाँ" या "ना" को मै सहर्ष स्वीकार कर लूंगा बशर्ते तुम सच बोल दो मेरे इस सवाल का जवाब यदि तुमने दिया तो मै समझूॅगा "चाँद हमेशा आकाश मे चमकता है, पानी मे उसकी परछाई पड़ती है परछाई को देखकर ये नहीं समझना चाहिए कि चाँद को उसने पा लिया है। तुम्हारे उत्तर के इन्तजार में–

प्रतीक

इस पत्र को पढ़कर मेरा मन–मस्तिष्क घूम गया। विचारों के तूफान उत्पन्न हो गये। दिल की

धड़कन बढ़ गयी। मै ये सोचने को मजबूर हो गयी कि मेरी कौन सी बात में उसको प्रेम नजर आया। मै इतनी खूबसूरत भी नही, फिर मै शादीशुदा भी हूँ। ये जानते हुए भी उसने मुझे चाहने की भूल की। इसमें किसका दोष है, मेरा या उसका? ये मै समझ नही पा रही हूँ। मै समझ नही पा रही हूँ कि उसके पत्र का क्या जवाब लिखूँ? कभी गुस्सा आता है तो कभी मेरी मर्यादायें मुझे रोकती है। यही सोचकर मैने प्रतीक के प्रति कठोर रूख अपनाकर उससे दूर रहने की कोशिश करने लगी। जब भी वो मुझसे बात करके सफाई देने की कोशिश करता, मै वहाँ से उठकर चली जाती। मैने अपने होंठों पर चुप्पी साध ली थी। प्रतीक मेरे बात न करने का कारण समझ रहा था लेकिन फिर भी कुछ ऐसा था जो वह मुझसे बात करके कहना चाहता था, मुझे समझाना चाहता था। मै सब कुछ जानते हुए भी न समझने का नाटक कर रही थी। इसी उहापोह में हमने परीक्ष समाप्त की। धीरे–धीरे प्रतीक का मुझसें मिलना बन्द हो गया। प्रतीक से बिछड़ने के बाद उसकी कमी मुझको पल–पल कचोटती, मेरा दम घुटता ऐसे घर में घृणा होती ऐसे माँ–बाप से जिन्होंने मेरा विवाह एक अजनबी से कर दिया। उस दिन से मै अपनी विदाई के दिन तक बेचैन रही। जब सुसराल पहूँची तो मेरा गर्मजोशी से साथ स्वागत हुआ। स्नेह करने वाले लोग प्रेम से सुगन्धित वातावरण, सब कुछ मुझे प्राप्त हे गया। जब मैने अपने परमेश्वर के दर्शन किये तो ऐसा लगा कि प्रतीक पीछे छूट गया है और वो पास आ गये है। कुछ दिन ठीक–ठाक चलता रहा, ज़िन्दगी एक ढर्रे पर चलने लगी। अचानक आज उनकी आलमारी से ये कागज का टुकडा पाकर मै ''फिर दोराहे पर आ खड़ी हुई। इसमें लिखा है अनुज,''मै जानती हूँ कि तुम विवाहित हो लेकिर इस दिल का क्या, जो बस तुम्हारे लिए धड़कता है। तुम्हारे माता–पिता ने तुम्हारी जिन्दगी के साथ खिलवाड़ किया है। इतनी जल्दी तुम्हारी शादी क्यो कर दी? और अगर की तो तुम्हारी पत्नी को क्यों नही लाये? लेकिन उन्होने यही सोचकर की होगी कि कही बेटा बिगड़ न जाये? या तुम्हारी शादी में अच्छी रकम मिल रही होगी? मै जानती हूँ कि तुम मुझसे प्यार करते हो पर जमाने से डरते हो। यहाँ तीन सेकेण्ड का तो भरोसा नही है फिर तुमने सोच कैसे लिया कि तीन साल में कुछ नही होगा? वक्त किसी के हाथें नही रूका। तुमसे मेरी ये आखिरी मुलाकात है। अगर जिन्दगी रही तो फिर मिलेंगे। मै तुम्हें सात जन्मों तक नही भुला पाऊँगी । क्या तुम मेरी कमी को महसूस करोगे, मुझें भूल पाओगे? शायद नही। तुम अपनी पत्नी को खुश रखना, उसे प्यार देना, क्या पता उसका भी कोई मेरी तरह इन्तजार कर रहा हो और मेरी तरह उसकी भी मंजिल का कोई रास्ता न हो। इस पत्र को पढकर मेरी आँखो से अश्रुओ की धारा बहने लगी आज मैने प्रतीक के प्रेम के अर्थ को जाना अनुज और मै दोंनों ही एक ही कारण से अपने प्रेम को पाने में असफल रहे और वो कारण था हमारा विवाह। आज भी मै ये समझ नही पायी जिन्दगी में ऐसा क्यों होता है। हम जिसे चाहते है वो हमसे दूर होता है।

6:30 बज चुके है, अनुज ने कहा–क्या सोच रही हो? मैने कहा–कुछ नही बस यो ही अतीत में पहूँच गयी थी।

प्रवेशांक निकलने पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित स्थापित : 1996
विगत पांच वर्षो से आपकी सेवा में सेवारत

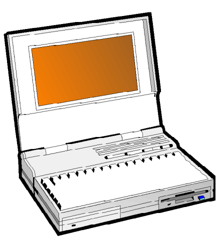

फ्यूचर कम्प्यूटर लर्निग सेन्टर

277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
(उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)

कोर्सेस :

1. भारत सरकार DOEACC से मान्यता प्राप्त ओ लेवल कोर्सेस
2. C++, Oracle, Internet, Visual Basic, Java, HTML, DTP, Progaramming, Account.
3. IGNOU और राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित BCA, DCO, CIC, PGDCA MCA कार्सो की तैयारी व संचालन
4. यू0 पी0 बोर्ड, सीबीएसई, आईसीएसई बोर्ड द्वारा संचालित कक्षा 9 से 12 तक कोर्सो की कोचिंग की व्यवस्था
5. विद्यालयों/महाविद्यालयों में कम्प्यूटर संचालन की व्यवस्था
6. जॉब वर्क 7. कलर प्रिटींग 8.स्क्रीन प्रिटींग 9. प्रोजेक्ट वर्क

विशेष

1. उ0 प्र0 सरकार के मापदण्डों के अनुसार पिछड़ी जाति 27% अनुसूचित जाति एवं जनजाति, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, विकलांग व आर्थिक रुप से पिछड़े हुए सामान्य अभ्यर्थियों के लिए 10% आरक्षण अलग से निर्धारित किया गया।
2. महिलाओं को निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षण की व्यवस्था।
3. आरक्षण के पात्र आवेदक तभी माने जायेगे जब वे अपनी जाति प्रमाण–पत्र/स्वतंत्रता संग्राम सेनानी/विकलांग प्रमाण–पत्र राजपत्रित अधिकारी से प्रमाणित कापी संलग्न करेंगें।
4. आर्थिक रुप से पिछड़े हुए सामान्य अभ्यर्थियों को अपना वार्षिक आय प्रमाण–पत्र संलग्न करना अनिवार्य होगा।

प्रवेशांक निकलने पर शुभकामनाओं सहित
उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

गुरुकुल विद्या मन्दिर

चक रघुनाथ, नैनी, प्रयाग

1. कुशल शिक्षण व्यवस्था
2. अनुभवी आचार्य
3. कम्प्यूटर शिक्षण निःशुल्क

कक्षा शिशु से दश्म तक

प्रगतिशील शिक्षा ही विद्यालय का लक्ष्य है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

जी0 पी0 एफ0 सोसायटी

आपसे प्रस्तावित
अनाथालय, बाल आश्रम व विधवा आश्रम
प्रस्तावित स्थल :
ग्राम – टीकर, पोस्ट –टीकर (पैना)
जनपद – देवरिया, उ0प्र0
के लिए आपसे आर्थिक/कपड़ा/ निर्माण सामाग्री/भोजन सामग्री के सहयोग की अपील करता है। आप अपने सहयोग के लिए हमें लिखे या भेंजे :
प्रबंधक, जी0पी0एफ0 सोसायटी
277/486, जेल रोड,
चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद–8

लोक आयुक्त, उत्तर प्रदेश के अधिकार एवं कार्य प्रणाली

लोक आयुक्त उत्तर प्रदेश के लोकसेवकों के कुप्रशासन एवं भ्रष्टाचार के विरूद्ध जनता की शिकायत सुनने तथा उनका निवारण करने हेतु शासन को अपनी संस्तुति प्रस्तुत करना और कोई भी व्यक्ति उत्तर प्रदेश सरकार के किसी लोकसेवक के कुप्रशासन, पद के दुरूपयोग, भ्रष्टाचार, वित्तीय अनियमितता आदि के विरूद्ध लोक आयुक्त को शिकायत भेज सकता है। लोक आयुक्त अधिनियम के अन्तर्गत दो प्रकार के परिवाद ग्रहण कियेय जाते है, 1– शिकायत 2– अभिकथन " शिकायत का तात्पर्य किसी कुप्रशासन के सम्बन्ध में लोक आयुक्त का ध्यान आकर्षित करेन से है– जो परिवादित कार्यवाही से अवगत होने की तिथि से सामान्यतया एक वर्ष की अवधि के भीतर ही की जा सकती है। लोक आयुक्त को यह अधिकार है कि यदि परिवादी द्धारा यह समाधान किया जाता है कि निर्धारित अवधि के भीतर शिकायत प्रस्तुत न करने के लिए उसके पास पर्याप्त कारण है तो परिवाद ग्रहण किया जा सकता है। " अभिकथन का तात्पर्य किसी लोक सेवक के भ्रष्टाचार अथवा सत्यनिष्ठा की कमी को लोक आयुक्त के संज्ञान में लाने से है अर्थात यह कि –(1) उस लोक सेवक ने उसी रूप में अपनी स्थिति का दुरूपयोग अपने लिए या किसी अन्य व्यक्ति के लिए कोई अभिलाभ या अनुग्रह प्राप्त करने या किसी अन्य व्यक्ति को अनुचित अपहानि या कष्ट पहुंचाने के लिए किया है, (2 वह उस लोकसेवक के रूप में अपने कृत्यों का निर्वहन करने में व्यक्तिगत हित अथवा अनुचित या भ्रष्ट उद्देश्य से प्रेरित था, अथवा (3)वह उस लाकेसेवक की हैसियत से भ्रष्टाचार या ईमानदारी की कमी का दोषी है। (4) अभिकथन रूपी परिवाद, जिस दिनांक से परिवादित कार्यवाही का किया जानासय अभिकथित है उससे पॉच वर्ष की अवधि में ही किया जा सकता है। "शिकायत" व्यथित व्यक्ति द्धारा की जा सकती है जबकि "अभिकथन" "लोकसेवक" से भिन्न किसी अन्य व्यक्ति द्धारा किया जा सकता है। निम्नलिखित व्यक्ति व विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी लोक सेवक की परिभाषा में आते है और उनके खिलाफ शिकायत या अभिकथन भेजे जा सकते है– " लोक सेवक" : प्रत्येक व्यक्ति जो नीचे वर्णित रूप में है या कभी रहा है लोकसेवक की श्रेणी में आते हैं। (1) उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री को छोड़कर प्रत्येक मंत्री, विधानसभा एवं विधान परिषद् का सदस्य, (2) शासन के सभी अधिकारीगण, कर्मचारीगण (जिसमें राज्य सरकार क अधीन तत्समय कार्यरत् अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारीगण सम्मिलित है।) निम्नलिखित के विरूद्ध केवल अभिकथन ही हो सकता है– (3) प्रत्येक क्षेत्र समिती के प्रमुख, जिला परिषद के अध्यक्ष, प्रत्येक नगर महापालिका का नगर प्रमुख, यू.पी. म्यूनिसिपेलिटीज एक्ट 1916 की धारा 2 के खण्ड (4) में यथापरिभाषित किसी सिटी की नगरपालिका का प्रत्येक प्रेसीडेन्ट्रीकृत किसी जिला स्तर की केन्द्रीय समिति अथवा किसी शीर्ष समिति का कोई अशासकीय सभपति (जिसके अन्तर्गत उक्त विवरण का प्रत्येक पदाधिकारी भी, चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारा जाये) या प्रबन्ध निदेशक। प्रत्येक ऐसा व्यक्ति, जो निम्नलिखित की सेवा में है या उसका वेतनभोगी है इनके विरूद्ध केवल अभिकथन हो सकता है– (4) क – उत्तर प्रदेश रराज्य में कोई भी स्थानीय प्राधिकारी जिसे राज्य सरकार द्धारा गजट में तदर्थ अधिसूचित किया जाये। ख– समय समय पर शासन द्धाराय अधिसूचित अन्य विशिष्ट सरकारी कम्पनियों, नगर निगमों, परिषदों आदि को भी लोक आयुक्त के क्षेत्राधिकारी में लाया गया है। प्रत्येक ऐसा व्यक्ति जो उक्त कम्पनियों, निगमों परिषदों में वेतनभोगी हो, के खिलाफ अन्वेषण का अधिकार दिया गया हैं। इस संगठन के समक्ष निम्नलिखित शिकायतें भी की जा सकती है– लोकसेवकों की पेंशन, अनुग्रह राशि, भविष्य निधि, सेवानिवृत्ति सम्बन्धी देयक, निष्कासन अथवा सेवा समापन से प्रोद्भूत कोई दावा। उत्तर प्रदेश लोक आयुक्त अधिनियम में यह स्पष्ट प्राविधान है कि निम्न पदाधिकारियों के बारे में कोई जॉच नही की जायेगी। 1. उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधिपति या किसी न्यायाधीश या न्यायिक सेवा के किसी सदस्य। 2. किसी भी न्यायालय के अधिकारी या सेवक। 3. महालेखाकार, उत्तर प्रदेश। 4. उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष, सदस्य या कर्मचारी वर्ग। 5. मुख्य निर्वाचन आयुक्त, निर्वाचन आयुक्त, प्रादेशिक आयुक्त तथा मुख्य निवार्चन अधिकारी, उत्तर प्रदेश। 6. प्रदेश के विधान मण्डल के सचिवालय के कोई कर्मचारी । निम्न मामलों में शिकायत नही की जा सकती– 1. किसी अपराध की जॉच–पड़ताल का कार्य। 2. राज्यय की सुरक्षाय हेतु किया गया कार्य। 3. कोई मामला न्यायालय में जायेगा या अभियोग जारी किया जायेगा, इस सम्बन्ध में निर्णय लेने का कार्य। 4. किसी संविदायी अधिकार को पूरा करने में परेशानी अथवा घोर विलम्ब के मामले को छोड़कर शासन स्थानीय प्राधिकारी, निगम, सोसाइटी, कम्पनी आदि द्धारा वाणिज्यिक समितियों से की गयी संविदा। 5. लोक सेवकों की नियुक्ति, निष्कासन, वेतन, अनुशासन, अधिवार्षिकी या सेवा शर्तो से सम्बन्धित मामले (इसके अन्तर्गत पेंशन, अनुग्रह राशि, भविष्य निधि से भुगतान तथा सेवा निवृत्ति, निष्कासनय अथवा सेवाय समाप्ति से उत्पन्न कोई दावा सम्मिलित नही है) एवं दिनांक 1.4.1989 के बाद से अनुसूचित जाति/जनजाति के सदस्यों के लिए निर्धारित आरक्षित कोटे का उल्लंघन करके की गयी नियुक्तियों से सम्बन्धित शिकायतें सम्मिलित नही है। 6. सम्मान तथा पारितोषित प्राप्त करने के मामलें। जॉच का कार्यः – जॉच का कार्य उत्यन्त गोपनीयय तरीके से कियाय जाता हैं। इसके लिए लोक आयंक्त के अन्तर्गत एक स्वतंत्र अन्वेषण इकाई की स्थापना की गयी हैं। शिकायतें कैसे करें: – 1. प्रत्येक परिवाद निर्धरित प्रपत्र (फार्म) में पंजीकृत डाक द्वारा अथवा स्वयं लोक आयुक्त के सचिव के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रत्येक परिवाद निर्धारित प्रपत्र में भरकर तीन प्रतियों में प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है। प्रपत्र की प्रतियां सादे कागज पर नकल की जा सकती हैं। 2. प्रत्येक परिवाद के साथ नोटरी द्धारा सत्यापित 5 रू. के स्टाम्प पेपर पर एक शपथ पत्र जो कि माननीय लोक आयुक्त जी को सम्बोधित होना चाहिये, तथा सादे कागज पर उनकी दो अतिरिक्त प्रतियां बनाकर संलग्न होना चाहियें। 3. प्रत्येक परिवाद जहॉ तक सम्भव हो टंकित होना चाहिये। टंकित न हो तो स्पष्ट रूप से हस्त लिखित होना चाहिये। केवल कार्बन कापी या फोटो कापी नही होनी चाहिये। 4. प्रत्येक परिवाद के साथ आरोपों के सम्बन्ध में स्पष्ट विवरण (दिनांक, समय, स्थान, सम्बन्धित व्यक्ति के नाम इत्यादि), अभिलेख तथा साक्ष्य के शपथय पत्र साफ साफ होना चाहिये। प्रत्येक शपथ पत्र में नोटरी का नाम व नोटरी के सामने शपथकर्ता की पहचान करने वाले का नाम भी स्पष्ट हो वरना यह शपथपत्र वैध रूप से सत्यापित नहीं माना जायेगा। शपथ पत्र केवल उन्ही तथ्यों के बारें में दिया जाना चाहिये जिनके बारे में शपथकर्ता को स्वयं ज्ञान हो यदि कोई तथ्य ऐसा है जिसके बारे में शपथकर्ता को किसी और से सूचना मिली हो तो उस तथ्य के बारे में उस अन्य व्यक्ति का शपथपत्र साथ में लगाना चाहिये। उसी प्रकार जहॉ सूचना किसी अभिलेख से प्राप्त होना प्रकट किया जाये तो उन अभिलेखों का विवरण भी शपथपत्र में देना आवश्यक है तथा उसमें यह भी स्पष्ट होना चाहिये कि उन अभिलेखों को शपथकर्ता ने स्वयं पढ़ा है अथवा देखा है। 5. अभिकथन रूपी परिवाद के लिए 1,000/–

य. प्रतिभूति की धनराशि से सम्बन्धित ट्रेजरी चालान संलग्न होना चाहिये इसे निर्धारित शीर्षक '' 8443–सिविल निक्षेप'' के अन्तर्गत भारतीय स्टेट बैंक अथवा कोषागार में जमा करना चाहिये।पर्याप्त कारणों के आधर पर लोक आयुक्त जमानत की ध नराशि में पूर्ण अथवा आंशिक छूट प्रदान कर सकते है। 6. शपथ में लोकसेवक के विरूद्ध आरोपों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिये। 7. पुलिस की अभिरक्षा कारागार या पागलखाने में किसी व्यक्ति द्वारा लोक आयुक्त को लिखित वत्र को बिना किसी व्यक्ति द्वारा लोक आयुक्त को लिखित पत्र को बिना किसी औपचारिकता की पूर्ति के ग्रहण किया जा सकता है परन्तु उस पर कार्यवाही तब की जायेगी जब उसकी औपचारिकता पूर्ण करा ली जायेगी। ''शिकायत'', ''अभिकथन'' सम्बन्धी निर्धारित प्रपत्र में लोक आयुक्त को तीन प्रतियों में भेजना होगा। प्रपत्र एवं अन्य जानकारी कार्यालय लोक आयुक्त, उत्तर प्रदेश, बी–1/124, विश्वास खण्ड–1, गोमती नगर, लखनऊ से प्राप्त की जा सकती है।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा अधिनियम, 1994

उत्तर प्रदेश सरकार ने 1994 में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गो की जातियों के लिए एक अधिसूचना के माध्यम से एक सूची जारी की।

दिनांक 23 मार्च, 1994 (अधिसूचना सं0 488/सत्रह–वि.1 (क) 6–1994 द्वारा जारी उत्तर प्रदेश लोक सेवा अधिनियम, 1994 की अनुसूची–1 में निर्दिष्ट पिछड़ी जातियों की सूची निम्न प्रकार है–

कोड नं. जाति का नाम

01. अहीर, यादव, ग्वाला, यदुवंशीय
02. अरख, अर्कवंशीय
03. काछी, काछी–कुशवाहा, शाक्य
04. कहार, कश्यप
05. केवट या मल्लाह, निषाद 06. किसान
07. कोइरी 08. कुम्हार, प्रजापति
09. कुर्मी, चनऊ, पटेल, पटनवार, कुर्मी–मल्ल, कुर्मी–सैंथवार
10. कम्बोज 11. कसगर
12. कुजंड़ा या राईन 13. गोसाई
14. गूजर
15. गड़ेरिया, पाल, बघेल
16. गद्दी, घोसी 17. गिरि
18. चिकवा (कस्साव), कुरैशी, चक
19. छीपी, छीपा 20. जोगी
21. झोजा 22. दफाली
23. तमोली, बरई, चौरसिया
24. तेली, सामानी, रोगनगर, साहू सैनियार, गंधी अराक
25. दर्जी, इदरीसी, काकुत्स्थ 26. धीबर
27. नक्काल
28. नट (जो अनुसूचित जातियों की श्रेणी में सम्मिलित न हों)
29. नायक, रौनियार, गंधी, अराक 30. फकीर
31. बंजारा, रंकी, मुकेरी, मुकेरानी
32. बढ़ई, सैफी, विश्वकर्मा, पांचाल, रमगढ़िया, जांगिड़ धीमान 33. बारी
34. बैरागी 35. बिन्द
36. बियार 37. भर, राजभर
38. भुर्जी या भड़भूजा, भूंज, कांदू कसौधन
39. भठियारा 40. माली, सैनी
41. मनिहार, कचेर, लखेरा 42. मुराव या मुराई
43. मोमिन (अंसार) 44. मिरासी
45. मुस्लिम कायस्थ
46. नद्दाफ (धुनिाया), मन्सूरी, कन्डेरे, कडेरे, करण (कर्ण) 47. मारछा
48. रंगरेज, रंगवा
49. लोध, लोधा, लोधी, लोट, लोधी राजपूत
50. लोहार, लोहार सैफी
51. लोनिया, नोनिया, गोले ठाकुर, लोनिया–चौहान
52. सोनार, सुनार, स्वर्णकार
53. स्वीपर (जो अनुसूचित जातियों की श्रेणी में सम्मिलित न हो), हलालखोर
54. हलवाई, मोदनवाल
55. हज्जाम, नाई, सलमानी, सविता, श्रीवास
56. राय, सिक्ख
57. सक्का भिश्ती, भिश्ती–अब्बासी
58. धोबी (जो अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जन जातियों की श्रेणी में सम्मिलित नहीं है)
59. कसेरा, ठठेरा, ताम्रकार 60. नानबाई
61. मीरशिकार
62. शेख सरवरी (पिराई), पीराही
63. मेंव, मेवासी 64. कोष्टा/कोष्टी
65. रोड़ 66. खुमरा, संगतराश, हंसीरी
67. मोची 68. खागी
69. तवंर सिंघाडिया 70. कुतवा
71. माहीगीर 72. दांगी
73. धाकड़ 74. गाडा
75. तंतवा 76. जोरिया
77. पटवा, पटहारा, पटेहरा, देववंशी
78. जाट 79. कलाल, कलवार, कलार।

हरिजन सहायक अनुभाग के शासनादेश संख्या–6744/26–77–77–17(21) 74 दिनांक 29 अगस्त, 1977 में उल्लिखित अनुसूचित जातियों की सूचीः– **अनुसूची–दो**

01. अगरिया 02. बधिक
03. बादी 04. बहेलिया
05. बैगा 06. बैसवार
07. बजनिया 08. बाजगी
09. बलहर 10. बलाई
11. बाल्मीकि 12. बंगाली
13. बनबानुष 14. बॉसफोर
15. बरवार 16. बसोड़
17. बावरिया 18. बेलदार
19. बेरिया 20. भंतू
21. भुईया 22. भुइयार
23. बोरिया
24. चमार, धूसिया, झूसिया, जाटव
25. बैरो 26. दबगर
27. धनगर 28. धानुक
29. धरकार 30. धोबी
31. डोम 32. डोमर
33. दुसाध 34. धरमी
35. घुसिया 36. गोड़
37. ग्वाल 38. हबूड़ा
39. हरी 40. हेला
41. कलाबाज 42. कंजर
43. कवड़िया 44. करवल
45. खरैता 46. खरवार (बनवांसी को छोड़कर)
47. खटीक 48. खोरोट
49. कोल 50. कोरी
51. कोरवा 52. लालबेगी
53. मझवार 54. मजहबी
55. मुसहर 56. नट
57. पंखा 58. परहिया
59. पासी, तरमाली 60. पतरी
61. रावत 62. सहरिया
63. सिनौरिया 64. सांसिया
65. शिल्पकार 66. तुरैहा

उत्तर प्रदेश के अनुसूचित जनजातियों की सूची –

67. थारु 68. बोक्सा
69. भोटिया 70. राजी
71. जौनसारी

&&&&&&

मिथकों को तोड़ती स्त्री

लेखक एक परिचय

डा0 कुसुम लता मिश्रा (सरल)

एम0ए0डी0फिल0(हिन्दी साहित्य)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

चिकित्सक एक्यूप्रेशर एवं एक्यूपंक्चर विधा, इलाहाबाद

निवास– 132 के0बी0, आई0टी0आई0 काम्पलेक्स, आई0टी0 आई0, नैनी, इलाहाबाद

'**आ**धुनिक युग' एवं इस 'सहस्त्राब्दी' का सबसे बड़ा आगाज़ है नारी उत्थान का बिगुल। इसमें कितनी स्वार्थ परता है और कितना सच है इसे भारतीय पुरूष बखुबी समझता है। यह झुनझुना अब स्त्री समाज को फुसलाने में असमर्थ है। इसकी भाषा का अच्छा ज्ञान हो गया है अब, वर्षो से सुनते सुनते उसे।

वैदिक काल, आदि काल, मध्यकाल, रीतिकाल, से तमाम स्वरूपों को जीती नारी, आधुनिक काल के चक्रवात में फंस गई। जीवन के विभिन्न ब्यूहो को देखते–परखते थक गई। वह कभी युद्ध से भागे पति को अपनी बलि देकर केश –राशि के साथ मुण्ड माल पहना विजय श्री दी, तो कभी युद्ध क्षेत्र में पति की सहयोगिनी बन रथ को अपनी अंगुली से सहारा दे धराशायी होने बचाया।

कभी सौंदर्य भोग्या बन कर राजाओं एवं कवियों की कर्ण–चक्षु विलास बनी, 'कुन्ती बन मॉ की पीड़ा का मर्मान्तक कष्ट झेली, तो कभी 'पंचपत्नी' बनकर भी निर्वस्त्र की गयी, उर्मिला सी एकांकी वर्षो तक सहती रही, कभी उसे देवी बनाया गया, तो कभी दानवी। कभी पत्थर बनाया गया तो कभी निर्वासन दिया गया। युग युगान्तर से चली आ रही अपने स्त्री सुलभ सिद्धातों, स्वयं के बनाये श्रृंखला में बधती रही दबती रही नारी।

भारतीय स्त्री में पुरुषों ने जिस देवित्व की स्थापना की थी, उसकी प्राण प्रतिष्ठा की थी, उसका कोई अंश खोये बिना वह इस युग की भी मौन–अधिष्ठात्री रहेगी। उसकी पूजा, अर्चना, उपेक्षा, अवहेलना स्वीकार करने वाली चिर मौन प्रतिमा रहेगी। किन्तु यह उस की भूल थी। वह पुरुषों का चढ़ावा, पुष्प, द्रव्य दीप की उपेक्षा कर सजीव नारी बन बैठी है। जिसे न पूजा अच्छी लगती है न अर्चना, न अपना यशोगान न अधिष्ठात्री गत रुप। उसके आन्तर–जगत में अपने वर्चस्व को बचाने का कोलाहल विखरा है।

सावधान पुरुषों आज तुम्हारी अतिवादिता, तुम्हारा छदम वेश, निरावरण हो चुका है। भोगी पुजारी की प्रतिभा क्षत–विक्षत हो चुकी है। आज नारी चेत गई है। उसकी छठी इन्द्रिय कार्यशील हो गई है। वह अपने द्वारा स्वयं बॉधी गई श्रृंखला को तोड़ने के लिये आतुर मुख हो उठी है।

वह 'गणपति' माता एवं शिव भार्या 'गौरा' अब न होकर, कराल कपालिनी बनी घूम रही है, उन पुरुषों –महिषो का वध करने जो हमारे सात्विक समाज को अपने बलिष्ठ भुजाओं से तहस–नहस कर रहे हैं। समस्त सामाजिक मर्यादा को श्री हीन कर नग्न ताण्डव कर रहे हैं। नारी को स्वयं की चिंता कभी नहीं रही। सनातन काल से वह विश्व भारती का उत्कर्ष निखारती रही है, और आज भी वह लपलपाती हुई जिहवा निकाले चामुण्डी बनी इस धराधाम को विनाश से बचाने हेतु पुनः प्रगट हो चुकी है। इस कलेवर के विन्यास से उसका स्थूल रुप भले ही असम्मानित होगा, उपेक्षित होगा किन्तु समष्टि और सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य में वह अप्रतिम होगा श्लाध्य होगा। और उसने अपने ऊपर जितनी आपदायें झेल चुकी है वह पहले ही क्या कम थी, जो वह पीछे हटेगी।

क्या कभी पत्नी द्वारा कोर्ट में तलाक की अर्जी दी जाती थी? क्या माता द्वारा अपने बच्चों को पति गृह में छोड़ पुनः विवाह कर चला जाना सम्भव था? नहीं वह बेचारी तो मृत्यु के बाद ही पतिगृह छोड़ना अपना

परम सौभाग्य समझती थी। सुयश मानती थी। आज उसके तेवर अनोखे ढंग से प्रस्तुत हो रहे हैं। उसकी कमजोरी उसकी शक्ति बन रही है, पति, बच्चे, प्रतिष्ठा जो उसके पांवो की बेड़ी थी, उसे काट कर वह आजाद हो रही है। पुरुष आज अवाक आश्चर्य से उसे देख रहा है।

नारी के अबला रुप का खण्डन तो इसी बात से हो रहा है कि स्वयं पत्नी द्वारा अपने पति परमेश्वर ईश्वर तुल्य पति के लिंग काटे जाते हैं (जैसा कि समाचार पत्रों के द्वारा ज्ञात हुआ) अपने प्रेमी को सहयोग देकर अपने सुहाग की हत्या करती है। क्या ऐसा पहले कभी हुआ? नहीं। तब सर्वत्र सुख था, शान्ति थी, आहलाद की पयस्वनी सर्वत्र प्रवाहित थीं भाई–चारे का सुन्दर संगम था। जब स्त्री को बराबर के अधिकार प्राप्त थे।

किन्तु आज 'स्वकेन्द्रित' होकर व्यक्ति अपनी पिपासा को ही महत्व दे रहा है, शान्ति का अभाव है। परिवार तमाम समस्या परक संभावनाओं को लेकर तनाव ग्रस्त हैं। इसका कारण है–स्त्री की अवहेलना, जहॉ गृह लक्ष्मी अप्रसन्न हो वहॉ कैसी शान्ति। ''यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' की वेदवाणी पाश्चात्यीकरण की अंधी दौड़ में विस्मृत हो गयी है। उस पति की अर्धांगिनी कैसी है? उसका अन्तर्विरोध क्या है? वह समझना ही नहीं चाहता। कन्या को वह बोझ समझता है। पुत्र की ललक उसे वह करने के लिए बाध्य कर दिया जिससे स्त्री की अस्मिता कॉप उठी। नारी पुरुष का हर शोषण तो आज तक हंसते रोते बर्दास्त करती चली आ रही थी, किन्तु आज अपने अस्तित्व को समाप्त करने वाले शोषण को वह कत्तई नहीं स्वीकार कर पा रही है।

आज गर्भ में ही उसकी जन्म लेने वाली कन्या को नष्ट कर, पुत्राकाक्षां जैसी जुगुप्सा उन्हें अपदस्थ कर रही है। नारी आज इस अचानक उपजी अंधड़ को उखाड़ने पर आमाद हो चुकी है। उन पुरुषो की जिनकी आत्मा मर चुकी है। उनके पंगु–विवेक को विचारों की बैसाखी एक दिन वह अवश्य देगीं। सेक्स का कैंसर उम्र की सीमा रेखा को ग्रस रहा है। रिश्तों की होली जलाई जा रही है। पुत्री, भगिनी, वधू, दासी का कोई पार्थक्य नहीं, अपने से तीन गुनी कम उम्र की कन्या से विवाह रचाना, धन–पशुओं का गौरव हो गया है। क्या सारे अधिकार पुरुष जाति को ही प्राप्त है? नहीं आज स्त्री अपने पूरे तेवर से प्रगट हुई है, वह भाइयों के बराबर पिता की सम्पत्ति में अधिकार का दावा रखती है, वह अपने प्यार को नाली गढ़ढे में न फेंककर अपने आंचल का उजाला बनाकर कुॅवारी मॉ कहलाने का सगौरव वरण कर रही है।

आज संवेदनाये शून्य पड़ती जा रही है। पुरुषों की ऐन्द्रिक इच्छायें प्रगाढ़ होती जा रही है। महिलाओं का उत्पीड़न अपने चरम पर है। हमारी 'मिडिया' इनकें साथ हुए अत्याचारों को दस फिसदी ही उजागर करती है। जयन्ती नटराजन का कहना है कि जब रक्षक ही भक्षक बन जायेगा तो कैसे चलेगा। 'इण्डिया टूडे'

11 वर्षीया बालिका हमीदा के साथ सामुहिक बलात्कार के आरोप में दिल्ली के सीमापूरी को दो लोगों के साथ पॉच पुलिस कर्मी भी गिरफ्तार किये गये। दक्षिण दिल्ली में चद्र आर्य विद्यामंदिर अनाथलय के एक कर्मचारी ने मानसिक रुप से वीमार 16 वर्षीया हरिजन बाला से वर्ष भर बलात्कार करता रहा। इसी

क्रम में नया गॉव में 'उषा धीमान' को राजनीतिक कारणों से संसद के समक्ष निर्वस्त्र घुमाया गया, महिलाओं के साथ छेड़खानी का सिलसिला तो अन्तहीन है। बिहार के 'आइ.ए.एस.' की पत्नी के साथ 'चम्पा विश्वास' जिसके साथ तमाम लोगों ने बलात्कार किया। और जब पकड़े गये तो उसके ऊपर लांक्षन लगाया कि पति की प्रमोशन हेतु वह स्वयं सर्वत्र अपने देह का सौदा करती थी। क्यों? क्योंकि नारी के चरित्र को उछालना उनके बायें हाथ का खेल है।

स्कूल बस, टाम में जाने वाली बच्चियों का विद्यालय जाना दूभर हो गया उनके साथ इस प्रकार के अभद्र व्यवहार किये जाते है कि, वे आत्म हत्या तक कर लेती हैं। कुछ बिचारी जवाब देने पर बदनाम होती, आवारा घोषित की जाती, उनके विद्यालय जाने पर प्रतिबन्ध लग जाता है। अपनी पोतियों की उम्र की कन्याओं से छेड़खानी करने वाले अभद्र व्यक्तियों की तो बात ही अलग है।

कौन बचाएगा नारी कों राम का युग आयेगा जब प्रस्तर बनी मौन अहिल्या तर जायेगी। नहीं अब रावण ही है जो सीता हरण करेगें। किंतु नही अब न मुनि शाप से अहिल्या पत्थर बनेगी, न सीता की अग्नि परीक्षा होगी, वह अपना बचाव स्वयं करने योग्य है।

कुछ भुक्त भोगी परिवारों का कहना है– कि महिला वर्ग के उद्धार हेतु कानून बने, तमाम अधिनियम बने, इनके पालन प्रतिपादन में , इनके हवाला में इन्हें आत्म सात् करने के आड़ में मानवता की बली दी जा रही है झूठी गवाहियों से हरण सीता अपवित्र हो रही है। ऐसा क्यों है? क्या समाज का पीड़ित वर्ग इसके तह में झाकेंगा? परिस्थितियॉ इतनी दुरुह क्यों हुई? क्या इसकी विवेचना की क्षमता है किसी में, यह समाज सिक्के के एक ही पहलू को देखता है। यदि दूसरे पहलू को भी देखता तो परिस्थितियॉ इतनी जटिल कभी नहीं होती।

आज पासा पलट गया है स्त्री को समाज पहले जैसा चाहता था ढाल लेता, चाहे चरित्र का अंकुश हो अथवा प्रेम का अंकुश, या गृह देवी का अंकुश लगाकर वह सदैव उसे द्रवीभूत करता रहा। किन्तु अब उसका मोह भंग हो चुका है। वह अपनी दृढ़ मेधा का प्रयोग करने पर अमादा हो चुकी है। समय के झंझावत को उसे वह चुनने का अधिकार दिया है जो वह चाहती है, क्या? वह पहले श्वसुरगृह में तमाम उलाहने सहकर भी नहीं रही, उसे जलाया गया, भूखा रखा गया, मातृपक्ष के लोगो को अपमानित किया गया वह मूक रही, पति द्वारा परित्यक्त कर दी जाती। यौन पीड़ा वह सह जाती। पति उसकी प्रतिवेशिनी के साथ रंगीन जीवन जीता। उसके ऊपर अवैध सम्बन्धों के बाण चलते रहे, वह विष–छूट मौन बनी पीटी रही। किन्तु कहीं किसी से कोई शिकायत नहीं की।

आज वह नागिन सी फुफकार उठी है क्यों? वह अपनी 'पीढ़ी' का अपने 'कोख' का समापन नहीं चाहती। इतना अपमान वह नहीं झेल सकती। अब वह समय आने में अधिक दिन शेष नही है जब कन्याओं को दहेज देकर पुरुष दुल्हन बनायेगा और कन्याये उन्हें वरण करना नहीं चाहेगी।

एक प्रतिष्ठित बृद्ध के शब्दों में –'मेरी बहू के झूठे आंसू मेरे पूरे परिवार को जेल भेज दिये मै समाज में मुंह दिखाने लायक नहीं रहा'। एक मॉ का कहना कि– 'चुड़ैल मेरे बेटे को दिल की बिमारी दे गयी।''। एक पति का कहना–'देखे कैसे उसके साथ रहती है मैं उसके मुंख पर तेजाब डाल दूगा। उसका जीना हराम कर दूंगा।' यह सहस्त्राब्दी "नारी युग सहस्त्राब्दी है।" अब वह होगा जिसे सोचने पर पुरुष समाज विवश होगा। उसका वर्चस्व विखंडित होगा।

'नारी श्रद्धामयी है। सरलता की मूर्ति हैं। किंतु इतना नहीं कि वह खण्ड हो विखरे। उसके कोर अपने ही पुत्रों के पैरों में चुभाकर उन्हें त्रास दे, नहीं। वह सम्पूर्ण समाज के ढांचे को स्वयं बदलेगी। वह कैकेयी की तरह बदनामी से नहीं डरती। वह उर्मिला की तरह एकान्त वास से भी नहीं घबराती। वह अपने परम्परागत आदिभौतिक रुप का हनन कर चण्डिका सी महिषासुर का वध अवश्य करेगी। उन दिगभ्रमित पुरुषों की आंखो को अवश्य खोलेगी जो उसे 'भोग–सामग्री' समझते है। अपनी दासता करने की प्रवृत्ति को पाथेय देते है।

पुरुष की 'शक्ति' और 'दुर्बलता' उस आदिम नारी से छिपी नहीं है जिसमें उसकी बर्बर पशुता को पराभूत कर। उसकी कोमल सुप्त संवेदी भावना को जगाकर, इस सृष्टि का अभिनव विकास किया। पवित्र–ग्रहो की नींव रखी। यह श्रेय नारी की बुद्धि को ही जाता है पुरुष की शक्ति को नहीं। अपनी सहज सूक्ष्म बुद्धि के कारण पुरुष से संघर्ष नहीं किया, बल्कि उसे सहारा दिया और उसका प्रति फलन हमारा आज का सभ्य समाज है।

आज फिर वह आदिम नारी बनकर उस बर्बर पुरुष की बुद्धि में लगे जंग को छुड़ाने के भगीरथ प्रयास में लगी है। उसके लिये कितनी ही आत्म बलि क्यों न करनी पड़े। वह प्रतिबद्ध हैं। पुनः घर देश समाज राष्ट्र का नव–निर्माण करने, आघ्यात्मिक नैतिक व्यावहारिक भावना का परचम खुले आकाश में निर्भय होकर उड़ने के लिए। और युग परिवर्तन आवश्यक हैं।

कवि भी कहता है—

युगों की चट्टानों पर सृष्टि,
डाल पद चिन्ह चली गम्भीर।
देव, गन्धर्व, असुर की पंक्ति,
अनुसरण करती उसे अधीर।।
नित्य समरसता का अधिकार,
उमड़ता कारण जलधि समान।
व्यथा से नीली लहरों बीच,
निखरते सुख मणि गण द्युति माला।।

कवि प्रसाद श्रद्धा सर्ग कामायनी से उद्धृत उपर्युक्त अंश।

2 2 2 2 2 2

''कोठे की पीड़ा''

ईश्वर शरण शुक्ल

व्यर्थ में श्रृगांर कॅरू क्यों,
कौन देखने वाला हैं।
सभी वासना के भूखें हैं,
कोई नहीं दिल वाला है।
मैं ही नही अकेली ऐसी,
बहुत बनी मधुशाला है।
एक तरफ जीवन की गति है,
दूसरे विष का प्याला है।
जगत का है व्यवहार, अतिशय निराला।
सभी मानते घर, मेरा 'मधुशाला'।
लगाये हुए क्रम, निरंतर युवा प्रौढ़।
आते कहॉ से, नहीं है, हवाला।
मैं मजबूरियों से नयन बंद रखती।
कि चख लो वदन को,
हदय कर लो वाला।
न पूछें कौन? तुम, किस जाति की हो
बनाते लपक पर क्षणिक प्रेम माला।
घुमाते नहीं सिंर चले जाते है सब
तलों से कुचलकर किसी मॉ की बाला।
देते हैं जो धन,
सकल लूटने का पालती हूँ
उसी से, जो बचता है लाला।
नही पूत की कामना होती मूझको
सदा चाहती एक परियों सी बाला'।

नारियां पिछड़ी क्यों

पत्रिका के प्रधान संपादक ने पिछले दिनों नारियां पिछड़ी क्यों? विषय पर समाज की विभिन्न बुद्धिजीवि महिलाओं से उनके विचार लिए। प्रस्तुत है उसके कुछ मुख्य अंश

श्रीमती मंदिरा घोष डायरेक्टर
सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, गर्ल्स वींग

प्रधान सम्पादक– आज आप इस पद पर आसीन है। क्या आपको पहले कभी अपने परिवार के व्यवहार से ये महसूस नहीं हुआ कि अगर आप लड़का होती तो कुछ और ज्यादा ऊँचाई पर पहुँचती।

श्रीमती घोषः– हॉ ऐसी फीलिंग मेरे सामने कई बार आयी। यद्यपि मेरे फादर इंग्लिश के प्रोफेसर थे, फिर भी वे ये नही चाहते कि मै इलाहाबाद के बाहर जाकर पढू। वैसे आजकल की लड़किया तो ज्यादा ही फ्री है। हॉ अगर लड़का होती तो ऐसा नही होता। कुछ सोसायटी और कुछ लड़की होना ही अपने आप में एक बंधन है।

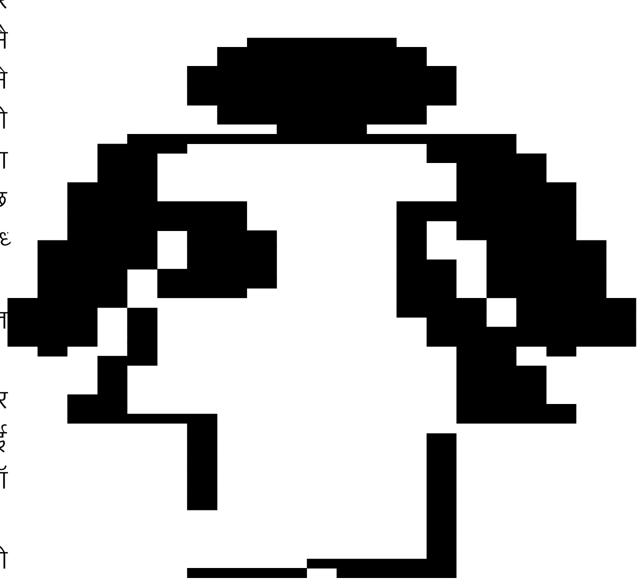

प्र0स0– क्या आप इस मत से सहमत है कि नारियॉ पिछड़ी है?

श्रीमती घोष– हॉ, मिडिल क्लॉस और लोवर क्लॉस की लड़किया पिछड़ी हुई है, लेकिन हाई–फेमिली की लड़कियॉ पिछड़ी नही रह गयी है।

प्र0स0– नारियॉ पिछड़ी क्यों है? श्रीमती घोष– हमारे समाज में लड़को को ज्यादा प्रिफेंस दिया जाता है। लड़का वंश परम्परा चलायेगा, यही धारणा नारियों को पिछड़ा बनाती है। पितृसत्तात्मक परिवार का होना भी अपने आप में पिछड़ेपन का कारण है। हमारा समाज पुत्री के पैदा होने पर लोवर डाउन पर लड़के के पैदा होने को ज्यादा प्रीफेन्स देता है। हमारे समाज का पुरूष प्रधान होना, कुछ फिजिकल सुरक्षा की आवश्यकता आदि ऐसे कारण है जो नारियों को पिछड़ा बनाए हुए है।

प्र0स0– क्या आप मानती है कि नारियॉ ही नारियों के पिछड़ेपन की जिम्मेदार है?

श्रीमती घोष– पूर्णरूप से तो नही, हॉ कुछ हद तक। उसका कारण आपसी ज्वेलस, सास का बहू के प्रति सौतेला व्यवहार मॉएं ये समझती है कि लड़का शादी के बाद बहू की बातें भी सुनने लगता है तो मदर्स को ज्वेलस् होती है और लड़का मदर व पत्नी के बीच पिसकर मारा जाता है।

प्र0स0– पुरूष और नारी की मित्रता कितनी और कहॉ तक सार्थक है?

श्रीमती घोष– पुरूष और नारी के बीच का रिश्ता सिर्फ पति–पत्नी, मॉ–बेटा, भाई–बहन के रूप में ही अधिकांशतः माना जाता है। जहॉ लड़के लड़कियों को पूर्ण छूट दे दी जाती है तो वहॉ तो इनकी मित्रता, मित्रता ही रहती है, मगर जहॉ पूर्ण छूट नही दी जाती है वहॉ ''क्यों रोका जाता रहा है'' ''उसमें क्या है'' आदि जानने के लिए उत्सुकता होती है। जो आगे चलकर गलत कदम की ओर भी मोल्ड करती है लेकिन अगर को–एजूकेशन कर दिया जाय तो यह पुरूष और नारी की मित्रता की बात या सीमा समाप्त हो जाएगी। पैरेन्ट्स को बच्चे के साथ स्त्री और पुरूष के संबंधों के लेकर विस्तृत चर्चा करनी होगी लेकिन यह फैक्ट है कि ''द टू मच एनीथिंग इज बैड''।

श्रीमती माया अग्रवाल
इंचार्ज ए.डी.सी., गर्ल्स विंग

नारियों के पिछड़ेपन के लिए हमारा सामाजिक ढॉचा ही दोषी है। हम नकल तो पाश्चात्य संस्कृति की करते हैं पर दिल वही पुरातन ही हैं हमारे समाज ने रहन–सहन तो बदल लिया, मबर सामाजिक ढॉचा यथावत बरकरार हैं कोई भी, पुरूष पुरूष से उत्पन्न नही हुआ है नारियों के पिछड़ेपन का दूसरा मुख्य कारण है। अगर कोई पत्नी अपने पति से आगे बढ़ जाती है तो पुरूष उसे पचा नही पाता। इसका सटीक उदाहरण अमिताभ व जया की फिल्म ''अभिमान'' में अक्षरशः देखने को मिलती है। स्त्रियॉ समाज के डर से, परिवार बर्बाद होने के डर से अपने पति की बात को मानने को मजबूर हो जाती है। अगर स्त्रियॉ बाहर कही आंफिस में कार्य करती है तो उनसे प्रश्न पूछा जाता है कि कब तक आओंगी? और अगर देरी होती है तो देर क्यों हूई, अभी तक कहॉ थी आदि प्रश्न खड़े हो जाते है। पुरूष चाहता है कि मेरी पत्नी मेरे आफिस जाने के बाद ऑफिस जाये और मरे आने पर घर पर मिलें वह चाहता है कि पत्नी घर आकर खानाी बनाए, कपड़ें धोए और घर के अन्य कार्य भी करें। पुरूष खुद ाचाहे जितनी स्त्रियों से बातें करें लेकिन उनकी पत्नी किसी अन्य पुरूष से थोड़ी सी भी बात कर ले तो बस पतिदेव जलभुन जाते है अगर लड़की या औरत घर से बाहर कही निकलती है तो उसके सिाथ एक पूँछ (पुरूष) लगा दिया जाता है अगर घर में कोई बड़ा व्यक्ति नहीं तो हमसे बहुत छोटा लड़का भी कहेगा– दीदी, मम्मी आप अकेले मत जाओं, मै भी चल रहा हूँ यानी पुरूष छुट्टा घूमें और स्त्रियों के पीछे........... नारियों के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए हमें सर्वप्रथम अपना सामाजिक ढॉचा को बदलना होगा। बिना अपने पुरातन समसामाजिक ढॉचे को बदले हम लोग स्त्रियों के पिछड़ेपन को दूर नही कर सकते। पुरूष और नारी की मित्रता सार्थक है तो लेकिन यह निर्भर करता है दोस्ती करने वाले के ऊपर कि वो किस सीमा तक लेते है।

रेनू विज
शिक्षिका एम. एल. कानवेन्ट स्कूल, नैनी

उपरोक्त विषय एक लम्बे समय से विवाद का विषय रहा है किन्तु आज तक इसका मूल कारण विश्लेषित नही हो सका है। मेरे विचार से नारी का पिछड़ापन सर्वप्रथम शिक्षा के अभाव के कारण है। आज भी माता पिता अधिकांशतः लड़की को पढ़ाने के हक मे ंनही होते प्रथम तो ं इसका कारण है कि वह यह नही समझते कि लड़की भी लड़के के बराबर कार्य कर सकती है द्वितीय यह कि लड़की की शिक्षा पर पैसा व्यर्थ ही खर्च करना है क्योंकि इसका फायदा तो दूसरे लोग उठायेंगे। परिणाम यही निकलता है कि नारी को अपने अधिकार, कार्यक्षेत्र का ज्ञान ही नही होता। वह सिर्फ घर की रसोई को कार्यक्षेत्र मानकर दीन–दुनिया को विस्मृत कर देती है। नारी को स्वयं का अस्तित्व न

समझना भी एक मूल कारण हैं बचपन से ही लड़की के मन में शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर होने की भावना भर दी जाती है कि लड़की को पुरूष जाति की अधीनता स्वीकार करनी ही है। यह सबसे बड़ा सामाजिक कारण पुरूषों का अहं है जो मिसाल के लिए यदि किसी नौकरी–पेशा स्त्री का ओहदा पति से ऊँचा है तो पति हर प्रकार से पत्नी को नीचा दिखाने के लिए प्रयत्नशील रहता है हमारा समाज तक भी नारी को दोयम दर्जे का नागरिक मानता है। घर, परिवार में पुरूष का ही शासन चलता हैं स्त्री चाहे कितनी ही समझदार अथवा शिक्षित हो उसका कोई महत्व नही होता। क्योकि पुरूष इस विधान को आत्मसात ही नही कर पाता कि स्त्री का भी एक अस्तित्व है उसे तो सामाजिक रूढ़ियों ही ज्यादा प्रिय होती है जिनके अनुसार स्त्री पैर की जूती या केवल भोग्या होती है कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने भी अपने उद्गार कुछ इस प्रकार प्रकट किये है– अविश्वास है। अविश्वास ही, नारी के प्रति नर का, नर के तो सौ दोष क्षमा है, स्वामी है वह घर का। नारी के पिछड़ेपन के लिए कुछ परिस्थितियॉ भी दोषी है, जैसे मध्यकाल में मुसलमान आक्रमण के साथ ही साथ स्त्री के अपहरण की घटनायें भी आम हो गयी थी। इसलिए स्त्री को घर की चहारदीवारी में बंद कर दिया जाता था। किन्तु आज परिस्थितियॉ बदल गयी हैं हम चॉद पर पहुँच गये है। तो स्त्री के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण और स्वयं स्त्री को भी समय के अनुसार बदलना होगा और परिवर्तन को आत्मसात करना होगा क्योंकि परिवर्तन ही जीवन है।

जागृति नगरिया

कल्चरल सेक्रेटरी, जी.पी.एफ. सोसायटी

आज वर्तमान समय में नारी की प्रगति जितनी तीव्र गति से हुई है शायद उतनी ही तीव्र गति से वह पिछड़ी भी है। यह पिछड़ापन उसकी शिक्षा रूचि अथवा कार्य शैली में नही आया है; पिछड़ी तो वह अपने आदर्शो, कर्तव्यो, संस्कृति व विचारों से है। आज का नारी का मुकाम प्रशंसनीय है; लेकिन वह जिस धरातल पर खड़ी है वह नीचे से उतनी ही खोखली है, जहॉ से नारी अपना पतन स्वंय ही कर रही है। यह सुनकर कितना गर्व महसूस होता है कि आज नारी पुरूषो के साथ कदम से कदम मिलाकर हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है पर क्या यह सुनकर हमारा मस्तक लज्जा से नही झुक जाता, जब यही प्रगतिशील नारी एक विदेशी कंपनी के प्रचार के लिए अर्धवस्त्रो में अपना दैहिक प्रर्दशन करती है? क्या यही है उसकी प्रगति? आज विश्व सुदरी जैसी खिताबो की प्रतियोगिता मे भारत की नारी का जब चयन होता है तब हमें बड़ा गर्व का अनुभव होता है, पर उस खिताब तक पहुँचने के लिए होने वाली प्रक्रियाएं क्या वाकई उसकी सुन्दरता को सम्मान देना है या उसका खुला प्रदर्शन करके उसका अपमान करना है? यदि राह में किसी स्त्री को छेड़ते हुए कोई पुरूष उसका दुपट्टा खीच दे या उसे पर्श कर दे तो यह उस स्त्री के लिए बड़े अपमान की बात होती है, फिर किस विकासशील देश के बड़े स्टेज पर अपने वस्त्रो को स्वंय ही उतारकर अपना दैहिक प्रदर्शन करना कौन से गर्व व सम्मान की बात है? वैसे भी क्या नारी का वाह्य सौन्दर्य ही उसके व्यक्तित्व की पहचान है?

यदि दूसरा पहलू देखें तो यही नारी आज प्रगतिशील समाज में इतना आगे वढ़ गयी है कि उससे उसका घर,परिवार बहुत पीछे छूट गया है। सुबह से काम पर निकली एक महिला शाम को देर से घर वापस लौटती है। अपनी थकान व दिनभर की झुंझलाहट अप्रत्यक्ष रूप से वह अपने परिवार पर ही निकालती है। ऐसे माहौल में और अपनी व्यस्त दिनचर्या में वह अपने बच्चों को क्या शिक्षा दे पाती है? क्या संस्कृति व आचरण उनमें विकसित करती है? शायद नाम मा को ही अपने विचारो से वह प्राचीन समय में जितनी पिछड़ी थी, आज उतनी ही आगे ह,"पर शायद यही विकास उसके लिये पिछड़ेपन का एक कारण बना। आज वह हर पुरूष से हर किसी मुद्दे पर बहुत ही खुलकर वार्तालाप कर सकती है। पर इसका ही परिणाम है कि आज पुरूष उस पर मनचाहे भद्दे व अभद्र टिप्पणियॉ करता है, सरे आम उसे बीच चौराहे पर खड़ा करके उसके खिलाफ ऐसे आक्षेप लगाता है कि मजबूरन नारी को अपने पक्ष में किसी अनचाहे विषय पर बोलना ही पड़ता है। अन्ततः समाज में नारी को समुचित सम्मान तभी मिल सकेगा जव वह स्वंय को पुरूषो पर आश्रित न समझें। अपनी कला व योग्यता का प्रदर्शन उचित व मर्यादित ढंग से करे।

आज नारी के पिछड़ेपन का कोई और नही नारी स्वंय ही कारण है? और इसे वह स्वंय ही दूर करेगी। यदि अपनी सोच को वह समुचित स्थान पर रखे और साथ ही चयन के मामले मे वह स्वतंत्र के साथ–साथ मर्यादित भी हो तभी उसका सार्थक परिणाम होगा। और तब होगी नारी, एक पूर्ण स्वतंत्र, विकसित और उन्नतशील नारी।

हंसगुल्ले

1.पत्नी ने बताया–"डॉक्टर साहब, मेरे पति बीच–बीच में बहरे हो जाते है।"
डॉक्टर बोले–"गलती आपकी है, आप उनसे नयी साड़ी और गहनों की फरमाइश क्यों करती है?

2. मालकिन–दूधवाले तुम्हारी गाय तो दिन में 3 किलों दूध देती है। तुम 10 किलों कहां से बेच लेते हो?
दूधवाला–सब गंगा माई की कृपा है।

3. एक जापानी बम्बई की एक टैक्सी में कहीं जा रहा था। वह टैक्सी ड्राईवर से कहा–"तुम्हारी टैक्सी बहुत धीमे चल रही है, जापानी टैक्सी तेज चलती है।" तुम्हारी बसे धीमी चलती है और जापानी बसेस बहुत तेज।"

यात्रा के अंत में किराया आया 120.00 रुपयें। "क्या" जापानी ने कहा–"क्या तुम्हारे टैक्सी का मीटर तो बहुत तेज चल रहा है।"
टैक्सी ड्राइवर–"हॉ सर, मीटर जापानी है।"

4. एक आदमी जिसका नाम एलन था ने 3 बजे भोर में अपने पड़ोसी का दरवाजा खटखटाया–"तुम्हारा कुत्ता भोंक रहा है। मैं सो नही सका"
दूसरी रात्रि पड़ोसी ने एलन का दरवाजा 3 बजे भोर में खटखाया–"मैं कुत्ता नही रखता हूँ"

5. एक भिखारी सड़क पर एक आदमी के पास रुका और पूछा–"दो वर्ष पूर्व आप मुझे 100.00 रुपये एक बार में देते थे, पिछले वर्ष कम करके 50.00 रुपये और इस वर्ष केवल 1.00 रुपये क्यों?
"अच्छा", आदमी ने कहा, "दो वर्ष पूर्व मैं कुआरा था, पिछले वर्ष मैं शादी शुदा हो गया और इस वर्ष मैं एक बच्चा भी रखता हूँ।
"क्या" भिखारी चिल्लाया–"तुमने मेरे पैसे को परिवार बढ़ाने में खर्च किया।"

6. बेटा – मां, हमारे नये पड़ोसी बहुत कंजूस है।
मां– कैसे?
बेटा–अपने बेटे के गलें में फंसी अठन्नी को निकालने के लिए उन्होंने दो–दो डॉक्टरों को बुला लिया।

7. पत्नी– एक बात बताओं, आज सुबह से ही तुम्हें जली–कटी सुना रही हूं पर तुमने चूं तक नहीं की। तबीयत तो ठीक है न?

कम्प्यूटर का फैलता जॉल

जरा सोचिए उस बिल्डिग के बारें में जो आपकी सांसो की गरमी–तपन जानेगा, कदमों की आहट पहचानेगा, आवाज सुन बिना घंटी बजाए दरवाजा खोलेगो। इतना ही नहीं, पानी का गिलास खुद चल कर आएगा, रात होगी तो बिस्तर तक आप नही,आप तक बिस्तर पहुंचेगा। कल की इमारतों में यह कल्पना साकार होंगी। यह सब कंप्यूटर चालित और रोबोट द्वारा सम्पन्न होगा। कंप्यूटर से घर की हर गतिविधियां छोड़ दी जाएंगी ।आप से बाहर हुए नही कि सभी बत्तिया स्वतः बुझ जाएगी। इसी तरह आज घर में आयेंगे तो घर रोशन हो जाएगा। गर्मी है तो पंखे, कूलर, एअरकंडीशनर चल जाएंगे। जाड़े है तो हीटर,हीट कन्वेक्टर स्वतः चल जाएंगे। अमरीका और ब्रिटेन में तो इमारतों को और भी रोचक रूप दिया जा रहा है। यहां कल की हमारतें जो आपका घर,दुकान होगी आपकी आवाज सुन कर खुलेगी। 'खुल जा सिम सिम' जैसे कोड आपकी आवाज में निकले नही कि दरवाजा बिना किसी के खोले चररर करके खुल जाएगा। और फिर अंदर पहुंच कर आपके से बंद भी हो जाएगा। इस तरह से न तो ताले का झंझट होगा न कॉ बैल की जरूरत। चोरों का डर भी कम हो जाएगा। इन हमारतों में अन्य खतरो की सूचना के लिए अलग–अलग तरह के साइरन लगाए गए हैं। मसलन आग लगने, धुंआ या गैस फैलने,सेंध लगाते चोर वगैरह की सूचना खुद हमारत ही देगी। इन इमारतों को इंटेलिजेंट बिल्डिंग यानी 'बुद्धिमान इमारतें' नाम दिया गया है।

अमरीका में उपजा यह नाम आज भारत सहित कई देशों में इमारतों को समझाकर बना रहा है। ब्रिटेन की कुछ निर्माण कंपनियॉ तो और भी आगे निकल गई हैं। उन्होंने इमारत की सुरक्षा के लिए स्वचालित नियंत्रण कक्ष भी स्थापित कर लिए हैं। मकान में आई सीलन,दरक या अन्य इमारतों के बिगाड़ को कंप्यूटर चालित कक्ष खुद–व–खुद सुधार देंगे। इसका राचक पहलू यह है कि कंक्रीट की दीवारों में पहले से ही कुछ ऐसे रसायन भर दिए जाएंगे जो बिना कहे मरम्मत का काम कर देंगे। मसलन खारे पानी से दीवार को बचाने के लिए कैल्शियम नाइट्रेट का प्रयोग किया जाएगा। जहां दीवार में दरार का सीलन आई नही कि रसायन उसे स्वतः ही ठीक कर देंगे। तकनीकी का कमाल कल की इमारतों में पूरे जोर–शोर से होगा। उपरी मंजिल में पहुंचने के लिए अपने आप चलती सीढ़ियां होंगी। छतों,दीवारों और फर्श पर रंगों की बहुरंगी छटा नजर आएगी। कंप्यूटर से जैसी फीडिंग कर दी जाएगी जो अपनें आप रंगों का सामंजस्य बनाकर उन्हें बदलते मौसम के अनुरूप बदल देंगे। इसके बाद भी अगर आप अपनी पसंद को बदलाव चाहेंगे। तो भी संभव होगा। अमरीका में तो प्रयोग के पर अभी से ऐसी इमारतें निर्मित हो चुकी है जो गिरगिट की तरह रंग बदलती है। असम में इन इमारतों पर ठीक फोटोक्रोम के गिलास वाले चश्मों की तरह कांच का प्रयोग किया गया है यह कांच मौसम के अनुरूप रंग पैदा करेंगे दिन की धूप में इमारत बाहर से गहरे रंग की नजर आयेगी। मगर ज्यों–ज्यों दिन ढलता जाएगा, इनका रंग हल्का पड़ता जाएगा। रात होते ही ये इमारतें पारदर्शी हो जाएंगी। दूसरी ओर ऐसे संवदी कांच भी लगाए जा रहे है जिनमें एक प्रकार के प्रोटीन और एंजाइम भरे जाते है जो हवा से मुलाकात करते ही रंग बदल लेते है। असल में ये प्रोटीन और एंजाइम प्रदूषणकारी तत्वों से क्रिया करते है और अपना रंग बदल लेते है। इस तरह प्रदूषण से बचाव और खूबसूरती दोनों ही आ जाएगी। इन इमारतों में पानी के लिए नल होंगे मगर खोलने के लिए टोंटी घुमाने की जरूरत न होगी। मात्र स्पर्श से ये नल चलेंगे। नीदरलैंड की एक कंपनी ने ऐसा नल तैयार भी कर लिया है जिसके दाई ओर हाथ हिलाने पर ठण्डा पानी मिलता है तो बाई ओर हाथ हिलाने में गर्म पानी मिलता है और अगर हल्का गर्म पानी चाहिए तो दोनों ओर एक साथ हाथ हिला कर हट जाइए। असल में यह टोंटी एक संवेदनशील इलैक्ट्रानिक सर्किट द्वारा नियंत्रित हैं संवदी क्षेत्र के चार से छह से0मी0 के दायरे में हाथ हिलाने से सर्किट में संकेत उत्पन्न होता है जो कि टोंटी में चले चुबकीय बल्लो को प्रेरित करता है।

जो कि टोंटी में लगे चुंबकीय बलों को प्रेरित

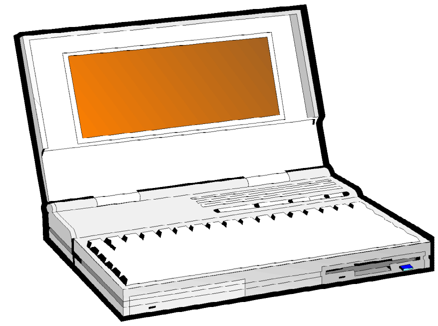

करतो है। बल्बों पर लगी थर्मोस्टेट प्रणाली से पानी के तापमान तो नियंत्रित करता है। इसी संवदी प्रणाली के आधार बनाते हुए घरों के संचालन में प्रयुक्त कंप्यूटरों को प्रयोग भी बोर्ड के स्थान पर एक परदा यानी स्क्रीन लगी हुई है। इस पर सभी शब्द तथा चिन्ह बने होते हैं। शब्दों और चिन्हों का संबंध अंदर के विद्युत संवेदी भागों से रहता है। करना सिर्फ इतना है कि जो शब्द या चिन्ह प्रयोग किया जाना है उसे कुछ सैकिंड घूर भर लीजिए। मसलन पंखा नं0 3 चलाना है तो स्क्रीन पर लिखे हूए भाग को घूरिए तीन नंबर पर पंखा चल जाएगा । इसमगें दो राय नही कि ये इमारतें आपको भरपूर आराम देगी पर सोचिए क्या आप आलसी नही हो जाएंगे। हमारे देश में भी इस तरह की हमारतें तैयार होने लगी है। हालांकि ये इमारतें पूरी तरह से बुद्धिमानी की श्रेणी में नही आती है मगर काफी हद तक इन्हें बुद्धिमानी कहा जा सकता है। दिल्ली में इनमें से प्रमुख है अमेरिकिन एक्सप्रैस, हैबिटेट सेंटर वर्ल्ड बैरक तो वही बम्बई में सी एम सी हाउस देश की पहली बुद्धिमान इमारत है। असल में जहां इमारतों में अभी तक बताए गए गुण उन्हें बुद्धिमान बनाते है तो वही उनमें आधुनिक तकनीकों का प्रयोग भी आवश्यक है। जब जैसे इंटरनेट सुविधा, ई–मेल वीडियों सम्मेलन, वर्क स्टेशन, फोलो भी, आटो कॉल बैक, स्मोक कडटेक्टर आदि भारत में इस दिशा में तेजी से कार्य हो रहा है और ज्यादा से ज्यादा बुद्धिमान इमारतें बनाई जा रही है।

कुछ खास बातें

☹ *कम्प्यूटर सीखने के लिए यह जरुरी नहीं कि संस्थान मान्यता प्राप्त हो। लेकिन यह जरुरी है कि उक्त संस्थान में बेहतर ज्ञान दिया जाता हो। बहुत–सी कम्पनियॉ ऐसी है जो नौकरी देने के पहले देखती है आपको कामकाज का व्यवहारिक ज्ञान कितना है। उनके लिए सर्टीफिकेट कोई*

मायनें नहीं रखता।

☹अगर आप इंटरनेट कनेक्शन के बाद कम्प्यूटर पर आमने–सामने बात करना चाहते है तो आपको दोनों कम्प्यूटरों में बेब कैमरे लगाने होंगे। इसके बाद इंटरनेट जूड़कर TVEO.COK की मदद से आप यह काम कर सकते है।

☹ अगर आप चाहते है कि आपको कम्प्यूटर में कम से कम दस हजार रुपये की नौकरी मिल सके तो आपको बेब डवलपमेंट का कोर्स (जॉवा, ए.एस.पी और बीबी स्क्रिप्ट जैसे विषयों में महारत हासिल करनी होगी।

☹अगर आप कम्प्यूटर में कम से कम पॉच हजार की नौकरी चाहते है तो सी++ में महारत हासिल कीजिए।

☹ मॉडम शब्द की उत्पत्ति मॉड्यूलेशन नामक शब्द से हुई है। मॉड्यूलेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें आप डेटा को अत्यंत उच्च आवृत्ति के संकेतो या तरंगों से एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेज सकते है।

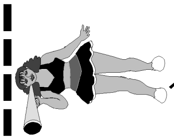

जय माता दी
RAJENDRA
जय माता दी

Teep Frankie

आपके शहर में पहली बार नया तथा मजेदार बाम्बे फ्रेंकी,
पनीर फ्रेंकी खाइये भरपूर स्वाद का आनन्द लीजिए।

नोट : किसी भी पार्टी में फ्रेंकी का ताजा आईटम बुक होता है।

Cont : *राजेन्द्र फास्ट फूट,* **ESNO MAN** *रेस्टोरेन्ट*

आफिस : 72, जमुना बैंक रोड, रेलवे टिकट घर के पास कीटगंज

घर का पता : 1B/6 Cotton Mills Tiraha, Naini, Allahabad

दिल में है ग़म

✎''मुसर्रत जहॉ'' मश्शो

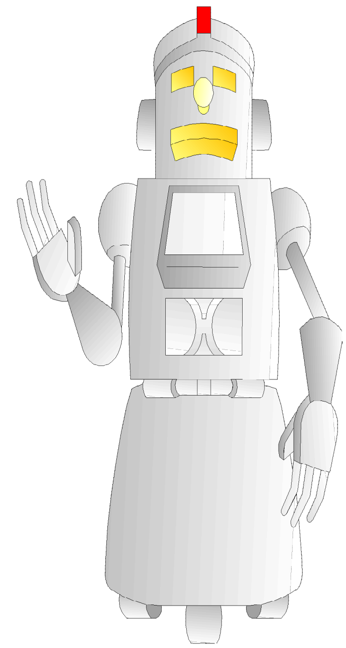

दिल में है ग़म ताजा ऑखों में नमी सी रहती है।
तुम्हे देखती हूँ तो सुकून सा आ जाता है।
तेरी यादों ने मूझे इस कदर परेशान किया
तुझे याद कर–कर के रात भर मै सो न सका।
मैने तलाशा जिंदगी को हर एक मोड़ पर
सिवाय मौत के कुछ भी न मिला मुझ को
मुझे अपनी यादों के साथ से लिपटे रहने दो
अपने ख्वाबो को दोस्त समझ कर ही सही
सागर की गहरी खाई में दिल डूब मरेगा
तूम नय बचा सके तो हम कैसे जियेगें।
जुर्म की इतनी बड़ी सजा दी
तुमने लाख गम जदा हो गये हम तेरी बातो से।
इतना भी गम न दो तुम कि हम जिन्दा मर जाये।
तेरे पास आने से पहले हम तुमसे दूर न चले जायें
गुस्सा न हो मेरी बातो से तुम समझ जाओ
मेरे जजबातों को तुम मुझको न यूँ तड़पाओं।

ये हो नहीं सकता

✂अनिता चौहान

हमी को है कत्ल करते, हमी को कातिल बताते
न कुछ दे सके ये हमको, एहसान फिर भी जताते
बॉधे कोई हमें, वो डोर कहॉ है, किसी
हॅसीना में इतना जोर कहॉ हैं मेरी
कोई दुल्हन बने...। नहीं। ये हो नहीं सकता
उम्र के इस पड़ाव पर, आज मेरी
तन्हाइयों को मिटा दें। क्या अब कोई
मेरी जिंदगी में आयेगी, क्या आज मेरे
इन अधपक्के बालों पर अपनी काली जुल्फे
विखरायेगी, नहीं, ये हों नहीं सकता।

फोटो डालना
किसी माडल की

कुरआन से

1. पत्नियां अपने पतियों के लिए और पति अपनी पत्नियों के लिए लिबास है। (कुरआन–2:187)
2. महिलाओं के पुरुषों पर वैसे ही अधिकार है जैसे कि पुरुषों के महिलाओं पर है, और पुरुषों को आंशिक दर्जा प्राप्त है। (कुरआन–2–228)

इस्लाम ने स्त्रियों को जो सम्मान दिया है वह किसी अन्य समाज में देखने को नहीं मिलता। कुरआन ने इतना ही नहीं किया कि महिलओं को पुरुषों के समान अधिकार दिये और दोनों के बीच भेद भाव को मिटाया बल्कि विस्तार से स्त्रितयों को मॉ बहिन बेटी और पत्नी की हैसियल से समाज में प्रतिष्ठा प्रदान की।

प्यारे बच्चों– आओ! कल्पना के संसार मे तुम्हारा स्वागत है। हमें पता है तुम लोगो को कहानियॉ सुनना बहुत पसंद हैं। पर क्या आप सब केवल कहानियॉ सुनते ही है या उन्हें याद कर उनसे कुछ सीखते भी हैं। हम आप को कुछ ऐसी ही कहानियॉ सुनायेंगें जिनसे आपका मनोरंजन तो होगा ही साथ ही कुछ नया सीखने को भी मिलेगा। उस सीख को आप अपने जीवन में उतारिएगा। आपके व्यक्तित्व का विकास और भी बेहतर ढंग से होगा। साथ ही ये सीख आपको अपने जीवन के दैनिक व्यवहार में भी मदद देंगी। देखा! बच्चो। जो बच्चा माता–पिता गुरूजनों, बड़ो तथा मित्रो की बात का ध्यान नहीं रखता वह भी मुसीबत में फॅस जाता है। पर आप सब ऐसा मत करिएगा अच्छा! फिर मिलेगें एक नई कहानी के साथ अगले अंक मे। तुम्हारी अपनी दीदी–

ज्योति नगरिया

कछुआ और बगुलें

किसी समय एक जंगल में एक कछुआ तथा दो बगुले एक झील के किनारे रहते थे वे आपस में अच्छे मित्र थे। तीनों मिलकर झील में से मछलियॉ पकड़कर खाते, ठण्डा पानी पीते और सदा प्रसन्न रहते थे। परन्तु उनके ये खुशी के दिन अधिक समय तक न रहे। एक वर्ष बिल्कुल वर्षा नही हुई। पकड़कर खातें, ठण्डा पानी पीते और सदा प्रसन्न रहते थे। परन्तु उनके ये खुशी के दिन अधिक समय तक न रहे। एक वर्ष बिल्कुल वर्षा नही हुई झील का पानी सूखने लगा। सभी मछलियॉ मरने लगी तथा पानी में उगने वाले पौधे सूखने लगे। पहले अपने मित्र बगुले से कहा, अब हमें जंगल को छोड़कर कही और चले जाना चाहिये। हॉ, दूसरे बगुले ने कहा, हमें अवश्य ही किसी दूसरे स्थान पर चले जाना चाहिये 'मुझे भी अपने साथ ले चलो, कछुए ने चिल्लाकर कहा। 'तुम्हे भी ले चलें! दोनों बगुलों ने कहा, 'परन्तु कैसे? तुम उड़ तो सकते नही। 'तुम मुझे अपने साथ उड़ाकर तो ले ही जो सकते हो, कछुए ने कहा वह इस बात से खुश था कि वह भी हवा में उड़ान भरेगा। 'ना बाबा ना!' बगुलों ने कहा, 'तुम्हारा शरीर बहुत ही भारी है।' तीनों बैठकर सोचने लगे कि क्या किया जाये। अचानक कछुआ खुशी से उछल पड़ा। 'समझ गया!' वह चिल्लाया। 'मैं समझ गया कि हमें क्या करना होगा। जाओ और एक लम्बी तथ मजबूत छड़ी लेकर आओं। तुम दोंनों सिरों को अपनी–अपनी चोंच में पकड़ लेना और मैं बीच में से उसे अपने दॉतो से पकड़ लूॅंगा अैर फिर–और फिर हम उड़ चलेंगे।' दानों बगुले चिल्लाये, 'सच मित्र, तुम बहुत ही चतुर हो! क्या सुन्दर युक्ति सोची है!' एक बगुले ने उड़ान भरी और एक लम्बी तथा मजबूत छड़ी लेकर लौट आया।' आओ, अब उड़ान भरने की तैयारी करें, पहले बगुले ने कहा। 'परन्तु तुम रास्तें में बोलना नही। तुम बहुत कुछ देखोगे और सुनोगें, दूसरे बगुले ने कहा, परन्तु तुम अपना मुॅह नही खोलोगे।' 'विश्वास रखो, मैं नही बोलूॅगा, कछुए ने कहा। मैं जानता हूॅ कि यदि मैं बोलने के लिए मुॅह खोलता हूॅ, तो मैं अवश्य ही गिरकर मर जाऊॅगा'। इस प्रकार दोनों बगुलों ने छड़ी को दोनों ओर से अपनी चोंच में पकड़ लिया और कछुए ने उसे बीच से अपने मजबूत दॉतों से पकड़ लिया और वे अड़ चले। कितना आवश्चर्यजनक दृश्य था जब वे आकाश में उड़ चले– दो बगले और एक कछुआ एक छड़ी के सहारे उड़ रहे थे। पहले तो कछुए को बहुत डर लगा और उसने डर के मारे ऑखें बन्द कर ली। परन्तु जब उसने ऑखें खोलीं– एक बहुत ही सुन्दर दृश्य उसकी ऑखों के सामने था। ऐसा दृश्य जो उसने पहले कभी नही देखा था–पहाड़,घाटियॉ, नदियॉ बहुत दूर–दूर तक फैले हुए थे। वह कुछ कहने ही वाला था कि उसे अपपे मित्रों की सलाह याद आ गयी और उसने मुॅह नही खोला। अब वे एक ऐसे खेत के ऊपर से गुजर रहे थे जिसमें किसान फसल काट रहे थे। उनमें से एक किसान चिल्लाया, 'अरे! उन बगुलों को देखो। देखो, वे किस तरह अपने मित्र को लिए जा रहे हैं। क्या युक्ति है!'

कछुए ने सोचा यह तो ठीक नही है, यह युक्ति तो उसकी सुझाई हुई है। उसकी चतुराई की प्रशंसा होनी चाहिए। वह अपने मित्रों की कही बात भूल गया और चिल्लाया, 'भाइयों यह युक्ति तो मेरी अपनी है।' परन्तु जैसी ही उसने यह कहने के लिए मुॅह खोला वह नीचे गिरता ही चला गया। वह कहॉ गिरा कोई नही जानता। दुखी बगुलों के मुॅह से केवल यही शब्द निकले, 'काश! बेचारा हमारी कही बात को ध्यान रखता'।

(जो मित्रों की सलाह को नही मानता उसका अन्त ऐसे ही होता हैं।)

ग़ज़ल

कमल स्नेहिल

ढलता है सूरज ढलता ही रहेगा
आशाओं का चिराग तो जलता ही रहेगा
नाकामियो की फेहरिश्त है बड़ी लम्बी
नाकामियों का सिलसिला तो चलता ही रहेगा
आज फिर एक मंत्री पुत्र डॉक्टर बना है
कलुआ का लड़का तो हाथ मलता ही रहेगा
आज फिर वो न आया करके मिलने का वादा
उम्मीदों का गुलशन तो खिलता ही रहेगा
उम्मीदों का गुलशन भी चाहे खिले न खिले
'कमल' फिर भी कीचड़ में खिलता ही रहेगा।

UNICS COMPUTER ACADEMY

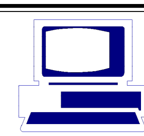

3/A, Vinova Nagar, ADA Road, Naini, Allahabad
Learn in - Tally, FoxPro, Windows, Msoffice, Java, Oracle, Autocad
Note: Software Development, Hardware & Job Work.

नहीं करुगां शादी–६

✍ ''राही अलबेला''

हुस्न वालों से रवि ही बचाये
कोई बेमौत मारा न जाए।

हाय राम, कुड़ियों का है जमाना, हार राम, कुड़ियों का है जमाना, वैज्ञानिक युग की कालवेल ने किसी के आने को सूचित किया। मैनें दरवाजा खोला। दरवाजें पर आचार्यजी खड़े थें। मैने कहा –''अरें आचार्यजी, आप आइए– आइए। अहो भाग्य जो आप पधारे हमारे द्वारे, साथ में ऐ नया लम्हा लाये! यह आचार्य जी मेरे विजनेश पार्टनर शिवशंकर सिंह है जो कुछ वर्षो पूर्व एक सरस्वती शिशु मंन्दिर में पढाते थे। तबसे इनको हम लोग आचार्य जी के सम्बोधन से पुकारते है। उनकी शादी 1996 में हुई थी। पहले ये शादी के कट्टर विरोधी थें लेकिन बेचारे को एक हंसीना ने ऐसे हंसी जाल में फंसाया कि बस मत पूछिए। चाय नास्ते के बाद मैने पूछा–''अरे आचार्यजी शादी के लगभग चार साल गुजर गये, कैसा अनुभव रहा।'' अरे छोड़ो भी यार। क्यों शादी की याद दिलाते हो''। ''नहीं आचार्य जी यह हम युवाओं के लिए एक रोचक विषय हैं। कुछ तो बताइए। वैसे तो आप शादी के कट्टर विरोधी थें। फिर ये सब कैसे कर डाले इ... यार क्या बताऊँ, मैं उस ... हूँ जो मैं सभी लड़कियों से हंस–हंस कर बाते किया करता था। हमें क्या मालूम कि यह मेरे लिए..........।'' ''क्यों क्या हुआ आपके साथ'' 'मुझे दोस्तो ने लूटा, मै लुटा हूँ दोस्ती में, ये अजीब हादसे है मेरे साथ जिंदगी के। दरअसल हमारे दोस्तों में एक लड़की संगीता थी जिसकी कर्मठता ने हमें अंधा बना दिया। मैं उससे हंस–हंस कर बाते किया करता था। वैसे भी मै सभी लड़कियों व लड़कों से हंस–हंस के बाते किया करता हूँ ये तो तुम जानते ही हो। मिस संगीता मेरा काम बड़े ही लगन से किया करती थी। धीरे–धीरे दोस्ती हो गयी। मैं तो इस दोस्ती को सामान्य मित्रता ही समझता था। मगर ...। एक दिन उनके पापाजी आए और हमारे बारे में पूछने लगें। मैं आराम से अपने शिक्षा व घर परिवार का ब्योरा देता गया। घर का पता, पापाजी के ऑफिस का पता आदि लेकर चले गयें। लगभग दों–तीन महीने बाद मैं अपने गॉव गया तो पापा ने कहा– ''शिव क्या तुम संगीता को जानते हों।'' ''जी पापाजी, वह मेरे साथ काम करती है व अच्छी लड़की है। क्यों क्या हुआ।'' ''बस यू ही पूछ रहा था। दरअसल उनके पापाजी आये थे इधर किसी काम से। वही तुम दोनों के बारें बातें कर रहे थे। मै ठहरा सीधा–साधा बेवकूफ लड़का जिसको देखो पढा देता है।

बंदा गया काम से

... उससे प्यार करता हूँ। मै प्यार–व्यार के चक्कर से दूर रहता हूँ। जिस सक्स को खुद से प्यार न हो वो दूसरों से क्या प्यार करेगा।

लगभग एक महीने बाद वह मेरे आफिस मे कुछ काम से आयी थी। उसी समय पापाजी व मम्मीजी गांव से आये। पापाजी ने पूछा, तो मैं कहा – ये मिस संगीता सिंह वैदेही हैं, इन्हीं के पापाजी से आपसे मिले थें। मैं चपरासी को लेकर पापा लोगों को कमरे पर पहूँचाने की व्यवस्था करने चल गया। इस बीच पापा लोगो ने पता नहीं संगीता से क्या–क्या बाते की। ये तो मैं आज तक नही जानता। बस इतना जानता हूँ कि ये ही घटना मेरी अंतिम स्वीकृति मान ली गयी। मैं तो निश्चिंत था और काम में जूटा हुआ था। इस बीच घर वालों से शादी की बाते होती पर मुझे शादी नाम से ही चिढ़ थी। मै तमाम बहाने बनाकर टालता रहा। जब करने का इरादा नही था तो पूछूँ कहॉ, कैसे, किससे हो रही है। धीरे–धीरे दो साल गुजर गये, मुझे फीस जमा करने के लिए बारह हजार रूपयों की जरूरत थी। घर से पत्र आया कि आकर ले जाओ। मै गॉव गया पैसा लेने के लिए तो पता चला मेरी शादी तय हो गयी है। कार्ड छप गये है। मात्र आठ दिन बाद तिलक और 12 दिन शादी के बचे है। मेरे पैर से जमीन खिसक गयी। गांव पर कई रिश्तेदार पहले से मुस्तैद थें। मै समझ नहीं पा रहा था कि अब करू तो क्या करूँ। मै कुछ बोलने का प्रयास किया तो यह कहके सबने चुप करा दिया कि अब तक तो बड़े कहते थे कि शादी नही करूंगा। जब हम लोग कहते थे कि कोई लड़की हो तो बताओं, हम लोग देख समझकर कर देंगें और अब............। मैं निरूत्तर हो गया। मैं जब भी कुछ कहना चाहा दबा दिया गया। मैं अकेला पड़ गया था। अपने जीवन में इतना अकेला पहली बार महसूस किया था। आगे–पीछे कोई नही। बस वक्त की नजाकत को देखकर चुप रह गया। मैंने एक शगूफा छोड़ा – ''मै किसी को कोई खर्चा–वर्चा नही दूँगा।'' पापा मम्मी ने कहा– ''जैसे तुम रहोगे वैसे बहू भी रह लेगी। मै बहू का खर्चा भी उठा लूंगा। मैं उसी दिन रात को वापस चला आया। कुछ खास लोगों को निमंत्रण दिया। सब जगह एक ही प्रश्न ''आपकी शादी हो रही है आई कैन्ट बिलीव''। हॉ भाइयों, मेरी। मै अंदर से झल्लाकर कहता।'' चुपचाप घर वाले जहॉ कहते गये बैठ जाओं, खड़े हो जाओं मै करता गया एक आज्ञाकारी बालक की तरह और शादी हो गयी। ''अरे आचार्य जी शादी के बाद आपने क्या अनुभव प्राप्त किया।'' ''अरे यार, क्यों जले पर नमक छिड़क रहे हों।'' ''जब से हुई है शादी आंसू बहा रहा हूँ आफत गले पड़ी है उसको निभा रहा हूँ, बारह बजे घड़ी सें मैडमजी सो रही है शाले–शालियों की फौज आकर मेरे गले पड़ी है।''

''आचार्यजी मै समझा नहीं यह तो कोई फिल्मी

गाना है।'' ''यह कोई फिल्मी गाना नहीं बल्कि मेरी हकीकत है। शादी के पन्द्रह बीस दिन बाद ही वह मेरे पास परीक्षा देने के लिए आ गयी। मगर क्या बताऊँ महारानी जी को खाना बनाने भी नहीं आता पहले दिन ही खाने में नमक इतना अधिक डाल दी की मै बिना खाये बहाना बनाकर उठ गया। मैं सोचता उनके मम्मी पापा से कहूँ कि क्या सिखाया है अपनी बिटिया रानी को। किस जनम की हमसे दुश्मनी निकाल रहे हो, अपने बिटिया के बदनसीब पति के ससुर व सासजी। मगर फिर सोचता क्या फायदा अब भारतीय पति की परम्परा को निभाना हीं हैं। शिकायत करने से क्या मिलने को है। मैं रोज सुबह–शाम खाना पकाता। जब ऑफिस से लौटता हूँ तो वह किताब पढ़ती रहती है। एक गिलास पानी को भी नहीं पूछती। फ्रेश होकर अभी सांस भी नही लेता कि अजी सूनते है आप चाय बहुत अच्छी बनाते है बनाइए न प्लीज, सूबेरे से चाय नही पी हूँ। मै हारकर चाय बनाता। उन्हें भी लाकर देता। फिर शब्जी लाता, झाडू लगाता, पानी भरता, खाना पकाता। खाना खाने के बाद मैडमजी प्यार जताने लगती । कहती ''आप कितने अच्छे है आप जैसे पति को पाकर मै अपने को बहुत खुशनसीब समझती हूँ। मैं अन्दर से जल भुन जाता। कहता– या खुदा ऐसी बीबी मेरे दुश्मन को भी न देना। सुबह ड्यूटी जल्दी होने के कारण जल्दी उठना पड़ता। दो–चार दिन बिना खाना खाये आफिस गया। एक दो दिन होटल में खाने गया तो दोस्तों ने कहा– अरे शिव अब तो बीबी आ गई अब भी होटल में.........। मरता क्या न करता। मैं सुबह पॉच बजे ही उठकर खाना बनाता। जब तक मैं कमरे पर रहता शायद ही कभी उठी हो। छुट्टी के दिन तो और आफत हो जाती। पूरे घर को फैला देखकर कुछ कहता तो मैडम कहती– ''क्या फायदा, फिर गंदा होगा। सबका घर गंदा होता है। बस कपड़े साफ होने चाहिए।'' गंदगी मुझसे देखी नहीं जाती। हारकर कमरों व कपड़ो की सफाई करता। तब तक शाले–शालियों की फौज आ जाती तो कुछ दोस्तों की। अपनी इज्जत अपने हाथ। चाय नाश्ता स्वयं कराता। दोस्तों से कहता– तबियत खराब है महारानी जी की इसलिए स्वयं सर्विस करनी पड़ रही है। किसी से कहते भी तो नहीं बनता अपने बीवी की दास्तान को।

किससे कहूँ दर्द अपना, हर कोई बहरा यहां, बन्धू सब अपने फिकर में स्वार्थ का पहरा यहां। कहते हुए भी डर लगता है कि आज तक तो मै अपने दोस्तो, शादी शुदाओं की बीबियों का मजाक उड़ाया करता था। अब मैं ....।

अगर कभी गांव जाने को कहता तो कहती जब आप चलोगें तो चलुगी। वैसे तो गांव जाने जल्दी नाम नहीं लेती। अगर जाती भी तो मेरे साथ ही गांव से चली आती। मैं कहता–अरे पापा–मम्मी है उनकी कुछ दिन सेवा करों उनकी गांव रहकर। तो कहती आप सेवा करों मैं क्यों करुँ। छोटी–2 बात पर मेरी बहनों से, भाई से लड़ बैठती। वैसे तो मेरी तरफ से पूरी छूट है रहती कि क्या पहनना हैं, क्या खाना। लेकिन कपड़े पहनने से लेकर रहन सहन पर भी लगाम लगाती रहती। मैं कोई काम अपने मन नहीं कर सकता। सभी कार्यों में हस्तक्षेप। जिस चीज का ए बी सी भी नहीं मालूम उसमें भी रुकावट। ऐसे नहीं ऐसे कीजिए। ए मत कीजिए वो मत कीजिए। उनके कारण मुझे अक्सर रिश्तेदारों व सगे सम्बंधियों के बीच जलील होना पड़ता। सब कहते की बीबी का गुलाम है। अब मैं क्या बताऊँ उन लोगो को कि या तो सरे आम अपनी इज्जत निलाम करुँ या ......।

प्रत्येक छुट्टी में जब थोड़ा आराम करने की सोचता किसी दोस्त के घर जाने को तैयार होता तो उससे पहले ही वह मैके या अपनी किसी सहेली के यहाँ जाने का प्लान बना देती। मजबूरी यह की साथ जाएगी। अकेले नही। मै कहता ... . हे कलियुंगी महारानी, महाकाली, महाचण्डी, हे पति प्रताड़न देवी गाड़ी चलाना सीख लो और हमें बक्स दो। पर कहती– ''आप हो न, क्या होगा गाड़ी सीखकर। मै तो सोचता हूँ कि इससे आराम तो शादी के पहले ही था। सायंकाल सारे समान यथावत रक्खे हुए मिलते। छुट्टियों में मजे से मिटिंग व दोस्तो के बीच में कट जाता। खाना कभी होटल में कभी दोस्तों के यहां खा लेता। हफ्ते में एक आध दिन कमरे पर खाना पकाता। कोई कमरे पर आये तो चाय पिलाओ या मत पिलाओं कोई बात नहीं। अब तो खाने की दावत मांगतें है सभी दोस्त, भाभी के नाम पर। उन्हें क्या मालुम की भाभी जी को क्या। मरना तो मुझे पड़ता है। मै तो यार कहूँगा। शादी के जंजाल में कभी मत फॅसना वरना तुम्हें भी तुम्हारे दोस्त कहेंगे बंदा गया काम से, बंदा गया काम से, बंदा गया काम से, बंदा गया काम से।

जीवन के अटल ध्रुव

✍ज्योति नगरिया

सही अर्थो में जीने की कला है–यह जानना कि कब जीवन की दृढ़ता से पकड़े रहें और कब छोड़ दे। जीवन एक विरोधाभास है....। यह हमें अनेक उपहारों से चिपके रहने का मोंह भी देता है तो दूसरी ओर उन के संभावित त्याग का विधान भी निश्चित करता है। प्राचीन यहूदी धर्म शास्त्रियों के अनुसार–"एक आदमी इस संसार में बंधी हुई मुट्ठी लेकर पैदा होता है लेकिन मरने पर उसका हाथ खुला होता है।" निश्चय ही हमें जीवन को दृढ़तापूर्वक पकड़ना चाहिए, क्योंकि यह अदभुत है और सौन्दर्य से परिपूर्ण है जो धरा के रोम–रोम से फूटता दिखता है। हम सब इसके अस्तित्व से परिचित हैं लेकिन हम इस सत्य को प्रायः अपने अतीत पर दृष्टिपात करने पर ही पहचानते हैं जब हम याद करते हैं कि तब क्या था और तभी अचानक यह अहसास होता हैं कि अब वह नहीं है।

हम स्मरण करते हैं उस सौन्दर्य का जो क्लान हो गया, उस प्यार का जो विलुप्त हो गया, लेकिन यह अहसास उस वक्त और भी अधिक मर्मभेदी हो उठता है जब हम याद करते हैं कि हम ने सौन्दर्य को उस क्षण नहीं देखा जब वह खिला और यह कि हम प्रेम का प्रतिदान प्रेम से क्यों न कर सके।

जीवन के विरोधाभासी तकाजों का पहला ध्रुव कभी भी जीवन के विस्मय और कौतुहल के लिए आप की व्यस्तता बाधा न बने। हर उगते दिन के सम्मुख विनम्र रहें, हर घण्टे को गले लगायें, हर सुनहरी क्षण को झपट लीजिए। जीवन को दृढ़तापूर्वक पकड़े। लेकिन इतनी दृढ़ता से नहीं कि आप इसे छोड़ ही न सके। यह जीवन के सिक्के का दूसरा पहलू है, इसके विरोधाभास का विपरीत ध्रुव हमें अपने नुकसानों को अवश्य स्वीकार करना चाहिए और सींखना चाहिए कि कब और कैसे उसे सहजता से छोड़ सकें।

जीवन कभी भी मात्र एक सत्व नहीं होता। यह एक सम्भवन है, एक निरन्तर प्रवाह। सौन्दर्य जिसे हम रुप देते है मृत्यु द्वारा क्लान नहीं किया जा सकता। हमारे शरीर नष्ट हो सकते हैं, हाथ शिथिल पड़ सकते है लेकिन वह रचना सौदर्य, श्रेष्ठता और सत्य सर्जित रचना जिसे हम बनाते हैं। चिरकाल तक जीवित रहती है। अतः अपने जीवन को उन वस्तुओं को संचित करने में मत नष्ट करें जो धूल और राख में परिणत हो जायेंगी।

1. ईंट की खड़ी दीवारों में प्यार मिलाये, आप के पास एक घर है।
2. शहर में नीतिपरायणता मिलायें, आप के पास समुदाय है।
3. लाल ईंट के समूह में सत्य मिलायें, एक विद्यालय तैयार है।
4. अट्टालिकाओं के विनय में, धर्म मिलायें, आपके पास एक देवालय है।
5. मानवीय उद्यम की विराट परिधि में न्याय मिलायें, आप के पास एक सभ्यता है।

इन सब को एक साथ रखें, उन्हें उन की वर्तमान अपूर्णताओं से ऊपर उठायें, उन में सदा के लिए विवशता और कलह से मुक्त, मानव जाति की दृष्टि मिलायें और आप के पास होगा आशा के चमकीलें रंगो से प्रदीप्त भविष्य।

सदस्या, जी0पी0एफ0 सोसायटी

वन्दे मातरम्

जय जवान! जय किसान! किसान एकता जिन्दाबाद!!!

भारतीय किसान यूनियन

(अराजनैतिक)

कार्यालय : साऊथ एवेन्यु, नई दिल्ली, STD : Phone : 301329

प्रधान कार्यालय :
किसान भवन, 3/2, शिवनगर कालोनी,
(निकट बक्सी बॉध) अल्लापुर,
इलाहाबाद–211006
फोन : 0532–501801

धनंजय सिंह

राष्ट्रीय अध्यक्ष

संदेश

सेवा में,

द्विवेदी जी

मासिक पत्रिका *विश्व स्नेह समाज* के प्रकाशन पर हमारी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएँ। हमें उम्मीद है कि आप बिजली, खाद की महगायी से त्रस्त किसानों के हितो को ध्यान में रखते हुए उनकी समस्याओं को भी उजागर करने का प्रयास करेंगें।

हार्दिक शुभकामानाओं के साथ

आपका

प्रवेंशाकं निकलने पर हार्दिक शुभकामनाएं

रामनयन शिक्षण संस्थान

काजीपुर, नैनी, प्रयाग

(नैनी कोतवाली के पीछे)

शिशु से हाई स्कूल तक

विद्यालय की विशेषताएं

1. शिक्षा का माध्यम राष्ट्रभाषा हिन्दी विषय के रुप में आंग्लभाषा का प्रभावी शिक्षण
2. शिशु सभा का आयोजन
3. सामान्य ज्ञान परीक्षा का आयोजन
4. प्रतिभा सम्पन्न छोत्रों के पुरस्कार की व्यवस्था
5. समय–समय पर अभिभावक जनसम्पर्क एवं अभिवावक सम्मेलन

ओकार नाथ मिश्र
एडवोकेट हाईकोर्ट
प्रबंधक

इन्द्रदेव पाठक
प्रधानाचार्य
रा0न0शिक्षण संस्थान, काजीपुर, नैनी

Phone : 694374

प्रवेशांक निकलने पर हर्दिक शुभकामनाओं के साथ

केशरवानी फर्नीचर्स

मेवालाल की बगिया तिराहा, नैनी, इलाहाबाद

ट्रंक, फाइवर कुर्सी, मेज, आलमारी फोल्डिंग चेयर, चारपाई, गद्दे, आफिस चेयर टेबुल एवं हर प्रकार के टी0वी0 ट्राली के विक्रेता

प्रो0 सुभाष चन्द्र केशरवानी (नेता जी)

गिरधारी लाल जायसवाल

प्रापर्टी डीलर

सम्पर्क करें :

जमीन खरीदने, बेचने,

मकान खरीदने व बेचने के लिए

सम्पर्क स्थल :

मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद

फोन न0 695970

Phone : 695601

प्रवेशांक निकलने पर हर्दिक

शुभकामनाओं के साथ

श्री बंशीधर चौबे

कोषाध्यक्ष

राष्ट्रीय जन चेतना, उ0प्र0

सम्पर्क करें :

7/9, आई0टी0 आई0 कालोनी, सड़वा, नैनी, इलाहाबाद

प्रवेशांक निकलने पर हर्दिक

शुभकामनाओं के साथ

श्री प्रवीन कुमार श्रीवास्तव

एडवोकेट हाईकोर्ट

हाईकोर्ट चैम्बर न0 115

निवास :

118/1, चकदाउद नगर, नैनी, (अशोक सिनेमा के पीछे), इलाहाबाद–8

Phone : 694234

ज्ञानेश्वर प्रसाद शुक्ल

अध्यक्ष

निवास :
47/8, लेबर कालोनी, नैनी, इलाहाबाद

प्रिय द्विवेदी जी

मुझे जानकर हर्ष हुआ कि आपके द्वारा मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" का प्रकाशन होने जा रहा है। आधुनिक काल में पत्रकारिता ने एक महान क्रान्ति उत्पन्न की है। आज विश्व दर्शन समाचार पत्रों, पत्रिकाओं आदि के माध्यम से होता है। जहॉ पत्रकारों की अधिक अभिरुचि राजनैतिक समाचार में रहती है वहॉ आप द्वारा समाजिक विषयों को उजागर करने का प्रयास सराहनीय है।

शुभकामनाओं सहित

आपका

ज्ञानेश्वर प्रसाद शुक्ल

सरस्वती बालिका विद्या मंन्दिर

दाउद नगर (पानी की टंकी के पास)

सब्जी मंडी, नैनी, इलाहाबाद

विश्व स्नेह समाज के प्रकाशन पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का प्रकाशन समाज को जोड़ने और संजाने में एक अच्छी भूमिका निभाएगा एवं सामाजिक समरसता स्थापित करेगा।

सुरेन्द्र कुमार धवन

प्रबन्धक

प्रवेशांक निकलने पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

उमांशकर आयलानी

17, इंडस्ट्रियल कालोनी, नैनी, इलाहाबादं

अध्यक्ष : संगम ईंट निर्माता समिती, जिला–इलाहाबाद
अध्यक्ष : गुरुद्वारा पब्लिक स्कूल नैनी, इलाहाबाद
अध्यक्ष : गुरुद्वारा नैनी संगत, नैनी, इलाहाबाद
सचिव : उ0प्र0 सिन्धी कौन्सिल एवं सिन्धी कौसिल ऑफ इडिया, नई दिल्ली
सचिव : उ0प्र0 ईंट निर्माता समिति, लखनऊ
कार्यकारीणी सदस्यः श्री रंणजीत पं0 ई0 कालेज, नैनी
प्रतिष्ठान : मेसर्स डायमंड ब्रिक फिल्ड रामसागर, चाका
मेसर्स : उमाशंकर ब्रिक फिल्ड, रेही, नैनी

Phone : 696034

रजिस्टर्ड : रजि0 न : एडी 0329885

शादी विवाह, पार्टी एवं किसी भी शुभअवसर पर उत्तम व्यवस्था के लिए सम्पर्क करें

आंकाक्षा टेंट हाउस

निवास :
ट्रीस फारमर के पास, काजीपुर रोड, नैनी, इलाहाबाद

प्रो0 ओम प्रकाश जायसवाल

Congritulated For coming the First edition o the Magzine

Phone ☎: 698866

Dr. Rajesh Nath Pandey

M.B.B.S. H.S.

MLN Medical College Allahabad

CMO BPCL, Naini

Authorised Medical Attendent LIC, TSL, ITI

क ।ल छ छपहीज भ्वेचपजंस

2A/1, Daud Nagar, Usha Fone Tower,

Beside State Bank Naini, Allahabad

Near Baidhya Nath Company

करहिं पाप पावहिं दुःख, भवरुण, सोक, वियोग।

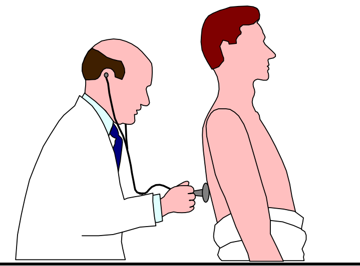

एस0पी0 सिंह
कोआर्डिनेटर, एक्यूप्रेशर एवं शोध प्रशिक्षण संस्थान,
सम्मेलन मार्ग, मारवाड़ी धर्मशाला, इलाहाबाद

सांसारिक कष्ट–शारीरिक कष्ट पाप के ही परिणाम होते हैं। पाप केवल चोरी, हत्या और बलात्कार ही नहीं होता, वरन प्रकृति, देश, काल और समाज के प्रतिकूल कोई भी कार्य पाप होता है। जैसे रात बनी है सोने के लिए और दिन बना है कार्य करने के लिए। इसके विपरीत जो करते हैं वे पाप करते हैं। हमारे शरीर के विभिन्न प्रमुख अंगो में प्राण, ऊर्जा का प्रवाह एक निश्चित समय में अधिक होता है। जैसे बड़ी आँत में ऊर्जा का प्रवाह प्रातः 5 से 7 के बीच सर्वाधिक होता है। आज जो व्यक्ति इस अवधि में जगकर शौच कृया से निवृत हो लेता है उसका मल निस्कासन अच्छा होता है और जो इसके बाद सोकर उठते है वे मलावरोध (कब्ज) के रोगी हो सकते है। इस प्रकार देर रात तक जगना और सवेरे देर तक सोते रहना रहन–सहन सम्बन्धी पाप है। किसी की जीविका सम्बन्धी मजबूरी में देर रात तक जगना पड़ता हो तो अलग बात है अन्यथा देर रात तक जगना और प्रातः देर तक सोना उचित नहीं।

हम पृथ्वी के गर्भ में छिपे रहस्यों को जानने को आतुर रहते हैं। समुन्द्र की गहराई और अंतरिक्ष के विषय में जानने को उत्सुक रहते है। देश–विदेश की यात्रा कर अपना ज्ञान बढ़ाना चाहते है। हम कोई पशु या पक्षी पालते हैं तो उसके विषय में जानकारी करते है कि उसको क्या, कब, कितना और कैसे खिलाया जाय कि वह स्वस्थ रहे, किन्तु हमें स्वयंम अपने विषय में यही बाते कभी जानने का प्रयास नहीं करते।

हमारा शरीर स्वयम में एक आश्चर्य हैं। इसमें अनेक सर्वश्रेष्ठ, स्वयंचालित, कोमल और सूक्ष्म परन्तु शक्तिशाली यंत्र हैं यथा ह्रदय और फेफड़े कभी न रुकने वाले पम्पिंग यंत्र, ऑखे, अदभुत कैमरा और प्रोजेक्टर, कान अनुपम श्रवण पद्धति, पेट आश्चर्यजनक रासायनशाला, नाड़ी मीलों लम्बी संचार व्यवस्था, मन अनंत क्षमतायुक्त अदभुत कम्प्यूटर। सबसे बड़ी विशेषता है इन सभी यंत्रों के बीच का ताल–मेल जिससे यह मनुष्य रुपी शरीर 100 वर्षो से भी अधिक समय तक काम कर सकता है। हम पाते हैं कि किसी भी अच्छे यंत्र में खतरा उपस्थित होने पर उसके अपने आप बन्द हो जाने की व्यवस्था होती है। जैसे किसी रेफ्रीजरेटर और गरम पानी का गीजर। उनकी अमुक स्विच दबाने से वे फिर चालू हो जाते है। ऐसी व्यवस्था हमारे शरीर में भी है, जिसे एक्यूप्रेशर/एक्यूपंक्चर बिन्दुओं के रुप में जानते है।

इसी प्रकार परमात्मा भी आत्मा के रुप में हमारे शरीर में ही विद्यमान है किन्तु हम हैं कि उसे मंन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर आदि में ढूढ़ते रहते है।

अतः आघ्यात्मिक और भौतिक दोनों ही दृष्टियों से आवश्यक है कि हम अपने को अपने शरीर को, समझे तभी हम स्वस्थ,सुखी, शांत और प्रसन्न रह सकते हैं।

मानव दिनचर्या में पांच बाते आवश्यक हैं। भोजन, विश्राम (नींद), स्नान, पूजा–ध्यान, और व्यायाम। व्यायाम अधिकांश लोग करते हीं नहीं, पूजा–ध्यान भी या तो करते ही नहीं और करते भी है तो अधिकांश लोग खाना–पूर्ती ही करते है। नींद भी समय से और पर्याप्त नही लेते। भोजन और स्नान हड़बड़ी में और उल्टा–सीधा करते हैं। फिर परिणाम भी तो उल्टा–सीधा ही होना है क्योंकि विज्ञान का नियम है कि हर कृपा की ठीक वैसी ही विपरीत कृपा अवश्य होती है। अतः यदि हम अनुचित वस्तु का अनुचित मात्रा मं और अनुचित समय पर आहार करेगें तो निश्चय ही हमारा शरीर आज नहीं तो कल रोग ग्रसित होगा और जब तक उचित आहार–बिहार नहीं अपनयेगें पूर्ण स्वस्थ नहीं होगा।

हमारे पूर्वजो मनीषियों ने हमारे 24 घंटे की दैनिक अवधि को 8–8 घंटे के भागों में बॅटा था जिसमें से 8 घंटे विश्राम और निद्रा के लिए, 8घंटे अपने तन और मन को स्वस्थ रखने के उपाय करने के लिए और 8 घंटे जीविकार्जन के लिए। किन्तु आज के भौतिकवादी भाग–दौड़ में हम 16 घंटे जीविकार्जन में और तन–मन के स्वस्थ रखने में लगाते है। जो लोग जीविकार्जन हेतु प्रयासरत नहीं होते वे तो अपना समय और भी व्यर्थ गॅवाते है।

अतः आज से ही निश्चय करें कि रात को जल्द सोयेगें और प्रातः जल्द उठकर शौचादि कृपाओं से निवृत होकर प्रातः भ्रमण या अन्य कोई व्यायाम करेगें। स्नान, ध्यान–चिंतन और अपने को जानने का प्रयास करेंगे।

सोने का विस्तर या भूमि पर हो, ठीली चरपाई उत्तम नहीं। बिस्तर स्वच्छ और हल्का हो। मोटा गद्दा और ऊँचा तकिया न हो। सिरहाना, पूर्व, पश्चिम या दक्षिण की ओर हो। दरवाजे–खिड़किया यथा सम्भव खुली हो। सोते समय मुॅह रुककर न सोचें। छः से आठ घंटे की नींद ले। यदि किसी कारणवस रात को नींद पूरी न हो सके तो दिन में भी थोड़ी देर के लिए नींद या आराम कर उसकी पूर्ति कर लें।

कुछ खास बाते

1. मूड अच्छा हो तो सब कुछ अच्छा लगता है। पर, नवीनतम शोधों के मुताबिक कुछ सहज उपलब्ध सब्जियों व मेंवो आदि के सेवन से मूड अच्छा किया जा सकता है।

2. मानव भ्रूण पर संगीत के प्रभाव के बारे में यूं तो अनेक अनुसंधान हो चुके है पर, हाल ही में जो निष्कर्ष विज्ञानियों ने निकाला है वह बड़ा ही दिलचस्प है। नई खोज यह है कि गर्भाशय में रहने के दौरान सुने गए संगीत को बच्चा याद रखता है। अविकसित भ्रूण अस्तित्व में आने के 20 हफ्ते बाद सुनने की क्षमता पा जाता है। वह संगीतमय ध्वनि को इसके 12 महीने बाद तक याद रख सकता है। वह गर्भ में रहने के दौरान माता द्वारा सुने गए संगीत को दोबारा सुनने पर अनुकूल प्रतिक्रिया जाहिर करता है।

3. चावल रखे हुए डिब्बे में पापड़ रखने पर वें ताजा रहेगें और टूटेगें भी नहीं।

4. सब्जियों, दालों या सूखे मटर को उबालते समय उसमें नारियल तेल की कुछ बूंदे डाल दें। पकने में समय कम लगने के साथ ही उनकी पौष्टिकता भी सूरक्षित रहती है।

5. काली चीटियों पर जरा सा नमक छिड़क दें, वे तुरंत भाग जाएंगी।

6. बाथ टब पर दाग पड़ जाएं तो उस पर कटा हुआ नीबू रगड़े और कुछ देर छोड़ दें। फिर साबुन और पानी से धों लें।

7. चावल के डिब्बे में लहसुन के दो–तीन जवे रखने से उसमें कीड़े नहीं लगेगे।

8. चीज को आसानी से काटने लिए गरम चाकू का इस्तेमाल करें।

9. एक चम्मच अदरक का रस और एक चम्मच शहद मिलाकर दिन में तीन बार लेने पर छाती की जकड़न में राहत मिलती है।

10. कपड़ों पर मेंहदी के धब्बे लग जाए तो प्रभावित जगह को आधे घंटे तक दूध में डुबो दें।

11. आलुओ को जल्दी उबालने के लिए पानी में पकाने वाले तेल की कुछ बूंदे डाले।

□□□□□□□

एक साक्षात्कार

बुद्धिसेन शर्मा

एक परिचय

२६ दिसम्बर १९४१ कानपुर में जन्मे श्री बुद्धिसेन शर्मा किरोरावस्था से ही काव्य में रूचि रखने लगे थे। शिक्षा के बाद, विभिन्न पत्रो-पत्रिकाओं का प्रकाशन कभी कानपुर, कभी कलकत्ता से आरंभ किया, कराया। किंतु बार-बार आर्थिक कठिनाइयों के कारण, उन्हें बंद करना पड़ा। अनेक पत्र-पत्रिकाओं तथा स्मारिकाओं आदि का सम्पादन किया। शुरू में दोहे, सवैया, घनाक्षरी, छप्पय, कुण्डलिया, मालिनी, बरवै, सोरठा, चौपाई आदि मात्रिक-वर्णिक छन्दों से लेकर गीत, प्रगति आदि नाना विधाओं में काव्य-रचना की। ''नयी कविता- १९७१'' (संपादकः डॉ० जगदीश गुप्त, विजय देव नारायण साही) में स्वीकृत-समादृत, सम्मिलित। आप काव्य के अतिरिक्त कहानी, नाटक, रेडियो-रूपक, निबंध, समीक्षा आदि प्रायः सभी विधाओं में लेखन भी करते है। धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी, नवनीत तथा अन्य प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन होता रहा है तथा आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रो द्वारा समय-समय पर उनकी रचनओं का प्रसारण होता रहा है। १९६१ से आपके पुरस्कृत होंने का सिलसिला भारत के उप-राष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकर दयाल शर्मा के कर-कमलों द्वारा ''साहित्य श्री'' अलंकण से प्रारम्भ होकर, १९६१ में ही मक़तब-ए-ग़ौरो पिक प्रयाग, १९९५ में भारती परिषद प्रयाग द्वारा सम्मान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा १९९५ तक अनवरत जारी रहेगा। जो आगे भी जारी रहेगा ऐसी आशा है। यह इस महान विभूति कलम से दिखता है। १९७५ से निरन्तर गज़ल-लेखन भी कर रहे है। जिनका प्रकाशन अनेक पत्र-पत्रिकाओं में होता रहता है। कवि-सम्मेलनों के मंचों और मुशायरों के लोकप्रिय कवि एवं शायर के रूप में विख्यात अर्जित कर चुके श्री बुद्धिसेन शर्मा सम्प्रति, मित्र प्रकाशन लि०, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, महिलाओं की पाक्षिक पत्रिका ''मनोरमा'' में उप-संपादक के रूप में कार्यरत। आप वर्तमान में इलाहाबाद के १४/१०, करेलाबाग लेबर कॉलोनी पिन कोड-२११००३, दूरभाष : (०५३२) ६५७००७१ में निवास स्थल बनाये है। आप ऐसी ही हिन्दी साहित्य जगत को अपनी लेखन विधाओं से अलंकृत करते रहेगें। ऐसी पत्रिका परिवार को आशा है।

(जी.के द्विवेदी, प्रधान संपादक द्वारा एक भेटवार्ता पर आधारित)

1/10□□□□□□□□□1/10

''बहू की पुकार''

इन्द्रजीत दूबे (साथी)

भला अबकी दहेजो का,
नियम कुछ और आया है।
अजब दिलदार आया है,
गजब इनकार लाया है।
भले ही मॉग के उनपर,
मुताविक दम न होती है।
तभी भी बात ऊँचा है,
व मॉगे कम न होती है।
ये उनसे जान पड़ता है,
कि बेटिहा कर्ज लाया है।
जरा सी मॉग कम होती,
तो इक अन्जाम देते हैं।
खुदे हम्यार बन करकें,
बहु की जान लेते हैं।
दहेजो में बदल करके,
भला खुनख्वार आया है।
गरीबी सौपंकर रब ने जिसे,
मुस्कान को छिन ले।
भले औलाद दे पर जख्म का,
बेटी कभी मत दे।
जिसे हम आज गाते है,
वो हर इन्सान गाया है।

''काश! इंसान एक मशीन होता''

रामा सिंह

काश! इंसान एक मशीन होता
ऑखे होती पर सिर्फ देखने के काम आती
हृदय स्पंदन करता पर सिर्फ रक्त को धमनियों में ढकेलने के लिए
ऑखे होती पर ऑखो में समुन्द्र जितना पानी न होता
दिल तो होता पर
दिल में दर्द न होता, तूफान न होता एहसास न होता।

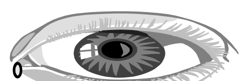

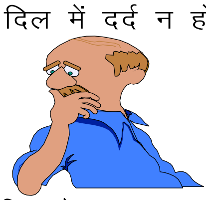

कुछ भी होता पर, ऑखो का संबंध हृदय से न होता
हृदय पर दबाव पड़ने से आसुओं का आना न होता
आखो में उम्र से भी ज्यादा पानी न होता
आखो से पानी तोय निकलता पर वह आसु न होता,

दिल होता पर भावनाए न होती
संवेदनाये न होती, इच्छाये न होती
काशः ऑखें न होती।

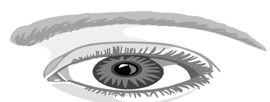

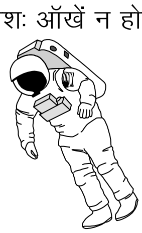

लोगो का कहना है, इस भाग दौड़ की दुनिया में मानव
एक मशीन बनकर रह गया है,
काशः ये सच होता
मानव एक मशीन होता

मानव के जीवित रहने पर न उसकी
कोई आशा होती, न कोई विश्वास होता उसके मरने पर
न किसी के दिल में दर्द होता, न कोई रोता
कितना अच्छा होता, यदि मानव एक मशीन होता
मेरा ये सपना सच होता काश! मानव एक मशीन होता ।

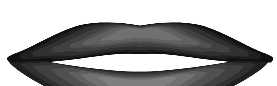

पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

हम आपके लिए अगले अंक से प्रारम्भ कर रहे हैं कुछ स्थायी स्तम्भ आप अपने विचार, इन स्तम्भों पर हमें लिखें। स्तम्भ के ऊपर स्तम्भ का नाम अवश्य लिखें।

1. यादों के झरोखे से– इस स्तम्भ के तहत आप अपने जीवन की भूली–बिसरी यादें अनोखी घटनाए, पहला प्यार, सुनहरे पल आदि लिखकर भेज सकते है। अच्छे लेखों के लिए 500.00 रुपये तक का पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। अगर आप अपनी रचना अस्वीकृत के संदर्भ में वापस मगाना चाहते हैं तो पत्र के साथ जबाबी टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें।

2 पत्र–मित्रता– यह एक बहुत दिलचस्प स्तम्भ होगा। इस स्तम्भ के तहत हम आपका परिचय देश–विदेश के लड़को लड़कियों आदमी और औरतों से करवायेंगे। इसमें आपको अपना नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, कद, शिक्षा, रुचियॉ, नापंसद, व्यवसाय तथा अपने बारे में लिखना होगा। अगर आप साथ में अपना फाटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 25 रुपये का मनिआर्डर या बैंक डाफ्ट प्रधान संपादक के नाम से भेजना होगा।

लिखें– मासिक पत्रिका, 'विश्व स्नेह समाज'
277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद–8

दिल लूट ले गई जेना

खतरनाॅक जानवरों के बीच दिल को एक पल में लूट लेने वाली, मदहाेश खूबसूरती कुछ अच्छा नहीं लगता। लेकिन बात जब जेना ली नोलिस की हो तो मानना पड़ता है कि हुस्ने बहार जंगलियों को भी भा सकती है। ए. एक्स. एन चैनल पर आजकल प्रसारित हो रहे धारावाहिक ''शीना'' की मुख्य पात्र जेना मॉडलिंग की उपज हैं एक बार एक कैमरे की नजर उस पर पड़ी और एक निर्माता के द्वारा ''द हाउस इज राइट'' के लिए चून ली गई इसे निर्माता इ डगलस स्काटर्ज ने भी नोटिस किया और अपने बहुचर्चित धरावाहिक बेवाचा की हसीना की तलाश को खत्म कर दी जेना के पास केवल मादक हुस्न ही नही बल्कि गजब की अदाकारी भी है। वह चरित्र के हिसाब के अपने को तैयार करने के लिए बेझिझक घंटो मेहनत करती हैं। फिल्म की तैयारी के लिए जेना ने मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग ली, जानवरों के बीच रहना सीखा और चरित्र के अनुसार अपना मारीफिक जानवरो के बीच रहना सीखा और चरित्र के अनुसार अपना शारीरिक गठन बनाने के लिए जी–तोड़ मेहनत की। जेना कहती है–'' चिंपाजी बड़े जिंदादिल होते हैं''। बेचारे हो क्यों न, पास में जेना जो होती है।

उर्मिला की नई घोषणा

इधर उर्मिला ने घोषणा की है कि वह अब नए–नए निर्देशकों के साथ काम करने को ज्यादा तवज्जो देंगी। रजत मुखर्जी निर्देशित 'प्यार तूने क्या किया' की सफलता के बाद उर्मि के मन में यह बात घर गई कि उनकी प्रतिभा का इस्तेमाल नए निर्देशक ही बखूबी कर सकते हैं। यूं उर्मि की इस घोषणा के पीछे का रहस्य कई जनों को समझ में आ गया है। नए निर्देशकों के साथ काम करने वाली बात का दूसरा अर्थ यह है कि वह रामू के कैंप की फिल्मों में ही ज्यादा मन रमाएंगी। उर्मिला से पहले रामगोपाल वर्मा ने नए निर्देशकों के साथ काम करने वाली यह राय बनाई और अपने मन की बात उर्मि को बताई। उर्मिला ने अपनी तरह से रामू की बात लोगों के सामने रखी है। जाहिर है कि रामू के कैंप के नए निर्देशक उर्मिला को अलग तो रख नहीं सकते। रामू ने रजत मुखर्जी को लेकर जिस नई फिल्म की योजना बनाई है, वह भी मॉडर्न प्रेम कहानी होगी। उर्मिला को इंतजार है तो बस इस बात का कि इस फिल्म की हीरोइन के रुप में उनका नाम कब घोषित होता है।

मुबई ब्यूरो

टेस्टी बाइट

रेस्टोरेन्ट (वातानुकुलित)

सभी प्रकार के व्यंजनो की व्यवस्था
वेज, नानवेज, चायनीज, आइस्क्रीम आदि।
सपरिवार आये बैठने की पूरी व्यवस्था
पता : कृष्णा काम्पलेक्स, मेवा लाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद

प्रवेंशाक निकलने पर शुभकामनाएँ
(विगत कई वर्षो से आपके क्षेत्र में सेवारत)

नगरिया पब्लिक स्कूल (रजि0)

विकास रोड (गंगा पुरम्), नैनी, इलाहाबाद
एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 पाठयक्रम पर आधारित
अंग्रेजी माध्यम
नर्सरी से कक्षा 5 तक
समय प्रातः 8 से 12 तक
विद्यालय द्वारा ही सभी कक्षा की पाठ्य–पुस्तके उपलब्ध कराने की सुविधा
विद्यालय द्वारा बच्चों के लिए बस, टक्सी व ट्रॉली की व्यवस्था
एन. पी. एस. का एक ही नारा।
पढ़ा लिखा समाज हमारा।।
नोट : विद्यालय का स्वयं के भवन में अब चल रहा है।

नया पता :
चक इमाम अली, नैनी,
इलाहाबाद

प्रधानाचार्य
श्रीमती गीता नगरिया
☎ निवास 695354

3.

विमोचन समारोह में बोलते हुए पत्रिका के प्रधान संपादक श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

समझौता ही जीवन है।

2.

विमोचन के अवसर पर आयोजित स्नेह 2001 कार्यक्रम में विमर्श करते हुए श्री बुद्धिसेन शर्मा एवं श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी। बायें से नगरिया पब्लिक स्कूल प्रबंधक श्रीमती गीता नगरिया एवं श्री एन0पी0 मिश्रा।

क्या आप बेरोजगार हैं?

क्या आप पैसा कमाना चाहते हैं?

क्या आप चाहते हैं कि आपका इंडिया के टॉप टेन सिटी में अपना फ्लैट हो?

आपकी अपनी दो–दो कारें हो?

क्या विदेश यात्रा पर बिना पैसा खर्च किए जाना चाहते है?

क्या आप चाहते है कि आपके पास अच्छे मॉडल की मोटर साईकिल हो?

क्या आप चाहते है कि आपके पास लाखों रुपयों का बैंक बैलेंस हो?

तो आइए आपको ले चलते हैं ख्वाबों की दुनियां में ख्वाबों को हकीकत में बदलने के लिए आपके साथ आया है।

विस्न नेट वर्क सिस्टम का अनोखा प्लान। जो आपको उपरोक्त सारी चीजें उपलब्ध करायेगा।

बस आपका थोड़ा–सा धैर्य, थोड़ी सी मेहनत,
कर देगी आपके प्रत्येक ख्वाब को हकीकत।

विस्तृत जानकारी के लिए हमें लिखें या मिलेः–

स्थानीय स्पांसरः-

<u>विस्नेट सिस्टम</u>

मासिक पत्रिका **<u>विश्व स्नेह समाज</u>** कैम्पस
२७७/४८६, जेल रोड, चकरघुनाथ,
नैनी, इलाहाबाद

VIS NET SYSTEM
The art of earn much money in less period.

SCHOOL AND HOME FOR THE BLIND

(MINIORITY CHRISTIAN INSTITUTIONS)

Naini, Allahabad-8, U.P. ☎ :696301

नेत्रहीन विद्यालय में नेत्रहीन विद्यार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है।

<u>विद्यालय के उद्देश्य :</u>

1. नेत्रहीन बालकों को ब्रेल शिक्षा के माध्यम से शिक्षित बनाना साथ ही संगीत गायन, वादन एवं हस्त कला का ज्ञान देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना।

2..नेत्रहीन बालकों को रहने के लिए प्राकृतिक एवं स्वच्छ वातावरण देकर उनके विकास में सहायक बननां

3. समाज को ये बताना कि नेत्रहीन बालक किसी पर बोझ नहीं हैं। उसे समाज से अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए जागरुक बनाना।

कहीं दीप जले कहीं दिल रजनीश कुमार तिवारी राज

खूबसूरत से बंगले के चारों ओर भीनी–भीनीं खुशबू से आस–पस का सारा इलाका महक रहा है। बंगले में ऊपर से नीचे तक छोटे–छोटे टिमटिमाते बल्ब इस तरह लग रहे हैं मानो आकाश उतर कर धरती पर आ गया हो। कालीन भी कमरे से लेकर बाहर गेट तक ऐसे बिछी है जैसे पहाड़ो से निकली नदियॉ अपना द्वार स्वयं बना लेती हैं। बंगले के बाहर लम्बी कतारों में कारें खड़ी हैं। आज जिलाधिकारी राजेश मिश्रा के घर पर कोई खास कार्यक्रम है। घर के अन्दर बड़े से बरामदे में चारों ओर मखमल बिछा है जिसके चारों ओर सोफे लगे हैं, मेजें बिछी है, लोग बड़ी खुशी से आपस में बातें कर रहे हैं, कुछ लोग शराब के प्यालों से रस ले रहे हैं, डांस चल रहा है, कई जोड़े आपस में बॉहों में बॉहे डाले ऐसे मचल रहे हैं जैसे झील में हंस के जोड़े तैर रहे हैं।

आज जिलाधिकारी राजेश मिश्रा की शादी की इंगेजमेंट है। राजेश अपने सभी मित्रों से अपने होने वाले सास–ससुर का परिचय करा रहे हैं। उनकी होने वाली मंगेतर भी उनके साथ अपना परिचय बखूबी, खुशी से करवा रही है। परन्तु राजेश की सूनी निगाहें, भरपूर खुशी और अपनी मंगेतर को करीब पाकर भी, बार–बार गेट की ओर बड़ी बेसब्री से दौड़ रहीं है।

तभी एक मित्र हॅसी करता है–" यार, पेट में चूहे कूद रहे हैं। बिल्ली की व्यवस्था तो कर दी है पर राह क्यों नहीं मिल रही। अमां, किसका इंतजार कर रहे हो? भाभी तो करीब हैं। कहीं कई मंगेतर से एक साथ तो इंगेज का प्लान नहीं है?"

सभी हॅसते हैं। हॅसी मजाक चल ही रहा था, परन्तु अपनी मॉ का इंतजार बड़ी बेस्रबी से कर रहा था। वही तो सब कुछ हैं। बाप का साया सर से उठने के बाद मॉ ही उसकी जान थी पिता को तो उसने देखा तक नहीं था। मॉ ने ही उसे सब कुछ दिया पिता का प्यार मॉ का आशीर्वाद सभी कुछ मॉ की देन थी। पिता की कमी कभी महसूस भी नहीं होने दी।

अभी वह इसी उधेड़ बुन में ही पड़ा था कि घर के नौकर रामू चाचा आकर उससे कहते हैं–"बड़े साहब, मालकिन का फोन आया है।" राजेश तुरंत दौड़कर फोन उठाता है। उधर से मॉ बोलती है– "बेटा, मुझे अभी आने में काफी देर हो जाएगी। तू ऊषा को अंगूठी पहनाकर पार्टी शुरु कर, तब तक मैं आती हूॅ।"

राजेश बहुत प्रयास करता है, जिद्‌द करता है–"मॉ, बिना आपके आये कुछ नहीं होगा।" पर मॉ के आग्रह को वह कैसे ठुकरा सकता है? बेमन से वह फोन रखता है और स्टेज पर आकर 'ऊषा' के हाथों में अंगूठी पहनाकर सभी के सामने उसे अपनी पत्नी के रुप में परिभाषित करता है। पार्टी शुरु हो चुकी होती है कि एक कार आकर गेट पर रुकती है जिसमें से एक बूढ़ी सी औरत सफेद साड़ी पहने उतरती है और सीधे स्टेज पर आती है। राजेश उस औरत को मॉ से कहता है–"मॉ, ये ऊषा के पिताजी, मि0 मनोहर जी है। इनसे मिलिए ....। " मॉ जैसे ही ऊषा के पिता की ओर पलटकर देखती है पानी में आग लग जाती है। उनका सारा बदन धू–धू कर जल उठता है, लपेटें निकलने लगती हैं और सारा आलम जलकर खाक हो जाता है। वह गुस्से में लाल–पीली हो जाती हैं और तुरंत ही राजेश से कहती हैं– "यह शादी कदापि नहीं हो सकती है। यह तूने क्या किया?" इतना कहकर वो ऊषा की उंगली से अंगूठी तुरंत उतार लेती हैं और मि0 मनोहर को धक्के दिलवाकर बाहर निकलवा देती है। सभी लोग हैरत में पड़ हैं। मॉ उठकर एक कमरें में चली जाती हैं। धीरे–धीरे सभी लोग बिना कुछ खाये–पिये जाने लगते हैं और राजेश पसीने से पूरी तरह लथपथ एक तरफ हारे हुए जुआरी की तरह सर पकड़ कर बैठ जाता है। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। सारा बंगला ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे किसी मजार पे सजावट की गयी है। तभी वह उठता है, उसकी नजर अंगूठी पर पड़ती है। वह उस अंगूठी को उठाकर सोचने लगता है कि 'जब पहली बर वह ऊषा को अपने घर लेकर डरा–डरा सा आया था कि पता नहीं मॉ कैसे पेश आए? परन्तु मॉ ने अपनी पहली ही नजर में मेरी पंसद पर अपनी मुहर लगा दी थीं, शायद मुझसे भी अधिक पंसद बन गयी थी। वह ऊषा को जल्दी से जल्दी अपने घर की बहू बनाना चाहती थी। दूसरे ही दिन उन्होंने बाजार से अपनी पसन्द की अंगूठी लाकर मुझे दी थी और कहा था–"राजेश, देख यह ऊषा पर कैसी लगेगी?" वो चाहती थीं कि हम दोनों जल्द ही शादी के बन्धन में बॅध जाएं। मॉ खुद कहती थीं– "कहीं, हम दोनों के प्यार पर किसी की नजर न लग जाए"। अतः उन्होंने ही जिद्‌द करके शादी की इंगेजमेंट की तारिख तय की, पर आज मॉ को क्या हो गया? 22 वर्ष आज उसने पहली बार मॉ के चेहरे पर गुस्सा देखा था।

मैं ऊषा को दिलोजान से चाहता हूॅ, उसके बिना नहीं रह सकता। ऊषा, मुझे अपनी जान से भी ज्यादा चाहती है। यह मॉ को भी मालुम है कि वह मेरे बिना नही रह सकती है। ऊषा ने गिड़गिड़ा कर मॉ से मेरी भीख मॉगी, ऊषा अपने पिता की इकलौती सन्तान है, उसके कुछ भी कर सकते थे, परन्तु वह उसकी खुशी चाहते थे। वह भी गिड़गिड़ाते रहे, अपना सर मेरी मॉ के कदमों पर रख दिया पर देवी समान मेरी मॉ को पता नहीं क्या हो गया कि उन्होनें धक्के दिलवाकर उन्हें बाहर करवा दिया। ऊषा के पिता को देखकर उन पर जैसे काली देवी सवार हो गयी थीं। वही मॉ जो ऊषा को अपने ऑचल में बिठा कर बहु बनाना चाहती थीं, पल भर देर करना नहीं चाहती थीं और आज एक झटके में ऊषा के तप, मेरे प्यार को जलाकर राख कर दिया। आखिर क्यॉ? मैं उठकर, अपने को संभाल कर मॉ के पास जाना ही उचित समझा। मॉ ही तो मेरे लिए सबकुछ हैं। वह खुद जलती रहीं परन्तु मुझे हमेशा अच्छा ही पढ़ाया, लिखाया, अच्छी शोहरत दी, मुझे आज इस मुकाम पर पहॅुचाया कि मैं मॉ के तप–त्याग को उनके सुख में बदल सकूॅ। 21 वर्ष बाद इस घर में दीप जला था पर वक्त के थपेड़ों ने उन्हें बुझा दिया।

अपने दर्द को छुपाकर वह मॉ के कमरे में गया। वह रो रही है। मुझे देखते ही वह दौड़कर मुझे उसी प्रकार लिपटा लेती है और पुनः उसी प्रकार रोने लगती है जैसे कोई मॉ अपने छोटे से बच्चे को गुस्से में मार तो देती है पर बाद में वह पछता कर उसे पुचकारती है, प्यार करती है। मॉ भी रो–रो कर कहने लगी–"बेटा, पहले मेरी कहानी सुनो फिर स्वयं फैसला करना। मैं तुम्हारी खुशी को गले लगा लूॅगी।"

मॉ बताती है–"करीब, 25 वर्ष पहले मै बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा थी। एक दिन मैं कॉलेज से घर आ रही थी कि बस–स्टॉफ पर खड़े–खड़े बहुत शाम हो गयी थी पर बस नहीं आयी। घर काफी दूर था तो मैं लाचार होकर पैदल ही चली जा रही थी तभी पीछे से कोई नौजवान स्कूटर से पास आकर कहता है–'' चलिए, मैं आपको घर छोड़ दूॅ। शाम काफी हो चुकी हैं और आपका अकेले जाना ठीक नहीं।''

मैनें कई बार उसके प्रस्ताव को अस्वीकार्य किया परन्तु रात्रि काफी हो जाने के भयवश मुझे उसके प्रस्ताव को स्वीकृति देनी पड़ी। वह एक नेक लड़का लगता था। रास्ते भर मैं एक शब्द भी नहीं बोली। किसी अपरिचित लड़के के साथ पहली बार वो भी रात्रि में, अकेले घर जा रही थी। डर से मेरा बुरा हॉल था। वह घर तक छोड़कर जाने लगा, लेकिन डरवश उसको धन्यबाद के सिवा कुछ न कह सकी। वह छोड़कर चला गया।

मेरे बापू जी बहुत ही सीधे–साधे और बहुत ही इज्जतदार लोगों में से थे। उनका परिवार और समाज में लोग बहुत ही सम्मान करते थे। अतः उस नवयुवक को अन्दर आने के लिए नहीं कह पायी कि पता नहीं वो क्या कहेंगे?

अब वह रोज ही कालेज से लौटते वक्त मुझे मिल जाता था। उसके आग्रह, उसकी नेकदिली, सीध ापन पर कभी भी इन्कार न कर सकती। पूरी राह हम दोनों चुप रहते। वह मुझे घर छोड़कर चला जाता।

धीरे–धीरे महीने, वर्ष गये और हम दोनों एक–दूसरे को मन ही मन चाहने लगेथे